जयवन्त मसीही जीवन

बाईबल पर आधारित प्रार्थनाएं जो हमें यीशु के करीब ले आती है

सर्वाधिकार

पवित्रशास्त्र में से उद्धत सारे पद बाईबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित पवित्र बाईबल (हिन्दी) – ओ.वी. से लिए गए है। अनुमति सहित। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इसके अलावा इस निर्देशपुस्तिका की सारी सामग्री कॉपीराइट मुक्त है।

संग्रहकर्ता, मुद्रक और वितरणक इस निर्देशपुस्तिका को चिकित्सा व मनोवैज्ञानिक सेवाए प्रदान नहीं करते है, और न ही इस निर्देशपुस्तिका को चिकित्सा सबन्धी या मनोवैज्ञानिक समस्याओं को ठीक करने के लिए एक मार्गदर्शिका के रुप में अपनाया जा सकता है।

जयवन्त मसीही जीवन – हिन्दी 2024

‘जयवन्त मसीही जीवन’ निर्देशपुस्तिका व इससे सम्बन्धित अन्य सामग्री अग्रेंजी व दूसरी भाषाओं में निम्न वेबसाइट पर उपलब्ध है। www.victoriouschristianlife.info

विषय सूची

PAGE

आभार i

पृष्ठभूमि ii

परिचय 1

मन फिराव..9

क्षमाशीलता..20

गहन मन फिराव व क्षमाशीलता 28

अधर्मी बंधन से छुटकारा 29
निंदा के फैसले से छुटकारा.. 34
नकारात्मक शब्दों से स्वतन्त्रता 40
वित्तीय समस्याओं से छुटकारा 46
दैविय विरासत की पुन: प्राप्ति 51

बपतिस्मा 60

परमेश्वर को सुनना व आज्ञा पालन करना 65

प्रार्थना सेवकाई के लिए व्यवहारिक विचार 72

परिशिष्ट..79

नये नियम में पश्चातापों की सूची.. 80
मन फिराव के सामान्य मुद्दें.. 82
अपने पारिवारिक इतिहास का चार्ट बनाना 87
पीढी दर पीढी अशीषों के लिए प्रार्थना... 91
मसीह में मैं कौन हूँ.. 94
बाईबल का अध्ययन कैसे करें 96
बीमारों को चंगा करना 98

आभार

संकलनकर्ता, परमेश्वर का आभार व्यक्त करते है कि परमेश्वर ने उनके मनों में इस निर्देशपुस्तिका को लाने का विचार दिया और इसे बहुत सारे प्रारूपो के माध्यम से सुरक्षित रखने की क्षमता और प्रेरणा देने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देते है।

वह एलएल सेवकाई के भी आभारी है जिन्होंने इस निर्देशपुस्तिका के लिए प्रेरित किया। वे जॉन और पौला जो सैनफोर्ड एलिज्जा हाउस के संस्थापक है, उनके भी धन्यवादी है जिन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाने में प्रेरणा व दिशा प्रदान की।

पृष्ठभूमि

जब मेरी आयु 11 वर्ष थी, उस समय मसीह में मेरा नया जन्म हुआ। शुरुआत के कुछ वर्षों तक मैं यीशु के लिए बहुत ही उत्साहित थी, मुझे पवित्रात्मा का बपतिस्मा व चंगाई का वरदान भी मिला। दुर्भाग्य वश, स्कूल छोड़ने के समय तक यीशु के प्रति मेरा जुनून क्षीण हो चुका था। मैंने अपने जीवन के अगले तीन दशकों को कई अनसुलझी समस्यायों के कारण अविश्वास, गुनगुनेपन में रहकर और निराशा के साथ व्यतीत किया। मेरा जीवन इस्राएलियों के समान मलभूमि में ही गोल-गोल चक्कर काट रहा था परंतु मैं प्रतिज्ञा के उस प्रदेश में प्रवेश ही नहीं कर पा रही थी। मैंने कई बार इसके बारे में सोचा और कई बार इसके बारे में सोचने की इच्छा भी नहीं हुई। पर जब मेरे पिता का निधन हुआ, तब इस घटना ने मुझे सोचने पर मजबूर किया कि क्या मृत्यु के बाद भी जीवन है? और किस आधार पर एक व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है? यह बात मुझे फिर से यीशु के करीब ले आयी परन्तु मैं उस समय पाप के बन्धन में जकड़ी हुई थी और इससे बाहर आने में अपने आप में असहाय महसूस कर रही थी।

कुछ वर्षों के बाद, मेरा विवाह एक ऐसे व्यक्ति से हो गया जो केवल नाममात्र का ही विश्वासी था। शुरूआत के दिनों में हमारी शादी एक मुसीबत बनकर रह गई थी, परंतु परमेश्वर ने इस घटना को भी मुझे यीशु के करीब लाने के लिए इस्तेमाल किया। मैंने बाईबल अध्ययन और प्रार्थना को और भी अधिक गंभीरता से लेना शुरू कर दिया। संकट की उस घड़ी में मैं अपने विवाह के लिए प्रार्थना करने में जुट गई। उसी समय मुझे लगा कि परमेश्वर मुझसे उन लोगों (मेरे माता पिता, शिक्षक और पति) को जिन्होंने अतीत में मुझे दुःख पहुँचाया था उन्हें क्षमा करूँ और स्वयं के विशेष पापों के लिए भी मन फिराव करूँ।

समय के साथ, मुझे मन फिराव और क्षमा के बारे में और अधिक सीखने को मिला जिसे मैंने अपने जीवन में लागू किया। हर एक बात जो मैंने अपने जीवन में लागू की वह मेरे जीवन में एक बड़े छुटकारे को लेकर आई। मुझे अलग सा अहसास हुआ - हलकापन - और मैं यीशु और पवित्र आत्मा के लिए फिर से उत्साहित हो गई। बहुत वर्षों बाद, मेरे पानि का बपतिस्मा के तुरंत बाद, मेरे पति को भी नए-जन्म का अनुभव हुआ। इसके पश्चात उन्होंने भी शीघ्र ही पवित्र आत्मा और पानि का बपतिस्मा लिया। अब वह भी प्रार्थना की सेवकाई, आंतरिक चंगाई और छुटकारे में रुचि लेने लगे। हमने सेवकाई में, प्रार्थना की सेवकाई द्वारा शिष्य बनना व बहुत सी पुस्तकों का अध्ययन करने को अपना ध्येय बनाया। अभी ज्यादा समय नहीं बीता था कि हमें पूर्णकालिक सेवकाई के लिए बुला लिया गया। हम इस सब बदलती परिस्थितियों से बहुत ही उत्साहित और गर्व से भर गये। हमने अपने मित्रों को छोड़ दिया, घर बदला और सोचा कि हम बहुत ही अच्छा कर रहे है। परंतु शीघ्र ही हम निराश हो गए क्योंकि बातें जिनकी हमने अपेक्षा की थी वैसी नहीं घटी। हमारा घमंड करना, क्षमा न करना और

दूसरे पापपूर्ण व्यवहार और भी स्पष्ट हो गए। इन पापपूर्ण मनोवृत्तियों से छुटकारा पाने के लिए हमें "शुद्ध करने वाली अग्नि" से गुजरना पड़ा। इसके उपरान्त भी, कुछ महीने बाद हमें हमारे पद से बाहर निकाल दिया गया। उसके बाद हमारे पास कोई सेवकाई करने के लिए कोई काम भी नहीं था। परंतु हमारे पास तीव्र इच्छा थी कि हम प्रभु यीशु को एक साथ खोजे और जानें कि वह हमसे क्या करवाना चाहता है। हम नहीं जानते थे कि ऐसी कौन सी चीज़ हमें परमेश्वर से सुनने के लिए और सेवकाई में आगे बढ़ने के लिए रोक रही थी इसलिए हमने अपने दिनों को बाईबल अध्ययन और प्रार्थना में बिताना शुरु किया। हमारे पास प्रार्थनाओं का एक संग्रह[1] था और हमने हमारे जीवन में जितनी बातों को स्मरण कर सकते थे - जिन्होंने हमें पीड़ा पहुँचाई थी और अपने पापों से मन फिराव के लिए प्रार्थना करने के लिए इस संग्रह का इस्तेमाल किया। हम में से एक प्रार्थना करता था और दूसरा उसे सुनता था। सुनने वाला व्यक्ति भी (पवित्र आत्मा की सहायता से) अपने स्वयं के जीवन की समस्याओं को स्मरण करता था जिनके लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता थी। और यह प्रक्रिया सप्ताह दर सप्ताह तक चलती रही। आखिर में हमने इसे समाप्त किया। इससे ज्यादा कुछ शेष नहीं बचा था जिसे हम प्रार्थना में याद कर सके। हमने परमेश्वर की दुहाई दी कि हमें उन चीजों से छुटकारा दे जिसने हमें बांध के रखा था। हम दोनों ने उसे स्पष्ट रूप से बोलते हुए सुना, *"अब मैं तुम्हें इस्तेमाल कर सकता हूँ।"* और कुछ अन्तराल बाद एक भूले-बिसरे गीत के शब्द *"आओ और जश्न मनाओ!"* द्वारा, परमेश्वर ने हमारी बुलाहट के विषय में बात की और अन्ततः इसके लिए हमें तैयार किया। यह इसका आसान भाग था । परमेश्वर हमें अभी भी उस पर विश्वास करना, उसे सुनना और आज्ञापालन सिखाना चाहता है।

इस निर्देशपुस्तिका को हमारी प्रार्थना सेवकाई के बारे में लिखा गया जिसका हमने उपयोग किया था। इसमें हमने पाठकों की समझ के लिए बाईबल आधारित प्रार्थनाओं को समझाया है ताकि वह अपने हृदय में पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रार्थना कर सके।

हम विश्वास करते है कि यह निर्देशपुस्तिका एक उपकरण है जिससे परमेश्वर विश्वासी लोगों को *"उन बातों को पीछे छोड़ने के लिए जो हमें जकड़े रहती है"* ***(इब्रानियों 12:2)*** और कलीसिया के कार्य को स्वतंत्रतापूर्वक करने में मदद करेगा। यह हमारी स्वतंत्रता के लिए परमेश्वर का उपकरण थी। परमेश्वर ने इसका इस्तेमाल उन लोगों को स्वतंत्र करने के लिए किया जिन्होंने इसको टाइप किया, अनुवाद किया और इसकी समीक्षा की। हम विश्वास करते है कि यदि आप एक जयवन्त विश्वासी का जीवन जीना चाहते है तो परमेश्वर आपकी स्वतंत्रता के लिए भी इसका इस्तेमाल करेंगे।

---

[1] पेन्ट जोंस: मिनिस्ट्री बेसिक मिनिस्ट्री प्रेयरर्स (1996, अप्रकाशित), व्यक्तिगत नोट्स ग्लाइंडले मैनर एलेल सेवकाई के निदेशक, यूके। अनुमति से।

परिचय

जयवन्त मसीही जीवन

विश्वासीयों के रूप में हमें परमेश्वर स्वर्ग के नीचे स्थित प्रत्येक आत्मिक वरदान को उपलब्ध कराता है ***(इफिसियों 1:3)***। यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम *"बहुतायत का जीवन"* पाए ***(यूहन्ना 10:10)***। यीशु ने कहा कि हम उससे भी बड़े-बड़े काम करेंगे ***(यूहन्ना 14:12-14)*** विश्वासी होने के बावजूद भी, जीवन हमेशा सरल नही होगा और चीजें वैसी नही होगी जैसे हम चाहते हैं। परंतु हमारे पास कठिन परिस्थितियों में भी एक आंतरिक शांति व अनुग्रह युक्त प्रतिक्रिया होनी चाहिए। यही जयवन्त विश्वासी का जीवन हैं। यदि हम अपने जीवन के हर एक क्षेत्र में जयवन्त जीवन नही जी रहे है तो शैतान परमेश्वर प्रदत्त चीजों में हत्या, चोरी और घात कर रहा है। ***(यूहन्ना 10:10)***। परमेश्वर नहीं चाहता कि यह हमारे साथ हो।

> *आत्मिक चंगाई, व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और वैश्विक बेदारी की बड़ी कुंजी है।*
> *(रॉबर्ट फेटवेट, एलिज्जा हाउस, 2014)*

'जयवन्त मसीही जीवन' में प्रार्थनाओं व शिक्षा का उद्देश्य हमें यीशु के करीब लाने में मदद करना है, इसमें पवित्र आत्मा के द्वारा पूर्ण रूप से सशक्त बनना और उन अद्भुत बातों को करना शामिल है जिसे यीशु ने किया ***(लूका 24:46-49; प्रेरितों 3:19-20, 4:29-30; इफिसियों 4:11-16; फिलि 3:10-11)***। इस प्रकार की सेवा सुसमाचारवादी है जो आंतरिक चंगाई, पवित्रीकरण और जीवन में बदलाव को लाती है। यहाँ तक कि इसका परिणाम शारीरिक चंगाई और दुष्टात्माओं के उत्पीड़न से छुटकारे के रुप में भी दिखता है (इस निर्देशपुस्तिका में शारीरिक चंगाई व छुटकारे से संबन्धित अलग से भाग दिया हुआ है)।

यीशु फरीसियों से बात करते हुए मत्ती 12:33 में कहते है, *"यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल ही से पहचाना जाता है।"* हम जयवन्त होकर नही जी रहे हैं इसको पहचानने का एक मात्र तरीका हमारे जीवन में फलों को देखना हैं। यदि यह गलातियों 5:22-23 की तुलना में गलातियों 5:19-21 है तो हम 'जयवन्त होकर नही जी' रहे हैं परंतु पाप के दासत्व में ही जी रहे हैं ***(यूहन्ना 8:34)***। उदाहरण के लिए कृषि संबंधी संकल्पना का उपयोग करते है, यदि पेड़ का फल अच्छा नही है तो उनकी जड़ो में समस्या हो सकती हैं जिसमें कीड़ों व पोषक तत्व की कमी के मुख्य कारण होते है ***(लूका 13:6-9)***। यदि जड़ें अच्छी है तो फल भी अच्छे ही होंगे। प्रेरित पौलुस हमें यीशु में बढ़ने और हमारे जीवन को उस पर अर्थात् यीशु में स्थापित करने के लिए

उत्साहित करता है ***(कुलुस्सियों 2:7)***। इस प्रकार हम हमारे जीवनों में सदा बने रहने वाले फल उत्पन्न कर सकते है ***(यूहन्ना 15:16)***।

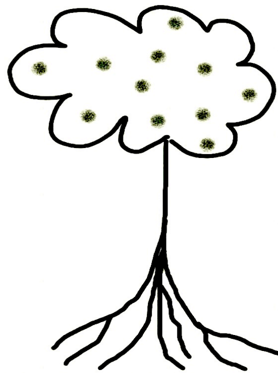

जब हमारे जीवन में फल अच्छे नही है तो यह समस्या हमारी आत्मिक जड़ों में है। उदाहरण के तौर पर, हमारे जीवनों में अभी भी ऐसे पाप होंगे जिसका हम ने पूरी तरह से मन फिराव न किया होगा या हम ने उन लोगों को क्षमा न किया हो (शायद बहुत सालों पहले) जिन्होंने हमें कष्ट पहुँचाया हो। हम हमेशा कहते है कि इस तरह की घटना जिसने हमें कष्ट व नुकसान पहुँचाया है उसे तो बीते हुए बहुत समय हो गया है और हम इसके बारे में भूल भी गये थे। यह क्षमा नही है, परंतु हमारी भूल है। क्षमा हमारे चुनने के अधिकार में है, उदाहरणार्थ हम क्षमा करने का चुनाव करते है... क्योंकि '...प्रभु ने भी आपको क्षमा किया है' ***(कुलुस्सियों 3:13)***।

हमारा जीवन हमारे शुरुआती जीवन के अनुभवों[2] के द्वारा ढाला जाता है, यहाँ तक कि हमारे माता के गर्भ के अनुभव भी इसमें शामिल है ***(भजन संहिता 139:13-16; यशायाह 49:1)***। जैसे हम बढ़े व विकसित हुए तभी से इन अनुभवों से सीखना और प्रतिक्रिया देना शुरु किया। हमें बचपन में ही अपने स्वस्थ मानव विकास के लिए यह सीखना चाहिए कि:

- कैसे लोगों व परमेश्वर पर भरोसा रखें ***(भजन 22:9)***;
- कैसे परमेश्वर के अनुसार अपनी भावनाओं को व्यवहार में लाए और चुनाव करें ***(इफिसियों 4:2-3, 6:4)***;
- कैसे भरोसा रखें कि हम मसीह में कौन है और परमेश्वर कौन है ***(व्यवस्थाविवरण 6:4-9, फिलिप्पियों 4:13)***; और
- कैसे स्वयं के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन को पहचाने ***(यिर्मयाह 29:11; यूहन्ना 10:27)***।

यदि हमें यह पोषक तत्व जीवन के शुरुआती दिनों में न मिले हो तो बाद के जीवन में यह समस्याएँ आती है।

---

[2] जॉन और पाउला सैंडफोर्ड; 'रिस्टोरिंग द क्रिसचियन फैमली, 2009, करिश्मा हाउस।

परमेश्वर हमारे जीवन में जो चाहता है उसके लिए हमारे प्रारंभिक जीवन में मिले कष्टों के प्रति हमारी परमेश्वर विरुद्ध प्रतिक्रिया रुकावट बनती है। उदाहरण के तौर पर, यदि हम ने गुस्से को अपने बाल्यकाल में परमेश्वर की रीति अनुसार नियन्त्रित करना नहीं सीखा ***(इफिसियों 4:26-27)***, तो बचपना होने पर भी बचपना, विधर्मी तरीके अपनाएंगे व गुस्सा करेंगे। उदाहरणार्थ, आक्रामक या अघाती गुस्सा, जो रिश्ते को नुकसान पहुँचता है। हमारे वयस्क जीवन की बहुत सारी समस्याएँ हमारे जीवन में जो बुरी बातें बचपन में हुई है उनके प्रति हमारी पापमयी प्रतिक्रिया का ही कारण है।

स्वतंत्रता वह अधिकार नहीं है कि हम अपनी इच्छानुसार कुछ भी करें परन्तु परमेश्वर जो चाहता है उसे करने की शक्ति है।

परमेश्वर पुनःस्थापना करने वाला है। केवल वही हमारे क्षतिग्रस्त जीवन को पुनः स्थापित कर सकता है! यह शिक्षा हमारे जीवन के बुरे फल को जानने व उसके मुख्य कारण को पहचानने के बारे में है। तब हमें मन फिराव व क्षमा के वरदान द्वारा जिसे वह देता है हमारी मुख्य समस्यायों पर यीशु के लहू का इस्तेमाल करके चंगाई देकर हमें अधिक स्वतंत्र किया जाता है।

कई बार विश्वासी लोग पाप से छुटकारा पाने की बहुत सी कोशिशों के बावजूद भी एक ही प्रकार के पाप में बार-बार गिरते है और उसी में फँसे रहते हैं। इन परिस्थितियों में वे दूसरे विश्वासी भाइयों एवं बहनों की सहायता से लाभान्वित हो सकते है ***(गलातियों 6:1)***।

‘सामान्य’ नया जन्म पाये हुए विश्वासी लोग दूसरे ‘सामान्य विश्वासीयों’ को यीशु के साथ चलने में मदद (शिष्यत्व) के द्वारा कलीसिया की उन्नति करने में एक मुख्य भूमिका निभाते है ***(इफिसियों 4:12)***। ‘साधारण लोगों’ की भूमिका की तुलना यहोशू के सामने खड़े लोगों से की जा सकती है ***(जकर्याह 3:4)***। उन लोगों को स्वर्गदूत से एक निर्देश मिला था कि वे अपने मैले कपड़ों को उतार दे जब तक प्रभु उन्हें पवित्र न बना ले। वे भी उन साधारण लोगों के समान है जो लाज़र को देख रहे थे जब वह मृतकों में से जिलाया जा रहा था ***(यूहन्ना 11:43-44)***। उन्होंने लाज़र के कब्र

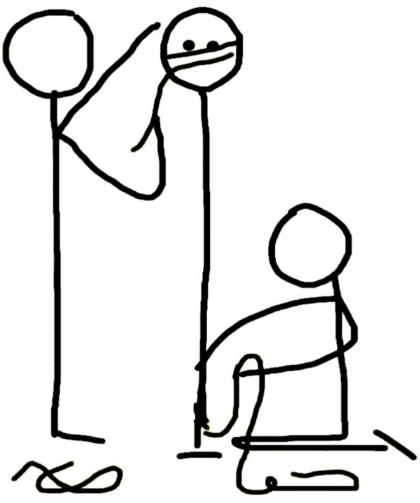

के कपड़े हटाने के लिए यीशु के निर्देश का पालन किया ताकि वह परमेश्वर प्रदत्त बहुतायत के नए जीवन का आनंद उठा सके। हम भी स्वाभाविक व बार-बार होने वाले पाप से जुझ रहे होते है। कई बार वह हमारे पूर्वजों से ही उत्पन्न हुए होते है। उसके लिए हमें अपने पूर्वजों के पापों के लिए *विशेषकर* अपने परिवार के लिए परमेश्वर के सामने अंगीकार व क्षमायाचना करनी चाहिए कि वह हमारे परिवार को इन पापों से स्वतंत्र करें ***(नहेम्याह 9:2)***। इन सब और परमेश्वर विरुद्ध बन्धनों, दोषपूर्ण न्याय, नकारात्मक बातों व वित्तीय मुद्दों से निपटने के द्वारा ही हम परमेश्वर प्रदत्त आशीषों का और अधिक आनंद उठा सकते है जिनको यीशु ने क्रूस पर हमारे लिए विजय किया। इनको अगले अध्याय में विस्तार से जानेंगे।

संग्रहकर्ताओं ने इन सभी प्रार्थनाओं का स्वयं उपयोग किया है और परमेश्वर ने अद्भुत रीति से उत्तर भी दिया है। तब से, वे इस सामग्री को विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में दूसरे बहुत से लोगों के बीच उनके साथ इस्तेमाल किया है और शिक्षित व अशिक्षित दोनों को ही समान रूप से सिखाया हैं। वे आश्चर्यचकित थे कि कैसे परमेश्वर साधारण लोगों का इस्तेमाल दूसरे लोगों की जो सच में यीशु के खोजी हैं उनकी सहायता करता हैं। उनकी आशा और प्रार्थना है कि जैसे आप इस निर्देशपुस्तिका को पढ़ते है आप यीशु की नजदीकी में आयेंगे, और तैयार होकर दूसरों की भी इसमें सहायता करेंगे। यही उनकी इच्छा है कि हर एक व्यक्ति, जहाँ कही भी हो जयवन्त मसीही जीवन जीये!

पाप व पवित्रीकरण

परमेश्वर पवित्र है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर पापरहित है। परमेश्वर पवित्र है और हर एक और सब कुछ से अलग किया हुआ है। वह स्वर्गीय और महिमामय है। उसकी उपस्थिति में पाप नहीं टिक सकता है। हमें उसकी उपस्थिति में आने के लिए पवित्र होने की आवश्यकता है। यह हमारे लिए असंभव है परन्तु परमेश्वर के लिए नही। परमेश्वर हमारे लिए यह करता है जब हम मसीह में *'नया जन्म'* लेते है और *'नई सृष्टि'* बनते है। फिर भी सभी मसीही लगातार पाप करते रहते है, तब भी जब *'बचाये गये'* और कुछ तो अब भी उनके पुराने पापों से ग्रसित हैं।

बाईबल की सभी 'पत्रियाँ' विश्वासीयों को और विश्वासीयों के लिए लिखी गई थी। प्रायः, विश्वासी अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए विनती करते आ रहे थे क्योंकि यह विश्वासीयों के बीच में दरार उत्पन्न करता है और अविश्वासीयों को यीशु से दूर रखता है। आज भी ऐसी ही स्थिति है। इस संसार में हमारे पाप से छुटकारा पाने की निरन्तर प्रक्रिया जिससे परमेश्वर के समान एक स्वभाव उत्पन्न होता है (पवित्रीकरण) हमारे जीवन भर जारी रहती है। यही परमेश्वर के समान स्वभाव या फल हैं, जो हम हमारे जीवन में विकसित करते है जो अनंतकाल के लिए बना रहता है ***(मत्ती 7:17-23; 2 कुरिन्थियों 5:10; गलातियों 5:19-26; प्रकाशितवाक्य 22:14-15)***।

*"धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे। पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला और गढ़नेवाला बाहर रहेगा। मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे।" **(प्रकाशितवाक्य 22:14-16)***

बाईबल पाप में मनुष्य के पूर्ण रुप से पतित होने व परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में पूर्ण उपचार का अभिलेख है। (चार्ल्स एच स्पर्जन)

बाईबल बताती है कि मनुष्य जाति का प्रारम्भ आदम और हव्वा के साथ हुआ। मनुष्य परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने के लिए बनाये गये थे। तब आदम और हव्वा ने पाप किया और संपूर्ण मानव जाति पापी बन गई और परमेश्वर से अलग हो गई ***(उत्पत्ति 3)***। एक आज्ञा उल्लंघन का कार्य (आदम और हव्वा का पाप) से हमारी पवित्रता नष्ट हो गई। सर्वप्रथम, उस समय बाईबल में परमेश्वर ने भविष्यवाणी करते हुए बोला, जिसके के बारे में संपूर्ण बाईबल आधारित है, कि स्त्री के वंश के द्वारा शैतान का सिर कुचला जायेगा ***(उत्पत्ति 3:15)*** यह यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान: पाप और मृत्यु के ऊपर उसका संपूर्ण विजय और परमेश्वर व मनुष्य के बीच में मेल-मिलाप कराने का तरीके के विषय में संकेत करती है।

परमेश्वर नही चाहता था कि हम उससे हमेशा के लिए अलग रहे, अतः उसने एक मार्ग बनाया जिसमें हम उससे मेल-मिलाप कर सके: उसने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु को भेजा कि हमारे पाप और आज्ञा उल्लंघन के लिए हमारे स्थान पर बलिदान द्वारा कीमत चुकाए। इस पृथ्वी पर एक साधारण मनुष्य बनने के लिए यीशु ने परमेश्वर पिता के पुत्र के रुप में स्वर्ग की हर एक आनंददायक चीज़ का त्याग किया। यीशु सब बातों में हमारे समान थे, हमारे समान परखे गये, तौभी उन्होंने पाप नहीं किया ***(इब्रानियों 4:15, 7:26)***। यीशु ने केवल वही बोला और किया जो उसका पिता अर्थात् परमेश्वर उससे चाहते थे। यही यीशु के जीवन को हमारे जीवन के लिए सिद्ध नमूना बनाता है।

बाईबल आपको पाप से दूर रखेगी या पाप आपको बाईबल से दूर रखेगा। (डी एल मूड़ी)

यीशु हम सब के लिए क्रूस पर एक अपराधी की तरह मरा। यह सिद्ध बलिदान हमारे पापों की कीमत के रुप में था जो एक ही बार सब समयों के लिए था। यीशु ने कभी भी पाप नही किया, परंतु वह पापीयों के लिए मरा कि वह हमें सुरक्षित परमेश्वर के पास घर वापस पहुँचायें ***(1 पतरस 3:18)***। यीशु के बलिदान को पहचानते हुए और हमारे पापों को उठा ले जाने के लिए उसमें विश्वास या भरोसा रखते हुए, हम परमेश्वर के साथ नजदीकी रिश्ता रख सकते है और सभी लाभों का आनंद उठा सकते है

जिसमें परमेश्वर के साथ अनंत जीवन भी शामिल है। हमारे निर्णय के परिणाम स्वरूप हम 'परिवर्तित हृदय' और जीवन के सही मार्ग को प्राप्त करेंगे। हमें अपने जीने के तरीके के बारे में अवश्य सोचना चाहिए और परमेश्वर की ओर मुड़कर कहना चाहिए, 'हे परमेश्वर, मैं यहां हूं, मुझे बताएं कि क्या करना है और मैं यह करूंगा।' हमारा निर्णय हमारे व्यवहार को बदलने की माँग करता है। इसी को बाईबल में 'नया जन्म' कहते है ***(यूहन्ना 3:3)***।

हम अपने आप को पवित्र नही बना सकते हैं; यह परमेश्वर के अनुग्रह का एक कार्य है। परंतु जब हम नया जन्म लेते है; तब हम नई सृष्टि बन जाते है; पुरानी आदतें चली गई और हम नई शुरूआत करते है। जब हम यीशु को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते है तो तुरन्त ही हमारी कुछ आदतें व स्वभाव बदल जाता है। हम पाप के लिए मरे हुए है और मसीह में जीवित है! हालाँकि, अनुभव हमें बताते है कि उनमें से कुछ पुरानी आदतें नही जाती है। जैसे हम मसीह में परिपक्व होते है, तो हमें हर प्रकार से और अधिक यीशु की तरह बनना चाहिए। प्रेरित पौलुस इस प्रक्रिया को एक युद्ध की तरह बताता है ***(रोमियों 7:14-25)***। इस प्रकार के युद्धों को जीतने का उत्तर हमेशा हमारे प्रभु यीशु मसीह में ही हैं। हमें लगातार उससे सहायता माँगने की आवश्यकता है। हमारे सर्वोत्तम प्रयास और अच्छे बनने की दृढ़ इच्छा हमें जयवन्त नहीं कर सकती जो यीशु ने हमारे लिए पहले से ही विजित की है। पवित्रशास्त्र लगातार हमें यीशु के समान बनाने के लिए पवित्र आत्मा की सहायता प्राप्त करने के लिए बताता है।

"यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।" ***(रोमियों 8:13-14)***

"अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।" ***(कुलुस्सियों 3:1)***

" और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।" ***(कुलुस्सियों 3:10)***

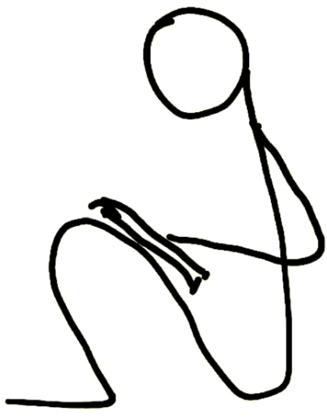

आत्मिक परिपक्वता हमारे अहं को मारने की माँग करती है। हमें अपने अहंकार, घमंड, आत्मनिर्भरता, आत्मकेंद्रता और अवज्ञा को परमेश्वर को सौंप देना होगा ताकि हमें बदल दें व क्षमा कर दें। हमारे जीवन में

'मसीह' को 'स्वयं' के स्थान पर लाना होगा। फिर भी हमारे में दाग-धब्बे और दोष होंगे परंतु जयवन्त मसीही के पास यीशु के समान होने और उसे नजदीक से जानने की गहरी इच्छा होती है।

कुछ तरीकों से, हम स्पंज के समान है। हम अपने आसपास के वातावरण को सोख लेते है। हम उनकी तरह ही बन जाते है जिनके साथ समय बिताते है। जितना अधिक समय हम परमेश्वर की उपस्थिति में (प्रार्थना व बाईबल अध्ययन में) बिताते है उतना ही हम यीशु और पवित्र आत्मा को हमारा हृदय परिवर्तन के लिए आमन्त्रित करते है, तब हम और अधिक यीशु के समान बनते है। जब हम मुसीबतों और जीवन के संकटों के द्वारा 'निचोड़े' जाते है, तो जो गुण निकलते है वह पवित्र आत्मा के फल अर्थात् प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम होते है ***(गलातियों 5:22-23)***। इसके विपरीत, यदि हम सांसारिक कामकाज और सुख विलास की खोज में अधिक समय बिताते है, तो वैसे ही हमारा स्वभाव हो जाता है और हमारे अन्दर पवित्र आत्मा शुष्क हो जाती है।

पवित्र आत्मा हमारी मदद के लिए हर समय उपलब्ध है। परंतु उसने हमें उसे चुनने के लिए स्वतंत्र इच्छा दी है और उसकी सहायता हमें तभी मिलेगी जब हम उससे माँगेंगे तथा उसकी अगुवाई में चलने के इच्छुक होंगे। ***(गलातियों 5:16-17)***।

यीशु नाम का मूल शब्द इब्रानी भाषा में "येशुआ" है, जिसका मतलब "यहोवा उद्धार है" जब हम 'यीशु के नाम में' प्रार्थना करते है हम पहचानते है कि वही एकमात्र परमेश्वर है जो हमें बचाता, चंगा करता और छुटकारा देता है। यह उसकी सामर्थ, स्वभाव और विश्वास ही है जिसे हम 'यीशु के नाम' में उपयोग करते हैं। हमें सतर्क रहना चाहिए कि जिसमें यीशु सहमत हो उसी प्रार्थना में हम यीशु के नाम का उपयोग करें।

यह प्रार्थना ऊँचे स्वर में प्रभु यीशु की हमारे जीवन के ऊपर 'प्रभुता की घोषणा' के रूप में की जा सकती है।

प्रभुत्व प्रार्थना

"प्रभु यीशु, मैं अपने जीवन में आपकी जरूरत को महसूस करता हूँ और आपको मेरे प्रभु, उद्धारकर्ता और छुटकारा देने वाले के रूप में स्वीकार करता हूँ। मैं आपको अपने संपूर्ण जीवन का प्रभु होने के लिए आमन्त्रित करता हूँ...

मेरी आत्मा और सारी आराधना का प्रभु,
मेरे मन और सभी दृष्टिकोणों व विचारों का प्रभु,
मेरी सभी भावनाओं और अहसासों का प्रभु,
मेरी सारी इच्छा और सभी निर्णयों का प्रभु,
मेरे शरीर और शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभु,
मेरे स्वभाव व मृत्यु के समय का प्रभु,
मेरे लैंगिकता और उसकी अभिव्यक्ति का प्रभु,
मेरे परिवार और सभी रिश्तों का प्रभु,
मेरे कार्य और आपके निमित्त मेरी सेवकाई का प्रभु,
मेरी भौतिक चीजों और जरूरतों का प्रभु,
मेरी संपत्ति का प्रभु।

धन्यवाद यीशु कि आपने अपने लहू को बहाया कि मैं स्वतंत्र हो सकूँ।
यीशु मसीह के नाम में। आमीन।"

मन फिराव

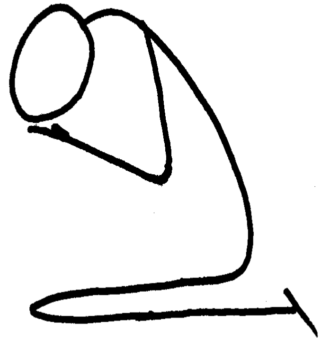

"परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।" (यीशु के वचन, ***मरकुस 1:15****)*

यीशु ने अपने सेवकाई के शुरूआत में यही मुख्य संदेश दिया था जो जयवन्त मसीही जीवन जीने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तव में, मन फिराव हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है तभी तो यीशु इस धरती पर अपनी सेवकाई के दौरान इस विषय पर बातें करता है ***(मत्ती 4:17; मरकुस 1:15; लूका 15:1-32, 24:47)***, और स्वर्गारोहण के बाद भी **(प्रकाशितवाक्य 2:5, 2:22, 3:3)**। इन वचनों में वह विश्वासीयों को उनके मन फिराव की आवश्यकता के बारे में बताता हैं।

प्रेरित पौलुस भी अपने प्रचार और शिक्षा की सेवकाई में मन फिराव के प्रति हमारी आवश्यकता पर जोर देता है। उदाहरणार्थ, प्रेरितों 26:20 और 2 कुरिन्थियों 7:8-10 । रोमियों 2:4 में वह कहता है कि परमेश्वर की कृपा हमें पापों से मन फिराव या मन फिराव की ओर प्रेरित करती है। प्रेरित पतरस भी कहता है कि परमेश्वर हम में प्रत्येक से चाहता है कि हम मन फिराये ***(प्रेरितों 2:38; 2 पतरस 3:9)***।

प्रायः मन फिराव को गलत रीति से समझा जाता है। कुछ लोग समझते है कि मन फिराव के बारे में बात करना, हमारे भूतकाल के पापों के बारे में लगातार सोचते रहना है। हालांकि, उन पापों की याद जो हमने किए और उसकी अपराधी जो हमने महसूस की, वह तुरंत: ही नष्ट हो जाती है जब हम ***वास्तव में*** मन फिराव करते है। मन फिराव परमेश्वर की ओर से एक उपहार के रुप में हमारे लिए एक आशीष है। मन फिराव का परिणाम अनंत जीवन, क्षमा, आनंद और स्वतंत्रता है और हमें यह परमेश्वर के साथ सहभागिता में लेकर आता हैं। यह उसका अनुग्रह है।

गवाही

मेरा यीशु के साथ पहला वास्तविक अनुभव

"मैं एक जवान आदमी हूँ जिसके पास अपने उद्धार के प्रति निश्चय नही था और अपने 'विश्वास के द्वारा' उसको पाने की कोशिश कर रहा था। जैसे ही मैंने उन बातों से मन फिराव किया जो मैंने की थी और जो मुझे परेशान कर रही थी, मैंने तुरंत ही शांति महसूस की और अपने हृदय में परमेश्वर के वचन सुने 'मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा और न कभी तुझे त्यागूँगा।'"

मन फिराव करना

मन फिराव करने का अर्थ है कि हम अपने पापों को छोड़े और परमेश्वर की ओर फिरे। इसका अर्थ यह हुआ कि हम अपने गलत कार्यों व गलत सोच को पीछे छोड़ना चाहते है और परमेश्वर की नजदीकी में रहना चाहते है। यह एक निर्णय है। यदि हम मन फिराव करने का निर्णय नही लेते है - तो हमने **मन फिराव न करने का** एक निर्णय लिया है! मन फिराव अपराधी की तरह या 'क्षमा करें (पश्चाताप)' यह कहना मात्र नही है। हम जानबूझकर भी गलत काम करके आत्मग्लानि और पछतावा महसूस कर सकते है। हम पीड़ादायी आंसुओं के साथ बुरी तरह से रो सकते है। उदाहरण के लिए, पतरस को पश्चाताप हुआ (लूका 22:62) लेकिन उसने मन फिराव किया (लूका 22:32), और उसे क्षमा कर दिया गया और बहाल कर दिया गया (यूहन्ना 21:15-19)। यहूदा को पछतावा और पश्चाताप हुआ लेकिन उसने मन फिराव नहीं किया (मत्ती 27:3)। परंतु हमें परमेश्वर के सामने हमारे अपराधों को अंगीकार करने की और उनसे क्षमा मांगने की जरूरत है। हमें यह समझने की जरूरत है कि जब हम पाप करते हैं तो हम परमेश्वर को शोकित करते है। हमें बदलने की आवश्यकता है ताकि हम आगे से इन बातों को न करें, तथा इसके लिए हमें परमेश्वर की मदद की आवश्यकता होती है।

> *कई मसीहियों ने परमेश्वर के राज्य में जाने के लिए पर्याप्त मन फिराव किया है लेकिन अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य की सामर्थ्य का अनुभव करने के लिए पर्याप्त मन फिराव नहीं किया है।*
>
> *(बिल जॉनसन के उद्धरण से)*

मन फिराव एक ऐसा विषय है जिसे विश्वासीयों को अपने जीवन में एक बार करना अवश्य है लेकिन महान जय प्राप्त करने के लिए, हमें निरन्तर मन फिराव करने की आवश्यकता है। क्योंकि पाप जिसका अंगीकार नही किया है और न ही मन फिराव, वह लोगों को सताने के लिए शैतान को एक 'अवसर' प्रदान करता है ***(इफिसियों 4:26-27)***।

परमेश्वर हमारी सभी खामियों को देख सकते है: "सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन् जिस से हमें काम है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।" ***(इब्रानियों 4:13)***। परमेश्वर वह सब कुछ जानता है जो हम करते है - यहाँ तक कि हमारे गुप्त पाप भी। भजनकार भजन संहिता 90:8 में परमेश्वर से कहता है,*"तू ने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख, और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है"।* यह ऐसा लगता है कि परमेश्वर ने अपनी लेखों की पुस्तक को खुला रखा है और हमारे लिए बाट जोह रहा है कि हम अपने पापों से मन फिराये और क्षमायाचना करें। जब हम यह करते है, वह अपनी कलम को यीशु के लहू में डुबोता है और हमारे पापों के लेख को मिटा देता है।

"क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो।" ***(भजन संहिता 32:1-2; और रोमियों 4:7-8)***

"जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।" ***(यशायाह 55:6-7)***

"मैं उनके पापों को और अधर्म के कामों को फिर स्मरण न करूँगा।" ***(इब्रानियों 10:17)***

"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" ***(1 यूहन्ना 1:9)***

1 यूहन्ना 1:9 के अनुसार, परमेश्वर केवल उन्हीं पापों को क्षमा करने का वायदा करते है जिन्हें हम उसके सामने अंगीकार कर लेते है।

विश्वास करना

मन फिराव करने से पहले हमें यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि यीशु कौन है और उसने हमारे लिए क्या किया है।

यह सुसमाचार के तीन ऐतिहासिक तथ्य ही है जिन पर यीशु विश्वास करने के लिए कहता है।

1. यीशु परमेश्वर का पुत्र है, अभिषिक्त मसीह या 'मसीहा'
2. यीशु हमारे पापों के लिए मरा और गाड़ा गया
3. यीशु तीसरे दिन मृतकों में से जिलाया गया।

बाईबल में यह तथ्य बहुत से स्थानों में मिलते है परंतु ***1 कुरिन्थियों 15:1-6*** में एक साथ सूचीबद्ध प्राप्त होते है। इन तथ्यों के अतिरिक्त, पुनरुत्थान के बाद यीशु 500 से अधिक गवाहों को दिखाई दिया और जब यीशु का द्वितीय आगमन होगा तो जो यीशु को मानते है वे भी जी उठेंगे ***(1 कुरिन्थियों 15:23)***। यदि हम इन तथ्यों में विश्वास करते है, तो हमारे पास विश्वास है! क्योंकि यीशु हमारे पापों के लिए मरा, हम अपने विश्वास के अभ्यासस्वरूप ही यीशु को अपने ***विशेष*** पापों को उठा ले जाने के लिए देते है। यह सब हम अपने पापों को पहचानते हुए, अंगीकार करते

हुए, यीशु से क्षमायाचना करते हुए और उसके स्वरूप में बदलने की मांग करते हुए करते है। इसके चरण इस प्रकार से है :- अपने पापों को पहचानना, इनका अंगीकार करना, पश्चाताप और यीशु से क्षमायाचना करना, बदलना तथा उसके स्वरूप में बदलाव की मांग करना है।

अपने पापों की पहचान करना

मन फिराव का पहला कदम हमारे पाप को पहचानना है। परमेश्वर के स्तर से नीचे गिरना ही पाप है। हर बार जब हमें एहसास होता है कि हमारे विचार, शब्द, दृष्टिकोण और कार्य यीशु के साथ मेल नहीं खाते हैं, तो हमें पश्चाताप करने की आवश्यकता है। प्रायः बाईबल जिसे पापपूर्ण मानती है उससे सामाजिक प्रथाएँ असहमत होती है। परिशिष्ट में नए नियम आधारित मन फिराव की सूची को दिया गया है जिसमें सन्दर्भ आधारित विषय जिसे पुराने नियम व नए नियम को आधार बनाया है। निर्गमन अध्याय 20 को देखें और मन फिराव की उन सूचियों से वचनों को देखें, और आप परमेश्वर से कह सकते हो कि वह आप के पापमय स्वभाव या व्यवहार को दिखाये।

> *हर बार जब हमें एहसास होता है कि हमारे विचार और कार्य परमेश्वर के वचन के अनुरूप नहीं हैं, तो हमें मन फिराव करने की आवश्यकता है।*
> *(बिल जॉनसन)*

हममें से बहुत लोग दूसरी वस्तुओं को परमेश्वर के समकक्ष रखते है ***(1 यूहन्ना 5:21)***। शायद हम दूसरे ईश्वरों की स्तुति करते है। हो सकता है कि हम दूसरे व्यक्ति जैसे कि हमारे परिवार के सदस्य, महान खिलाड़ी या अपने पादरी को जिसे हम यीशु से अधिक मानते है, उनकी स्तुति कर सकते है। शायद हम ने पैसे व अधिकार को यीशु से ज्यादा प्रेम किया हो। शायद हमारे मन में किसी के लिए काम-वासना का भाव आया हो या पोर्नोग्राफी में संलग्न हो। शायद हम यीशु से शान्ति को लाने, चंगा करने व भलाई की इच्छा के विरुद्ध शारीरिक अभ्यास द्वारा या चंगाई की तकनीक को आत्म-साथ करने की कोशिश करते है जो अंधकार के साम्राज्य से आती है। शायद हम किसी को क्षमा नहीं कर पा रहे जिन्होंने हमें कष्ट पहुँचाया था या शायद हम अपने या हृदय में ही दूसरों का न्याय व आलोचना करते है। शायद हम हमारे परिवार के लोगों से बहुत गुस्सा होगे; अपनी पत्नी या पति या बच्चों की पिटाई की हो। शायद हमने चुगलखोरी की हो! 'भले' काम करना भी पाप हो सकता है यदि परमेश्वर ने उसे करने के लिए न कहा हो (जिसे बाईबल में *"बुरे काम"* (या "मरे हुए काम") कहा है, इब्रानियों 6:1)। स्मरण रखे कि हर एक पाप, पाप ही होता है। हमारे लिए खुशखबरी यह है कि कोई भी पाप

> *परख करने का नियम: क्या यह ज्योति के राज्य में उत्पन्न होता है या अंधकार के राज्य में?*
> *(विक्टर डी' मोंटे अडोनाई)*

इतना बुरा नही है, या जो बार-बार किया जाता है कि जब हम अंगीकार करते है और परमेश्वर से क्षमायाचना करते है फिर भी परमेश्वर क्षमा न करें।

“क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से बुरे-बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती है। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती है।” ***(मरकुस 7:20-23*** में यीशु के वचन*)*
*“जब आप अपने पापमय स्वभाव की इच्छा का पीछा करते है तो परिणाम स्पष्ट है; शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गंदे काम लुचपन, मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध फूट, विधर्म। डाह, मतवालापन, लीलाक्रीडा और इन के जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनंद, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।” **(गलातियों 5:19-23)***।

[यह एक ‘अक्षम्य पाप’ भी है ***(मत्ती 12:32; 1 यूहन्ना 5:16)*** परंतु यदि हम परमेश्वर की नजदीकी में जाना चाहते है तो हम यह नहीं कर सकते।]

गवाही

यीशु ने मेरे विवाह को पल भर में ठीक किया

“मेर शादी एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो नया जन्म पाया हुआ विश्वासी नहीं था, हालाँकि मेरा नया जन्म हुआ था। हमारी शादी कई वर्षों तक बहुत खराब अनुभवों से गुजरी। आखिरकार मैंने एक अविश्वासी से शादी करने के लिए मन फिराव किया। परमेश्वर ने मेरे पति के जीवन में काम किया और उन्हें उनके पापों का बोध करवाया। उसके बाद उन्होंने मन फिराव किया और अनुग्रह से नया जन्म प्राप्त किया। पल भर में ही, परमेश्वर ने पूरी तरह से हमारे विवाह को ठीक कर दिया।”

परमेश्वर हमारे पापों से घृणा करता है और हमसे भी चाहता है कि हम भी उनसे घृणा ही करें। जब हम अपने पापों को पहचानेंगे और हमारे पापपूर्ण चाल व व्यवहारों से घृणा करेंगे तभी हम उनको करना बंद करेंगे।

आप अभी परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह आपको वह काम दिखाए जो आपने किया है जिससे उसे चोट पहुंची है, या जो उसे चोट पहुंचाता रहेगा; पाप जो आपको ईश्वर से अलग करते हैं और वह चाहता है कि आप मन फिराव करें।

*“हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर!” **(भजन संहिता 139:23-24)***

यह प्रार्थना सहायक होगी।

"स्वर्गीय पिता, कृपया मुझे मेरे उन विशिष्ट पापों को दिखाए जिन्हें मैंने किया और आप जिन्हें अभी मुझसे दूर करना चाहते है। यीशु' के नाम में। आमीन।"

[फिर परमेश्वर से आने वाले विचारों, भावनाओं या प्रभावों की प्रतीक्षा करें।]

अपने पापों का अंगीकार करना

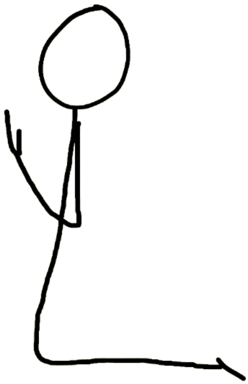

अपने पापपूर्ण स्वभाव या व्यवहार को पहचानकर, हमें उस विशिष्ट पाप को अंगीकार करने व उससे मुंह फेर लेने का निर्णय लेने की आवश्यकता है। यदि कोई ऐसे पाप है जो बार-बार हमारी याद में आते रहते है तो हमें निरन्तर परमेश्वर से उनके मन फिराव, मुंह फिराने व उनसे अलग करने के लिए सहायता माँगनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि जब हम अपने पापों का अंगीकार करें तो हम **स्पष्ट** और **विवरण** के साथ कहें।

बाईबल में ऐसी घटनाएँ है जो कि लोगों के ऐसे विशिष्ट पापों का विवरण देती है उदाहरण के तौर पर राजा दाऊद - व्यभिचार, छल, और सामूहिक हत्या के द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है ***(1 शमूएल 11 और 12)***। परमेश्वर ने उसी प्रकार जैसे दाऊद ने पाप किया था वैसे ही नातान को बताया ***(2 शमूएल 12:9-10)***, परमेश्वर जानता है कि हमने सही में क्या पाप किए हैं। परमेश्वर से कुछ भी छिपा नही है, वह हमारे हृदय, हमारे मन को जानता है और वह देखता है कि हम क्या करते हैं और सोचते है। हमें अपने पवित्र परमेश्वर के सामने पूरी तरह से ईमानदार होने की आवश्यकता है जो हमारे बारे में सब कुछ जानता है और चाहता है कि हम अपने पापों की जिम्मेदारी ले ***(प्रकाशितवाक्य 2:23)***।

प्रत्येक पाप, पापी को, अन्य लोगों को तथा परमेश्वर को भी प्रभावित करता है। एक पाप अधिक पापों को करने के लिए उकसाता है, जैसे धोखे से पहले की बातों को ढाँपा जाता है। किसी व्यक्ति को इन संबन्धित पापों के जाल को पहचानने और इनसे मुक्त होने के लिए मन फिराव करने की आवश्यकता होती है। तब वह परमेश्वर के अनुग्रह को अनुभव कर सकते हैं जिससे पाप क्षमा होते है और नुकसान की भरपाई करता है।

जब हम अपने पाप को स्वीकार करते है, तो हम परमेश्वर से सहमत होते हैं और खुले तौर पर उसके सामने मान लेते है कि हमने पाप किया है। अंगीकार करने का अर्थ है ऊँचे शब्दों में बोलना। बाईबल में कही भी ऐसे संकेत नहीं मिलते है कि चुपचाप अंगीकार किया जाए। हम अपने मुंह से अंगीकार करते है, "यदि हम अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करें..." ***(रोमियों 10:9-10)***। जब हम अंगीकार करते है, परमेश्वर असंभव को संभव कर सकता है और उन पापों को माफ कर सकता है।

परमेश्वर उन पापों को क्षमा करने का वायदा नही करता हैं जिसे हम उसके सामने अंगीकार नही करते... *"परंतु **यदि** हम अपने पापों को उसके सामने मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं" (**1 यूहन्ना 1:9** में बल देकर कहा है, और, **नीतिवचन 28:13**)*।

*"इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें।" **(इब्रानियों 4:16)***

हमें क्षमा मिलने व बदलाव होने के लिए परमेश्वर से याचना

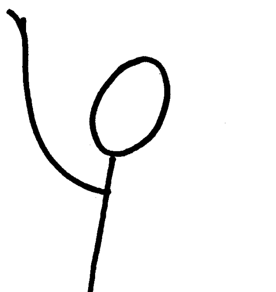

अपने पापों को अंगीकार करने के उपरांत हम परमेश्वर से क्षमा याचना कर सकते है। हम स्वयं के लिए व किसी के लिए भी जो हमारे आचरण से अशुद्ध हुआ हो उसके लिए परमेश्वर से शुद्धता की याचना कर सकते है ***(1 यूहन्ना 1:9)*** और हमें विचार करना है कि किस प्रकार चीजों को पहले की तरह ठीक कर सकते है। जिसने भी हमें कष्ट पहुँचाया हो हमें उन्हें क्षमा करने की जरूरत है या फिर परमेश्वर से क्षमा करने के लिए सहायता लेनी चाहिए। हमें परमेश्वर को बताने कि जरूरत है कि हम बदलना चाहते है और हमें यीशु की तरह बनने में सहायता करें। तब हम यीशु को अपने हृदय की गहराई में आमंत्रित करें तथा पवित्र आत्मा से आने व हमें अपनी पूर्णता से भरने का आग्रह करें।

यदि आप जानते है कि आपने पाप किया है तो आपके लिए प्रार्थना मार्गदर्शिका:

- अपने अपराधों का अंगीकार करें (विशिष्ट रुप से)।
- परमेश्वर से ईमानदारी के साथ क्षमायाचना, स्वयं व दूसरे व्यक्ति (यों) की शुद्धता के लिए व अपने बदलाव की प्रार्थना करें।
- चीजों को सही स्थिति में बनाए रखने के लिए परमेश्वर से कहे।
- यीशु को अपने हृदय में आने के लिए कहे (दुबारा) कि आपको पवित्र आत्मा से पूरी तरह भर दे।

यहाँ मन फिराव करने के लिए एक आदर्श प्रार्थना दी है जो आपको परमेश्वर की नजदीकी में आने में मदद कर सकती है। अच्छा होगा कि आप प्रार्थना में अपने शब्दों का प्रयोग करें क्योंकि प्रार्थना आपके हृदय से निकलती है।

मन फिराव की प्रार्थना

''स्वर्गीय पिता, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने अपराध किया है। मैंने ... (अब अपने विशिष्ट पापों को जोर से, परमेश्वर के सामने, अंगीकार करें। ईमानदारी से प्रत्येक घटना को विस्तार से उसके सामने बताए।) मैं इन पापों को त्यागता हूँ। मैं गलत था। मैं अपने पापों से मुड़कर आपकी ओर फिरना चाहता हूँ।

''कृपया मुझे क्षमा करें और मुझे यीशु के लहू से शुद्ध करें। मैं बदलना चाहता हूँ, कृपया मुझे बदले और मुझे एक नया हृदय दीजिए। कृपया मेरे पाप के परिणामों से मुझे या किसी और को भी प्रभावित होने से रोके। प्रभु यीशु, कृपया मेरे हृदय में आइए (दुबारा) और मुझे अपनी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करें।

''मैं उन लोगों को आशीष देता हूँ जिन्होंने मुझे कष्ट पहुँचाया है। पिता कृपया उन्हें भी आशीष दे। कृपया बताए कि चीजों को कैसे ठीक रखा जाए। कृपया मुझे परीक्षा में न डालिये और बुराई से बचाइये। धन्यवाद। यीशु' के नाम में। आमीन।''

मन फिराव की प्रार्थना के उपरांत, निम्नलिखित वचनों को प्रार्थना के रूप में घोषित करना सहायक होगा।

परमेश्वर से क्षमा का आश्वासन

ऊँची आवाज से घोषणा करें *(1 यूहन्ना 1:8-10)*

“धन्यवाद प्रभु परमेश्वर जैसे कि आपका वचन कहता हैं कि जब मैं अपने पाप का अंगीकार करता हूँ तो आप विश्वासयोग्य और धर्मी हो और मेरे पाप को क्षमा करोगे, और मुझे सारे अधर्म से शुद्ध करोगे। अतः मुझे क्षमा किया गया है! आपकी क्षमा के लिए धन्यवाद। यीशु’ के नाम में। आमीन।”

हमें क्षमा करने के द्वारा, परमेश्वर हमारे हृदय से उस पाप को हटा देता है। इसके पश्चात हमारे हृदयों में यीशु और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए अधिक जगह मिलती है। यीशु और पवित्र आत्मा ही हमें परिपूर्ण कर सकते है जब हम उन्हें आमंत्रित करेंगे ***(प्रकाशितवाक्य 3:20)***। यह कुछ ऐसा है जैसे कि हमारे हृदयों के दरवाजे पर केवल अंदर की तरफ दरवाज़े का हैंडल लगी हुई है - इसलिए केवल हम ही अपने हृदयों के दरवाजों को खोल सकते है! जितना अधिक हम यीशु और पवित्र आत्मा को हमारे हृदयों में आमंत्रित करते है, उतना ही वह हममें वास करता है ***(कुलुस्सियों 1:27)***, जितना हम उसकी तरह बनते है उतना ही पवित्र आत्मा के फल को हमारे जीवनों में उत्पन्न करते है ***(गलातियों 5:22)***। यह *“आत्मिक सांस”* लेने जैसा है। जैसे हम पाप और अहं से खाली होते है, तब हम और अधिक यीशु मसीह, पवित्र आत्मा और परमेश्वर के प्रेम में परिपूर्ण होने की याचना कर सकते है ***(रोमियों 5:5)***।

गवाही

मन फिराव के उपरांत यीशु ने चंगा किया

“एक बार मैं पीठ के दर्द से पीड़ित व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर रहा था। मैंने उसकी पीठ को चंगा होने, हर एक हड्डी को ठीक होने व दर्द को खत्म हो जाने का आदेश दिया। कुछ ही पलो में उसका पीठ दर्द लगभग खत्म गया लेकिन उसे अभी भी कंधे में कुछ दर्द महसूस हो रहा था। मैंने अपनी प्रार्थनाओं को उसके कंधे पर केंद्रित किया, फिर चंगा होने के लिए और दर्द को चले जाने के लिए कहा। मैंने उस व्यक्ति से पुछा, ‘क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने आपको कष्ट पहुँचाया है और जिसको आपने क्षमा करना चाहते है? उसने कहा “नही”, “लेकिन यह पाप हो सकता है”। “क्या पाप” - मैंने पूछा। उस व्यक्ति ने खुले तौर पर कुछ विशिष्ट पापों का अंगीकार किया (जिसमें से एक व्यभिचार भी था)। उन सब पापों से मन फिराव करवाने के लिए मैंने उसकी मदद की, तथा प्रभु से याचना की कि यीशु उसके हृदय में आए। तब ऐसा ही हुआ और तुरंत ही उसने अंदरूनी रूप से अपने आप को स्वतंत्र अनुभव किया और उसका कंधा भी चंगा हो गया।”

याद रखें कि हम अपने प्रयासों से नहीं बदलते है - हम नहीं कर सकते है! यह परमेश्वर ही है जो हमें बदलता है जब हम उसे आमंत्रित करते है।

एक दूसरे के साथ प्रार्थना करना

यदि मन फिराव की प्रार्थना के बाद भी पाप के ऊपर जयवन्त नहीं हो पा रहे है, तो हो सकता है कि पाप की दबी हुई 'जड़' या कारण सामने ही नही आया है और इसी कारण उसके लिए ***वास्तव में*** मन फिराव नहीं किया गया है। इस मुद्दे के लिए फिर से प्रार्थना की जानी चाहिए, परंतु इस समय एक भरोसेमंद सह-विश्वासी की सहभागिता में ताकि वे इसकी जड़ को सामने लाने में मदद कर सकें। तब वह व्यक्ति पाप से मन फिराव कर सकता है (या जिन्होंने उसे कष्ट पहुँचाया था व उसका कारण थे, उन्हें क्षमा कर सकता है)। 'प्रार्थना सेवक' प्रार्थना में सहमती प्रकट कर सकते है और परमेश्वर ने जो किया है उसके गवाह बन सकते है ***(मत्ती 18:19-20)*** और व्यक्ति को फिर से सुदृढ़ कर सकते है कि उन्हें क्षमा कर दिया गया है। आम तौर पर जैसे ही वे स्वयं को स्वतंत्र महसूस करेंगे और अपने हृदय की गहराई में सुकून महसूस करेंगे वे यह जान पायेंगे कि उन्हें क्षमा मिल गई है।

जब किसी की सेवा कर रहे होते है तो उन्हें यह याद दिलाना अच्छा है कि परमेश्वर पाप को स्मरण नहीं करने की प्रतिज्ञा करता है। *"...क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा"* ***(यिर्मयाह 31:34ब; इब्रानियों 8:12; इब्रानियों 10:17)***। जब हम वास्तव में मन फिराव करते है तो यह पुराने पाप हमारे मन में कभी नही आयेंगे कि हमें दोषी ठहराए। इससे हम जान पायेंगे कि हमें क्षमा कर दिया गया हैं। ***(कुलुस्सियों 1:21-23अ; 1 यूहन्ना 1:8-10, 5:15)***।

अपने मन फिराव को दर्शाना

हमें पाप का अंगीकार और मन फिराव करने के बाद इसे लगातार दर्शाने की आवश्यकता है। इसका अर्थ है जो अवश्य ही करना होगा अर्थात: *"अपने जीने के तरीके द्वारा यह प्रमाणित करना है कि आपने अपने पापों से मन फिराव किया है और परमेश्वर की ओर फिर गए हो"* ***(मत्ती 3:8)।*** इसका अर्थ यह हुआ कि हम हर बार जब पाप से दूर जाते है तो इसकी तरफ खींचा हुआ महसूस करते है। हमें स्वयं को पाप के सामने झुकने से रोकना है और इसके लिए परमेश्वर से सहायता माँगने की आवश्यकता है। यह कोई एक पापपूर्ण विचार, शब्द या कार्य हो सकता है। जब कभी यह परीक्षा आती है तो हमें इसका इन्कार करना है, इससे ***फिरना*** है और यीशु की तरफ ***मुड़ना*** है। यह सब हम अपनी ताकत से नही कर सकते है पर पाप से दूर होकर यीशु से याचना कर सकते है।

स्मरण रखे कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा "हाँ और आमीन" में होती है ***(2 कुरिन्थियों 1:20)*** और जब हम मन फिराव के बाद हृदय के साथ उसकी तरफ मुड़ते है तो वह हमेशा ही हमें क्षमा कर देता है चाहे हमने कितनी भी बार पाप किए हो।

पुनर्स्थापन

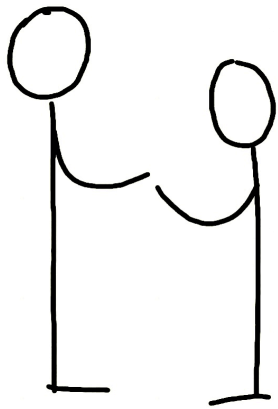

जब एक पाप होता है तो उसके परिणाम भी हमेशा साथ ही रहते है। उदाहरण के लिए, हमने किसी को कष्ट पहुँचाया, यद्यपि हमें क्षमा भी मिल गई, परन्तु उसकी पीड़ा बनी रह सकती है। कई बार परमेश्वर हमें इसकी क्षतिपूर्ति के लिए कहता है। ***(गिनती 5:6-8अ)***। यदि हमने चोरी की, तो जिस व्यक्ति के पास से हमने चुराया उससे अंगीकार करने की आवश्यकता है और जो उसका है उसे वापस करना है, हो सके तो ब्याज के साथ भी (जक्कई के उदाहरण से, लूका 19:8)। यदि हम किसी के प्रति निष्ठुर थे तो अभी से दया दिखाने की आवश्यकता है। हमें उनसे अपने पापों को अंगीकार करने की आवश्यकता है, उनसे क्षमा माँगे और उनसे मेल मिलाप कर ले।

यदि कोई पाप देश के कानून के खिलाफ है तो हमें इसके लिए प्रार्थना करके इसकी प्रक्रिया को परमेश्वर के हाथ में सौंप देना चाहिए, तब उचित अधिकारियों के पास जाकर अपने गलत कार्यों को स्वीकार करें और कानून को अपना काम करने दे ***(रोमियों 13:1-7)***।

गवाही

यीशु ने मेरे वित्तीय पाप को दूर किया

"मैंने अपने कंपनी के मालिक के खिलाफ वित्तीय पाप से मन फिराव किया था परंतु पुनर्स्थापन नही किया था। मुझे इस अपराध का बोध उस समय हुआ जब कुछ राजनीतिक नेताओं को इसी तरह के अपराध के कारण जेल में डाल दिया गया था। जब मैं अपने पति के साथ इस विषय के लिए प्रार्थना कर रही थी कि हमें वह पैसा वापस करना चाहिए कि नही (जक्कई के समान), तो मेरे पति ने अपने हृदय में प्रभु को यह कहते हुए सुना: "जो मेरा है उसे मुझे दो"। हम उलझन में थे कि इसका क्या अर्थ है, परंतु बाद में मैंने अनुभव किया कि यीशु ने वास्तव में मेरे पापों को अपने ऊपर ले लिया था। वह अब अपनी तरफ से मुझसे ये चाह रहा था कि मैं पुनर्स्थापन करने के लिए उस धन की क्षतिपूर्ति करूँ। मैंने एक पत्र लिखकर अपने कंपनी के मालिक से अपने बुरे काम के लिए क्षमा मांगी और उसके साथ ही जो धन चुराया था उसे ब्याज सहित मनी-ऑडर के रुप में उसके पास भेज दिया। उनके प्रत्युत्तर में इस प्रकार लिखा था, 'आपकी ईमानदारी के लिए धन्यवाद, भले ही थोड़ी देर से।"

क्षमाशीलता

"इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा । और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करेगा" ***(मत्ती 6:14-15)***

हमें परमेश्वर ने अपनी अनुग्रहकारी क्षमा का उपहार दिया है ताकि हमारा हृदय उसके साथ सही हो सके ***(रोमियों 5:15-16)।*** सुसमाचार क्षमा का संदेश है। क्षमा और दया परमेश्वर के चरित्र के गुण हैं। यदि हम परमेश्वर के सामने अपने पापों को मान लेते है, तो वह हमें क्षमा करता है तथा हमारे सब अधर्म से शुद्ध करता है ***(1 यूहन्ना 1:8-10)।*** तब वह हमें एक नए उच्च स्तर में ले जाते है जिसके लिए हम योग्य नही हैं; एक ऐसा स्थान जहाँ हम परमेश्वर के साथ सही होते है – अर्थात 'अनुग्रह' का स्तर[3]।

गवाही

यीशु ने मुझे अपने हृदय से क्षमा करने में मदद की

"मेरे एक दोस्त ने मुझे धोखा देकर पुलिस के हाथों पकड़वा दिया और मुझे जेल में डाल दिया। मेरे दोस्त के इस विश्वासघात ने मेरा सब कुछ तबाह कर दिया यहाँ तक कि मेरा विवाह, मेरे बच्चों के साथ मेरा रिश्ता, मेरी नौकरी, मेरी प्रतिष्ठा – मेरा सब कुछ। मैं अपने उस पूर्व-मित्र के प्रति कड़वाहट से भर गया व घृणा करने लगा। इसके बाद जब मैं जेल से बाहर निकला तो कुछ विश्वासी लोग मुझे उसको क्षमा करने के लिए कहने लगे। मैंने कोशिश की, फिर कोशिश की और बार-बार कोशिश करता रहा। तब मैंने यीशु से क्षमा करने के लिए सहायता माँगी। कुछ ही क्षणों में मैंने जोर से बोलना शुरु किया 'मैं उसे क्षमा करता हूँ' उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि मैंने उसको हृदय से क्षमा कर दी है। तुरंत ही मैंने अलग सा महसूस किया। इसके तुरंत पश्चात मैंने अपनी बेटी से मुलाकात होने का एक स्वप्न देखा और इसलिए मैं उससे मिलने गया और तब से हम निरन्तर सम्पर्क में है।"

[3] जॉन एंड कैरल अर्नोट: ग्रेस एंड फॉरगिवनेस, 2009, न्यू वाइन मिनिस्ट्रीज्। अनुमति के साथ प्रकाशित।

दूसरों को क्षमा करना

इस 'अनुग्रह' के स्तर में बने रहने के लिए, हमें अपने सताने वालों को क्षमा करना जरूरी है। यीशु हमारा आदर्श हैं। यीशु ने अपने हत्यारों को भी क्षमा कर दी थी जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था ***(लूका 23:34)।*** यीशु ने उनका इन्तजार नहीं किया कि वे कब उसे सताना बन्द करेंगे और न ही उन्होंने क्षमायाचना की। इसके विपरीत, जब वे उसका अपमान कर रहे थे व उसे मार रहे थे, उसने उन्हें क्षमा कर दी। तो इसलिए, हमें यीशु की तरह बनना है और अपने शत्रुओं को क्षमा कर देना है।

गवाही

यीशु ने मुझे स्वतन्त्र किया!

"मैं लोगों को क्षमा करने में सक्षम रहा हूँ और जो द्वेष की भावना मैंने किसी के खिलाफ रखी थी उसे अपने पास से दूर किया हालाँकि वह मुझसे बात नही कर रहे है। मैं राहत महसूस करता हूँ और स्वतंत्र हूँ।"

जब हम अपने सम्पूर्ण हृदय से क्षमा नही करते है, तब हम 'अनुग्रह' के स्तर से 'न्याय' के स्तर पर नीचे आ जाते है जहाँ हमें अपने पापों के अनुरूप फल प्राप्त करते है। क्षमा न करने के द्वारा हम परमेश्वर प्रदत्त अनुग्रह के सभी लाभों को खो सकते है। उदाहरण के लिए, प्रार्थना का उत्तर नही मिलना ***(1 पतरस 3:7)*** या चंगाई पर रोक लगना ***(याकूब 5:16)***, इसके और भी भयानक परिणाम भी हो सकता है ***(मत्ती 6:15)***। **'न्याय का स्तर'** वह है जहाँ पर हम स्थित है व जिसके हम योग्य है तथा परमेश्वर के क्रोध के अंतर्गत आ सकते है **(यूहन्ना 3:36)**। यहाँ तक कि परमेश्वर हमें पीड़ा देने वालों के हाथों में भी सौंप सकता है (दुष्ट-आत्मायें - मत्ती 18:23-35 में निर्दयी सेवक के दृष्टांत को देखे)। हम निरन्तर 'अनुग्रह' के स्तर में जी सकते है यदि हम अपने सताने वालों को निरन्तर क्षमा करते है। हमें अनुग्रह तभी मिलता है जब हम दूसरों पर अनुग्रह करते है, उदाहरण के रूप में कुरनेलियुस, प्रेरितों के काम 10 अध्याय। व्यवस्था का सकारात्मक पहलू भी यही हैं कि जो हम बोते है उसे ही काटते है ***(लूका 6:37-38)***।

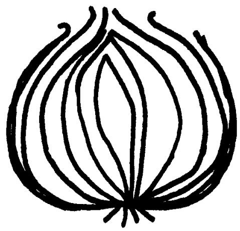

यदि हमें अपने सताने वालों को क्षमा करना है, तो हमें ऐसा करने के लिए निर्णय लेने की आवश्यकता हैं। तभी परमेश्वर हमें क्षमा करने के लिए सक्षम बनाता है। यह उसकी ही सामर्थ्य है जो हमें पूर्ण रूप से क्षमा करने के लिए मदद करती है; परंतु हम में दूसरों को क्षमा करने की इच्छा होनी चाहिए। जब हम प्रार्थना करेंगे तो शायद पहली बार ही पूर्ण रूप से क्षमा नहीं कर पायेंगे। प्रायः गहरे कष्ट हमें उस व्यक्ति को बहुत बार क्षमा करने की माँग करते है जो कि उसने हमारे साथ, दूसरों के साथ व परमेश्वर के साथ किया है। यह एक प्रक्रिया है, जैसे प्याज की परतों को एक-एक करके हटाना, जब तक यह पूरी तरह से

हट न जाये। आखिरकार हमें पता चलता है कि हमने सच में उन्हें क्षमा कर दिया है। कष्ट कम पीड़ादायी बन जाते है और हम जब उस व्यक्ति से मिलते और उसके बारे में सोचते है तो हमारे हृदय में थोड़ी सी भी घबराहट महसूस नही करते है। हम पुनः 'अनुग्रह' के स्तर में आ जाते है!

"तब पतरस ने पास आकर उस से कहा, "हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?" यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक।" ***(मत्ती 18:21-22)***

हमें यह स्तर परमेश्वर ने दिया है क्योंकि यह उसका स्तर है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितनी बार एक ही पाप को करते व हृदय से मन फिराव करते है – क्योंकि क्षमा माँगने पर परमेश्वर हमें क्षमा कर देते है। उसी प्रकार से, जब कोई हमारे विरोध में पाप करता है तो हमें उसे क्षमा कर देना चाहिए, इससे फर्क नहीं पड़ता कि कितनी बार हमें क्षमा करना है।

आमतौर पर यह हमारे लिए नासमझी ही होगी कि हम किसी को कहे कि हमने आपको क्षमा कर दिया है: किसी को यह कहने से पहले कि आपको क्षमा कर दिया, उनको भी पता होना चाहिए कि उन्होंने क्या कुछ गलत किया है, जिसे वह सुनना पसन्द नहीं करते और दूसरे आप बहुत अच्छे विश्वासी हो जिसे वह देखना भी पसन्द नहीं करते! ऐसे अनेक तरीके है कि वे जिससे वह जान सकते है व उनकी नापसंद को पसंद में बदल सकते है, आपको ऐसा कहने की जरूरत भी नही है।
(एग्नेस सैनफोर्ड, क्रिएशन वेट्स, 1977, ब्रिज लोगो पब्लिशिंग)

जब कोई हमें कष्ट पहुँचाता है तो प्रायः हम उस कष्ट की प्रतिक्रिया में पाप करते है। उदाहरण के लिए, हम उस व्यक्ति को मूर्ख ही मान लेते है या उनके कष्ट पहुँचाने के तरीके के बदले में गुस्से की प्रतिक्रिया व्यक्त करते है। यह सब पापपूर्ण प्रतिक्रियाएँ है और हमें इनका अंगीकार व मन फिराव करने की आवश्यकता है। हमें इन सब कष्टों को अपने से दूर कर देना चाहिए भले ही यह उचित और न्यायपूर्ण न लगे; हमें इस बात को स्वीकार करना है कि केवल परमेश्वर ही सही निर्णय करने के योग्य है। हम कब कहते है कि 'यह उचित नहीं है!' या सबसे 'खरे दिखने' की चाह हमें उस नीचे के स्तर पर ले आती है जहाँ हम परमेश्वर के अनुग्रह में जीने के बजाय परमेश्वर के न्याय को अपने ऊपर ले आते है। हमें क्षमा मिल चुकी है इसकी परख तब होती है जब हम स्नेह-वश अपने हृदय से आशीष देते है और यह जानकर खुश होते कि वे आशीषित हुए है। यीशु ने कहा *"जो तुम्हें स्राप दें, उनको आशीष दो"* ***(लूका 6:28)***।

किसी को पूर्ण रीति से क्षमा करने का यह अर्थ नहीं है कि जिसने हमें कष्ट पहुँचाया हो उस व्यक्ति पर भरोसा रखे व उनके साथ रिश्ता रखे। समय के साथ, यह भी हो जाएगा। यद्यपि, परमेश्वर हमें उसके ऊपर भरोसा रखने के लिए कहता है न कि लोगों पर। भजन संहिता 118:8 में इस प्रकार लिखा है, *"यहोवा की शरण लेनी, मनुष्यों पर भरोसा रखने से उत्तम है।"* यहाँ तक यीशु भी हर एक व्यक्ति पर भरोसा नहीं करते थे ***(यूहन्ना 2:24-25)।*** हालाँकि, उसने हमें आज्ञा दी है कि हम प्रत्येक व्यक्ति जिसमें हमारे बैरी भी आते है उनसे प्रेम करें ***(मत्ती 5:44-46)***।

गवाही

यीशु ने मेरे व्यापार को ठीक किया

"मैं बहुत ही हताश था क्योंकि मेरे ग्राहक मेरे काम के पैसे नहीं चुका रहे थे। यह परिस्थितियाँ मेरे व मेरे परिवार के लिए बहुत ही कठिन थी; हमारे प्रतिदिन की जरूरत के लिए भी कुछ नहीं बचा था। तब हमारे पास्टर ने देखा कि मुझे अपने ग्राहकों को क्षमा करने की आवश्यकता है, उन्होंने इसमें मदद की यहाँ तक कि मुझे उनसे अपना पैसा लेना था पर उन्हें जाने दिया! यह मेरे लिए एक संघर्ष था जो बिल्कुल भी आसान नहीं था। फिर भी, मैंने उन्हें क्षमा कर दी। उसके कुछ समय बाद मैं अच्छे ग्राहकों से जुड़ा जो समय पर भुगतान कर देते थे।"

प्रायः यीशु क्षमा को कर्ज और कर्ज माफी, इन वित्तीय विषयों द्वारा समझाते थे ***(मत्ती 18:23-35)***। जब उन्होंने क्रूस पर प्राण त्यागें तो यह कहा *"समाप्त हुआ"* ***(यूहन्ना 19:30)***। इन शब्दों का इस्तेमाल उस समय किया जाता है जब एक भारी कर्ज को पूरी तरह से चुका दिया गया हो। दूसरे शब्दों में, यीशु कह रहे है कि उन्होंने हमारे पूरे कर्ज (पाप) के लिए पूरी कीमत दे दी है; उसने हमें मिलने वाली सजा को अपने ऊपर ले लिया है। जब हम यह जान लेंगे कि वास्तव में यीशु ने हमारे लिए क्या किया तब हम इस बात को समझना शुरू करते है कि क्यों हमारे विरुद्ध पाप करने वालों को क्षमा करना महत्वपूर्ण है।

कई बार लोग यह महसूस करते है यदि उनके विरुद्ध किया गया पाप या कष्ट बहुत ही ज्यादा गंभीर या अत्यन्त पीड़ादायी है, तो उन्हें उस व्यक्ति को क्षमा नहीं करनी चाहिए। यह कष्ट ज़मीन हथियाना या यौन उत्पीड़न हो सकता है, जिसमें बलात्कार भी शामिल है।। जबकि इसमें पीड़ित व्यक्ति की प्रतिक्रिया स्वाभाविक होती है, परंतु बाईबल इसके लिए पूर्णतः स्पष्ट है कि हमारे कष्ट कितने ही दु:खदायी हो, फिर भी हमें क्षमा करनी है ***(मत्ती 6:14-15; इफिसियों 4:31-32; 1 कुरिन्थियों 6:7)***।

ऐसी परिस्थितियों में क्षमा करना आसान नही है; केवल परमेश्वर ही हमें क्षमा करने के लिए मदद कर सकते हैं, हो सकता है पूरी तरह यह करने में समय लगे। यद्यपि, हमें अपने कष्ट पहुँचाने वालों के मित्र नहीं बनना है परन्तु अपने हृदय से उनको क्षमा करनी है।

जिस किसी ने हमें पीड़ा पहुँचाई हो और उन्हें क्या हर्जाना देना है, इसका विवरण तैयार करने में यह प्रार्थना पूर्वक व विचारपूर्वक मदद करेगा। तभी आप क्षमा करने के मूल्य को जान सकते है (उदाहरण, पैसा, धोखा, पीड़ा, प्रतिष्ठा...) और उन्हें प्रत्येक बात के लिए क्षमा करें। उन्हें अपने कर्ज से मुक्त करें।

आप पवित्र आत्मा को आमंत्रित करके थोड़ा समय बिताने की सोच सकते है ताकि वह आपको दिखा सकें कि अभी भी कोई ऐसा है जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया हो और उसे क्षमा किया जाना है। आप परमेश्वर से क्षमा याचना कर सकते हो कि आपने अपने कष्टों के लिए गलत तरीके से प्रतिक्रिया दी।

प्रार्थना मार्गदर्शिका यदि आप किसी को क्षमा कर रहे हैं:

- परमेश्वर को बताए कि उन्होंने कैसे आपको पीड़ा पहुँचाई (विशिष्ट रूप में)।
- उन्हें क्षमा करने का निर्णय करें (यदि आप स्वयं करने में सक्षम नही है तो परमेश्वर से क्षमा करने में सहायता माँगे)।
- ऐसे गलत विचारों व कार्यों का अंगीकार करें जो आपने पीड़ा के परिणामस्वरूप प्रकट किए थे।
- उस व्यक्ति (यों) को आशीष दो जिन्होंने आपको कष्ट पहुँचाया था और परमेश्वर से उन्हें आशीषित करने के लिए कहे।
- यीशु को अपने हृदय में (पुन) आने के लिए आमंत्रित करें कि आपको पवित्र आत्मा से पूरी तरह से भर दे।

जब आप तैयार हो, ऊँचे स्वर में, इस प्रकार से प्रार्थना कर सकते है।

दूसरों को क्षमा करने की प्रार्थना

“स्वर्ग में विराजमान प्यारे पिता, कृपया जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया है उन्हें अपने हृदय से क्षमा करने के लिए मेरी सहायता करें।

“मैं (जिस व्यक्ति को क्षमा कर रहे हो उसका नाम) जिसने मेरे विरुद्ध बुरी बातें (उन खास बातों को जिनके लिए क्षमा कर रहे हो जैसे, यौन उत्पीड़न, उपेक्षा, दोषारोपण इत्यादि) को क्षमा करने का निर्णय लेता हूँ। मैं (व्यक्ति का नाम) अपने कर्ज से मुक्त करता हूँ जिसका वह हकदार था, यहाँ तक कि उसके क्षमा माँगने के कर्ज से भी।

“पिता परमेश्वर, मैं अंगीकार करता हूँ कि मैंने उनके पापों के लिए पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं द्वारा पाप किया *(विशेष रूप से, अपनी पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं का अंगीकार करें जैसे गुस्सा, आक्रोश, निंदा)* मैं इन पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं को रोकना चाहता हूँ, कृपया मुझे बदले। कृपया मुझे अभी इन पापों के परिणाम से स्वतंत्र कर दीजिए। मुझे नया बना दीजिए। प्रभु यीशु, कृपया मेरे हृदय में फिर से आ जाइए और मुझे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर दीजिए। धन्यवाद।

“अब मैंने उन्हें क्षमा कर दिया है, और उन्हें आशीष देने के लिए चुनता हूँ *(जिन्हें आप आशीष दे रहे हो उसका नाम ले)* । पिता मेरी प्रार्थना है कि आप उन्हें भी आशीष दीजिए। यीशु’ के नाम में। आमीन।”

अपने शब्दों में लगातार प्रार्थना करते रहें, जब तक कि आप उन सभी लोगों को जिनके बारे अभी आप सोच रहे हो, क्षमा न कर दे जिन्होंने आपको कष्ट पहुँचाया था।

स्वयं को क्षमा करें

यह हो सकता है कि हमें उन चीजों के लिए जो हमने अतीत में की हो और उसके लिए शर्मिंदा हो तो हमें स्वयं को क्षमा करने की आवश्यकता है। हम में से कुछ ने तो बहुत ही भयानक बातें की है जिसमें लोगों को पीड़ा पहुँचाना भी शामिल था। विशिष्ट रूप से मन फिराव करने से पहले हमें अपने आप को क्षमा करना सीखना है जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है। शायद हो सकता है, हम ऐसी परिस्थितियों के लिए स्वयं दोषी ठहराते होंगे जहाँ पर हमारे द्वारा परमेश्वर का अपमान हुआ हो, और हमें इससे कष्ट पहुँचा हो या मूर्ख दिखे हो।

आप पवित्र आत्मा को आमंत्रित कर सकते है ताकि वह आपको दिखाए कि किन बातों के लिए स्वयं को क्षमा करने की आवश्यकता है। [जब आप यह सब सोच रहे हो तो शांत होकर बैठे]।

जब आप तैयार हो, ऊँचे स्वर में, इस प्रकार से प्रार्थना कर सकते है।

स्वयं को क्षमा करने के लिए प्रार्थना

“स्वर्ग में विराजमान प्यारे पिता, धन्यवाद की आपने मुझे क्षमा किया। मुझे सहायता करें कि अपने बुरे कामों .... *(उन विशिष्ट चीजों को बताइए जिनके लिए आप स्वयं को क्षमा कर रहे है)* के लिए स्वयं को क्षमा कर सकूँ । मैं स्वयं को क्षमा करता हूँ। मैं स्वयं को और अधिक दोषी नही ठहराने का निर्णय लेता हूँ। मैं बदलना चाहता हूँ, कृपया मुझे बदले। मैं स्वयं को आशीषित होने के लिए चुनता हूँ। कृपया मुझे भी आशीष दे। धन्यवाद। यीशु’ के नाम में। आमीन।”

वर्तमान समय में परमेश्वर की दिखाई बातों के लिए अपने शब्दों में लगातार प्रार्थना करते रहें।

हम कब परमेश्वर पर दोष लगाते है

"मूढ़ता के कारण मनुष्य का मार्ग टेढ़ा होता है, और वह मन ही मन यहोवा से चिढ़ने लगता है।" ***(नीतिवचन 19:3)***

"जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है क्योंकि न बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी की परीक्षा आप करता हैं परंतु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता हैं, फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और जब पाप बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता हैं।" ***(याकूब 1:13-15)***

जब कभी हमारे साथ कुछ बुरी चीजें होती है, तो हम परमेश्वर पर इसका दोष लगा देते है। परमेश्वर **कभी भी** बुरा नही करता है और **न ही** हमारे पापों के लिए जिम्मेदार है। परमेश्वर भला है, उसकी करुणा सदा की है ***(याकूब 1:17)***। उदाहरण के लिए, जब हमारे साथ, सबन्धी या मित्र के साथ कुछ ऐसी बुरी बातें हो जाए जो कि हमारे अनुकूल न हो, तब शायद हम परमेश्वर से क्रोधित हो जाते है । उस स्थिति में, हमें परमेश्वर को अपने दोष से स्वतंत्र करना है और उस पर दोष लगाने के लिए क्षमा याचना करनी है।

आप पवित्र आत्मा को आमंत्रित कर सकते है ताकि वह आपको दिखाए कि किन बातों के लिए आपने परमेश्वर को दोषी ठहराया। [जब आप यह सब सोच रहे हो तो शांत होकर बैठे]।

जब आप तैयार हो, ऊँचे स्वर में, इस प्रकार से प्रार्थना कर सकते है।

परमेश्वर पर दोष लगाने पर मन फिराव कि प्रार्थना

"प्रभु परमेश्वर, मैंने अपने जीवन में घटी बुरी बातों व परिस्थितियों के कारण आपके ऊपर गलत दोष लगाए... ***(उन खास स्थितियों में जहाँ पर आपने परमेश्वर पर दोष लगाया है परमेश्वर को बतायें)***। पिता, मुझे क्षमा करें। मैं आप पर आगे से दोष नहीं लगाऊंगा। मैं जानता हूँ कि आप हमारे लिए बेहतर करते हो। कृपया मुझे बदले, और मुझे फिर से नया कर दीजिए। धन्यवाद। यीशु' के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।"

अपने शब्दों में लगातार प्रार्थना करते रहें, जब तक कि आप उन सभी बातों के लिए जिन्हें आप देख रहे थे, उनके लिए प्रार्थना कर ले।

गहन मन फिराव व क्षमाशीलता

ऐसे बहुत से तरीके है जिनके कारण हम पाप में गिर जाते है। उसमें से एक है अज्ञानता ***(होशे 4:6)***। इसलिए हमें प्रतिदिन बाईबल पढ़ना और इसे अपने जीवन में लागू करना महत्वपूर्ण है। इस निर्देशपुस्तिका के अंत में मन फिराव के विषय की सूचियाँ दी गयी है। आगे आने वाले पांच भागों में हम हमारे जीवन के कुछ सामान्य बंधनों की जांच करेंगे जिन्हें केवल मन फिराव और क्षमा के द्वारा ही हटाया जा सकता है। हमें प्रार्थना पूर्वक यह जानने की आवश्यकता है कि यह बंधन हमारे स्वयं के जीवनों को प्रभावित कर रहे है। शायद यह हमें जयवन्त मसीही जीवन जीने के लिए भी बाधा उत्पन्न कर रहे हो।

गवाही

यीशु ने मुझे अच्छी सहेली बनने में सहायता की

"मेरी सबसे अच्छी सहेली के साथ मेरा नजदीकी रिश्ता था और हमने बहुत सा समय एक साथ बिताया था। मैं उसके साथ अधिक समय बिताना चाहती थी इसलिए बार-बार घर से बाहर आने के लिए बुलाती रहती थी। वह हमेशा यही बोलती थी कि तुम मेरी स्थिति को नहीं समझती हो और घर से बाहर आना उसके लिए बड़ा ही मुश्किल था और वह बाहर निकल ही नहीं सकती थी। जब मैंने अधर्मी बंधन *के विषय में शिक्षा प्राप्त की तो मुझे पता चला कि मैं अपनी सहेली को नियंत्रित और अपनी बात मनवाने में लगी हुई हूँ। मैंने उसको यीशु के सामने रखा। अपने पापों से* मन फिराव *किया, उस* अधर्मी बंधन *को तोड़ा और यीशु ने हम दोनों को स्वतंत्र किया। अब हम दोनों* अधर्मी बंधन *से स्वतंत्र होकर अच्छी सहेलियाँ है।"*

गवाही

बैडमिंटन मेरे लिए मूर्ति था

"मैं खेलकूद का बहुत शौकीन था। मैं सप्ताह के 6 दिन हर शाम और छुट्टी के पूरे दिन भर बैडमिंटन खेलता था। मैंने हमेशा कलीसिया की उपेक्षा की और मुश्किल से प्रार्थना और बाईबल पढ़ने के लिए समय दिया। मैं पानि का बपतिस्मा लेना चाहता था और जब मैंने इसके बारे में अपने पासवान से बात की तो उन्होंने मुझे बपतिस्मा देने से मना कर किया। उन्होंने बताया कि जब तक मैं अपने जीवन में यीशु को प्रथम स्थान नहीं देता हूँ तब तक वह मुझे बपतिस्मा नही दे सकते है। बाद में मुझे समझ आई कि बैडमिंटन मेरा ईश्वर और मूर्ति बन गई है। मैंने मन फिराव किया और बैडमिंटन के समय को कम किया और यीशु को मेरे जीवन में प्राथमिकता दी।"

अधर्मी बंधन से छुटकारा

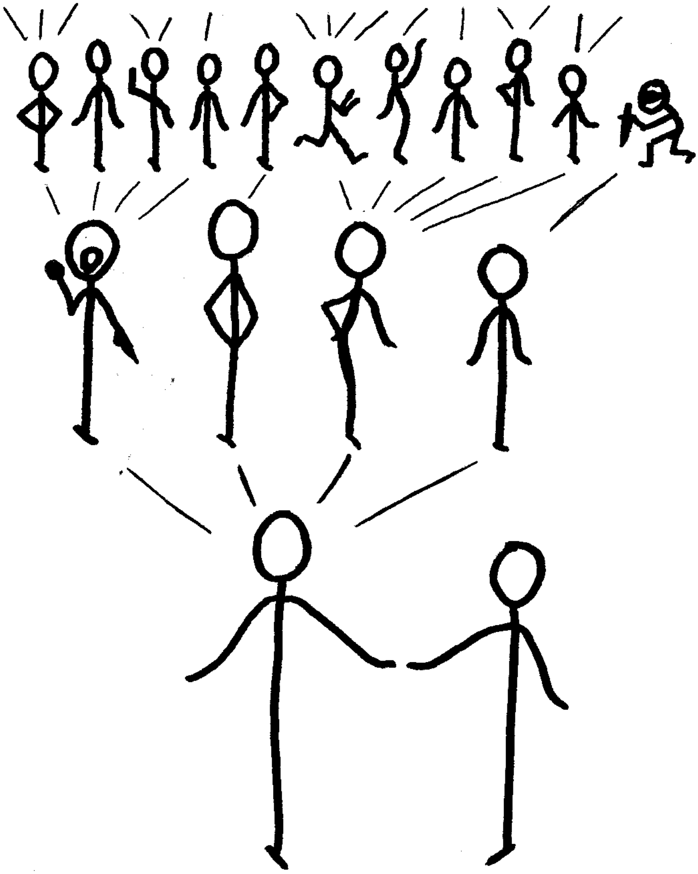

"और वे एक ही तन बने रहेंगे" ***(उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5)।***

जब दो व्यक्ति एक दूसरे के साथ सामाजिक या आध्यात्मिक संबंध में एक दूसरे से जुड़े हुए होते है, तो उनके शरीर, आत्मा व प्राण एक अदृश्य जूए द्वारा एक बंधन का निर्माण करते है जो उन्हें आपस में जोड़कर रखता है। ***(1 शमु 18:1, 3; 1 थिस्स 5:23)***। ये बंधन और भी मजबूत हो जाते है क्योंकि हमारा दिमाग उस व्यक्ति, स्थिति या हमारी मुश्किल परिस्थिति की 'छाप' को कैद कर लेता है जो हमें इन यादों को लंबे समय तक यहाँ तक की, जीवन भर संजोने में सहायता करता है।

यह यादें हमारे अच्छे के लिए बनाई गई है और यह हमें एक ईश्वरीय संबंध में बांधे रहती है जिसमें कि प्रेम भरा एकाकी विवाह भी शामिल है। हालाँकि, जब हम पापमय और गलत संबंध में होते है, जैसे कि प्रेम प्रसंग और विवाह के बाहर शारीरिक संबंध या यौन काल्पनिक परिस्थितियाँ, यह सब अधर्मी बंधन जूए हमारे शत्रु के द्वारा बनाए गए अधार्मिक तरीके है जो हमें अधार्मिक रीति की ओर ले जाते है **(मत्ती *5:27-28, 2* पतरस *2:18-19*, यहूदा *8*)।**

उसी तरह से, जहाँ डर, हेरफेर या रिश्तों पर अधर्म युक्त नियन्त्रण रहता है वहाँ पर अधर्मी बंधन का निर्माण होता है। शैतान इन अधर्मी बंधन को हमें अधर्म के रास्ते पर ले जाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है; वह इसका इस्तेमाल लोगों को दुःख देने और उन पर नियंत्रण रखने के लिए करता है। प्रायः इस प्रकार के असमान संबंध को हम परिवारों के साथ ही साथ दूसरे व्यक्तियों में भी देख सकते है।

रिश्ते के खत्म होने पर, या फिर उस दूसरे व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर भी, यह अधर्मी आध्यात्मिक संबंध बरकरार रहते हैं।

गवाही

परमेश्वर ने मुझे असमान नियन्त्रण से मुक्त किया

"मेरा पालन पोषण एक ऐसे घर में हुआ जहाँ मेरी माँ ने हमारा अच्छे से पालन पोषण किया। कुछ वर्षों पहले मैंने अपने घर छोड़ने का निर्णय लिया और काम के सिलसिले में दूसरी जगह रहने का मन बनाया। मेरी माँ मेरे इस निर्णय के खिलाफ थी और उसने बहुत से अलग-अलग तरीके अपनाए कि मेरा मन बदल सके। मैंने अनुभव किया कि वह मुझे हेरफेर द्वारा नियंत्रित करना चाहती थी। वह मुझे अपनी इच्छानुसार निर्णय लेने के बजाय अपनी इच्छा मुझ पर थोप रही थी। इस निराशा की स्थिति में, उसने कहा कि यदि मैं गया तो वह अपने आप को मार देगी। बाद में मुझे पता चला कि उसका यह असमान नियन्त्रण उस के ऊपर किए गए जादू-टोने का प्रभाव था। मैं उसे क्षमा कर पाया, अधर्मी बंधन को तोड़ा और फिर मैंने अलग सा महसूस किया जैसे यीशु ने मुझे स्वतंत्र कर दिया था।"

"दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मों से फँसेगा, और अपने ही पाप के बन्धनों में बँधा रहेगा" ***(नीतिवचन 5:22)।***

प्रेम प्रसंग, पोर्नोग्राफी और यौन पाप या जिन्होंने हमें कष्ट पहुँचाया हो, डराया हो या नियंत्रित किया हो इन सब से मन फिराव करने के बाद हम उस व्यक्ति(यों) और हमारे बीच के उस असमान आध्यात्मिक, भावनात्मक (प्राण) और भौतिक (शरीर) जूए को यीशु' के नाम के अधिकार से तोड़ सकते हैं। हम परमेश्वर से कह सकते है कि हमें दूसरों से अलग कर दीजिए, खासकर जो पाप हमें एक साथ बांधते है, उनके बुरे प्रभाव से, और उसमें जो यादें जुड़ी है। यह व्यक्तिगत रूप से और व्यवस्थित रूप से होना चाहिए। कुछ लोग तब स्वतंत्रता का अनुभव करते है जब उनके अधर्मी बंधन टूटते है और भावनाओं का मार्मिक स्पर्श होता है।

"यहोवा धर्मी है; उसने दुष्टों के फन्दों को काट डाला है" ***(भजन संहिता*** **129*:*4)** ।

"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और प्राण और आत्मा को, और गांठ-गांठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता हैं" ***(इब्रानियों 4:12)*** *।*

परिवार के सदस्यों के साथ और दूसरे प्रिय लोगों के साथ अधर्मी बंधन को तोड़ने का यह अर्थ यह नही है कि हम उन्हें प्रेम करना और उनके लिए प्रार्थना करना बंद कर देते है। इसका अर्थ यह है कि शत्रु की शक्ति इन अधर्मी बंधन को जो हमें अंधकार में खिंचना चाहती है, वह टूट चुकी हैं।

निर्गमन *20:3-6* में बाईबल बताती है कि हमें किसी दूसरे ईश्वर को मानने, परमेश्वर को छोड़ किसी (मूर्ति) की आराधना करने की मनाही है। इसके भयानक परिणामों का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया गया हैं। साथ ही, पवित्रशास्त्र भी मूर्ति पूजा का (आत्मिक) व्यभिचार के रूप में उल्लेख करता हैं। जैसे इस्राएल ने बहुत सारे विदेशी ईश्वरों, या मूर्तियों की आराधना की, इस्राएल को अकसर एक *'वेश्या'* के रूप में प्रस्तुत करता है ***(यिर्मयाह*** **3; *होशे* 1:2 *और अध्याय 2)***।

यदि हम एक वेश्या के साथ शारीरिक संबंध बनाते है, इसका अर्थ यह हुआ कि हम उसके साथ 'एक तन' हो गये हैं। यह हमारी देह का अनादर हुआ, जिसे बाईबल *"पवित्र आत्मा का मन्दिर"* कहता है **(*1 कुरिन्थियों 6:13-20)***। अतः इसी प्रकार से अधर्मी बंधन का निर्माण होता है जब हम एक वेश्या के साथ यौन संबंध बनाते है, और तब अधर्मी बंधन का निर्माण होता है जब हम किसी वस्तु से बनी मूर्ति की आराधना करते है ***(इफिसियों 5:5; 1 यूहन्ना 5:21)***।

मूर्तिपूजा को इस तरह से दर्शाया जा सकता है जैसे यीशु[4] के माध्यम से, परमेश्वर की सच्ची आराधना से दूर होकर, किसी व्यक्ति या चीज़ के प्रति आत्मसमर्पण कर देना। यह भौतिक वस्तुएँ (संपत्ति, शराब; लोग (यहाँ तक कि परिवार के सदस्य, पासवान या शिक्षक), संसाधन (जैसे धन, पद), गतिविधियाँ (जिसमें काम, शिक्षा, खेल, आराम शामिल है)) हो सकती है और इसकी भागीदारी ऐसे किसी 'अंधेरे के राज्य' के साथ हो सकती है जिसमें बाईबल के विरूद्ध आध्यात्मिक चंगाई और शारीरिक खेल भी शामिल हो।

आप सबसे अधिक किसके बारे में सोचते हो? यदि वह यीशु नही है तो, यह एक मूर्ति हो सकती हैं!

उपरोक्त अधर्मी बंधन की शिक्षा से यह स्पष्ट है कि जब हम किसी भी प्रकार की मूर्तिपूजा में संलग्न होते है तो यह एक अधर्मी बंधन का निर्माण करती है। हमारे जीवन की हर एक मूर्ति के पीछे एक शैतानी शक्ति रहती है ***(1 कुरिन्थियों 10:20-21)***। अधर्मी बंधन के द्वारा, किसी व्यक्ति तक शैतानी शक्तियों की पहुँच रहती है और उनके जीवन पर हानिकारक प्रभाव डालती है। यदि हम अंधकार के राज्य से संबंधित किसी भी बात में शामिल है, तो हमें मन फिराव करना चाहिए और परमेश्वर से क्षमा मांगनी चाहिए। फिर, यीशु के नाम पर हम उन चीज़ों और उनके पीछे की बुरी आत्माओं के साथ अधर्मी बंधन को तोड़ सकते हैं और परमेश्वर से यीशु के लहू द्वारा उसके सभी प्रभावों को साफ करने की याचना कर सकते है।

प्रार्थना मार्गदर्शिका यदि आप किसी अधर्मी बंधन में बंधे हैं:

- उन्हें क्षमा करें जिन्होंने आपके विरूद्ध पाप किया हो (विशिष्ट रुप से)।
- अपने पाप व पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं का अंगीकार करें व मन फिराव करें (विशिष्ट रुप से)।
- यीशु के नाम से अधर्मी बंधन को तोड़ दे, और परमेश्वर से कहे कि वह आपको दूसरे व्यक्ति (यों) और चीजों से पूरी तरह से अलग करें और बुराई से छुटकारा दे।
- परमेश्वर से याचना करें कि वह आपको यीशु के लहू से धोकर शुद्ध करें और आपको बदल दे।
- उस व्यक्ति को आशीष दे।
- यीशु को अपने जीवन में (फिर से) आमंत्रित करें ताकि आपको पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर दे।

[4] डेविड क्रॉस, सोल टाइज़ (2006), सॉवरेन वर्ल्ड लिमिटेड।

इस प्रकार की प्रार्थना को एक व्यक्ति को हृदय सहित ऊँचे शब्दों से करना चाहिए।

अधर्मी बंधन को तोड़ने के लिए प्रार्थना

"स्वर्ग में विराजमान प्यारे पिता, मैं उन लोगों और/या चीजों के साथ मेरी भागीदारी के बारे में मन फिराव करता हूँ जिनसे मेरे और उनके बीच एक अधर्मी बंधन का निर्माण हुआ है *(विशिष्ट लोगों और/चीजों के नाम...)* कृपया मुझे क्षमा करें। मैं *(व्यक्ति का नाम ले)* को उन बुरी बातों *(उन विशिष्ट बातों को बोले जिनके लिए आप उन्हें क्षमा कर रहे है...)* के लिए क्षमा करता हूँ। मैं उनको *(व्यक्ति का नाम)* अपने कर्ज से मुक्त करता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ, कि मैंने उनके विरुद्ध पापपूर्ण प्रतिक्रिया द्वारा पाप किया हैं *(विशेष रूप से अपने पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं को स्वीकार करें)*। मैं इस विषय में मन फिराव करता हूँ और क्षमा याचना करता हूँ।

"मैं अपने और... *(व्यक्ति का नाम और/या बात)* के बीच हर अधर्मी बंधन को यीशु के नाम के अधिकार में तोड़ देता हूँ। पिता, कृपया मुझे स्वतन्त्र कीजिए और यीशु के लहू से इसके प्रभावों को धो दीजिए तथा मुझे बचाये। मैं इसमें शामिल लोगों को *(व्यक्तियों का नाम)* आशीष देता हूँ। कृपया मेरे हृदय में आइए और मुझे पवित्र आत्मा से पूरी तरह भर दीजिए। मुझे बदले और पवित्र बनाइए। आमीन।"

गवाही

यीशु ने युवती को उसके रिश्तों के बारे में चेताया

"हमसे बाईबल अध्ययन करने वाली दो युवतियों ने पूछा, "क्या हमारे लिए प्रेमी रखना उचित है" जब हमने उनके साथ प्रार्थना की, उनमें से एक ने यीशु को पूरी महिमा के साथ अपने ऊपर मुस्कराते हुए दर्शन देखा। दूसरी ने श्रेष्ठगीत 2:7 से वचन सुना, "युवतियों प्रेम को मत जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ।" तब दोनों युवतियाँ अपने प्रेम प्रसंगों से मन फिराव करने के लिए उत्सुक थी और तब उन्होंने अपने व अपने प्रेमियों के बीच अधर्मी बंधन को तोड़ने की प्रार्थना की।"

गवाही

यीशु ने मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया

"मुझे जयवन्त मसीही जीवन की पुस्तक की सामग्री इन्टरनेंट से मिली थी। मैंने इसका प्रिन्ट करवाया और इसके कुछ भागों को पढ़ा - कि यह कितना प्रभावशाली है। मैंने 'अधर्मी बंधन' के भाग के अनुसार प्रार्थना की और इसके तत्काल परिणामों को देख पा रहा हूँ।"

निंदा के फैसले से छुटकारा [5]

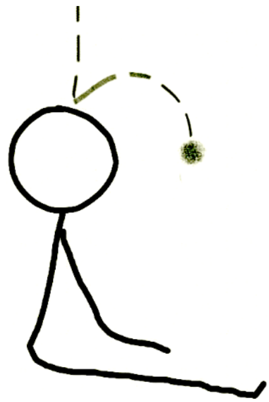

*"... ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ।" **(इब्रानियों 12:14-15)***

परमेश्वर ने पूरे ब्रह्मांड को रचा और सही तरीके से सजाया (उत्पति 1:3) उसने भौतिकी का गुरुत्वाकर्षण के नियम भी बनाए जिससे इस ब्रह्मांड को स्थिर किया जा सकें। बाईबल इस ब्रह्मांड के आत्मिक नियमों को बताती है ताकि हम ईश्वरीय जीवन जी सके। गुरुत्वाकर्षण के नियम की तरह ही आत्मिक नियम भी हमेशा काम करते है और नही बदलते है। वह काम करते है चाहे हम इन्हें जाने या न जाने। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि यह किस तरह से यह आत्मिक नियम हमारे जीवनों को कैसे प्रभावित कर सकते है। यह चार नियम इस प्रकार से है :-

1. अपने माता पिता का सम्मान करें

*"तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए।" **(निर्गमन 20:12; व्यवस्था 5:16; इफिसियों 6:2-3)***

यह नियम निर्धारित करता है कि हमारे जीवन के जिन क्षेत्रों में हम अपने माता पिता का सम्मान करते है, उनमें हमारा जीवन अच्छा व परिपूर्ण होगा। हालांकि, हमारे जीवन के जिन क्षेत्रों में हम अपने माता-पिता का अनादर किया होगा, उनमें हमारे लिए कुछ अच्छा नहीं होगा।

2. जो बोओगे वही काटोगे

*"धोखा न खाओ - परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा" [या "आप जो बोओगे वही काटोगे।"] **(गलातियों 6:7)**।*

यह नियम निर्धारित करता है कि जिस वस्तु को हम देते है, हम उसी तरह की वस्तु को प्राप्त करते है। यदि हम अच्छी चीजें देते है, तो हमें भी वापसी में अच्छी चीजें ही मिलेंगी; यदि हम बुरी चीजें देते है, तो हमें भी बुरी चीजें ही वापस मिलेगी।

---

[5] जॉन और पाउला सैंडफोर्ड, 'बिटर रूट जजमेंट एंड एक्सपेक्टेंसी' (शिक्षण सामग्री), एलिजा हाउस, यूएसए: www.elijahhouse.org YouTube पर भी उपलब्ध।

*"इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" **(मत्ती 6:14-15)***

*"इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।" **(मत्ती 7:12)***

*"जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा।" **(ओबद्याह 15)***

यह उस सार्वभौमिक कानून के पहलू हैं जो हम 'बोते हैं उसे ही काटते हैं'।

3. दोष मत लगाओ

*"दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।" **(मत्ती 7:1-2)***

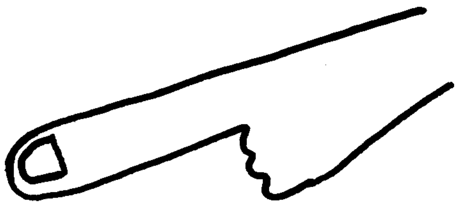

*"अतः हे दोष लगाने वाले, तू कोई क्यों न हो, तू निरुत्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिये कि तू जो दोष लगाता है स्वयं ही वह काम करता है।" **(रोमियों 2:1)***

यह नियम परिभाषित करता है कि हम वही काम करेंगे जो हम दूसरों को करने के लिए निंदा करते हैं या उनका न्याय करते है। हमें लोगों का न्याय नहीं करना चाहिए (जैसे कि वे सब पापी है) परन्तु हम उनके व्यवहार व कार्यों का न्याय कर सकते है (जैसे कि जो कार्य उन्होंने किया वह पाप पूर्ण था)।

*'यीशु ने उनसे जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा: "दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था '... अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेने वाले के समान हूँ... ।'"' **(लूका 18:9-14)***

4. बढ़ना

*"दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा। लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।" **(लूका 6:38)***

यह नियम परिभाषित करता है कि हम वही चीज़े प्राप्त करते है जो हम बहुतायत से देते हैं। यदि हम अच्छी चीज़े आगे देते है तो हम भी उससे बढ़कर अच्छी वस्तुएं प्राप्त करेंगे; यदि हम बुरी चीजें आगे देते है, तो हम भी उससे ज्यादा बुरी चीजें प्राप्त करेंगे। यह नियम प्रायः धन पर लागू होता है, इसके अलावा भी सभी जगह भी लागू हो जाता है। उदाहरण के तौर पर गुस्सा, कड़वाहट, आदर व निरादर, विश्वासयोग्यता और अविश्वास के रूप में भी हो सकता है।

यह चार नियम एक साथ काम करते है:

यह चार नियम एक साथ काम करते हैं और इतने मजबूत है कि वे हमारे आस पास के अन्य लोगों के व्यवहार को भी प्रभावित कर सकते है। जिससे वे उन तरीकों से कार्य करने लग जाते हैं जो उनके अपने व्यवहार से भी मेल नहीं खाते है। हमारे अतीत में हमारे विरुद्ध किए गए पापों के प्रति हमारी प्रतिक्रियाएँ (जैसे कि हमारी कड़वाहट और दूसरों के प्रति नाराजगी) हमारे आस-पास के लोगों को अपवित्र करती हैं, जिससे वे हमारे प्रति हानिकारक तरीकों से प्रतिक्रिया करते हैं। यह तरीका उस व्यक्ति के लिए अस्वाभाविक हो सकता है परन्तु हमारे लिए स्वाभाविक (हमारे आसपास के लोगों के बीच से हानिकारक व्यवहार को बाहर निकालना) ***(इब्रानियों 12:14-15)।***

हम बहुत समय पहले अन्य लोगों के खिलाफ किए गए दण्डित करने वाले न्याय को भूल गये होंगे, परंतु उनका 'बुरा फल' हमारे जीवन में हो सकता हैं। विशेषकर अपने माता-पिता के प्रति प्रायः **बचपन** में ही हम दण्डित करने वाले न्याय को करते है। शायद हम इसके बारे में भूल गये होंगे परन्तु हम इसके परिणामों को बड़े होने पर भोगते है।

गवाही

यीशु ने मेरे भाई को बदल दिया जब मैंने मन फिराव किया

"मेरा भाई शराब के नशे का आदी हो गया था। मैं हमेशा यह कहता था, 'मेरा भाई एक शराबी है'। बाद में मैंने अपने दोषारोपण करने वाले व्यवहार से मन फिराव *किया और कहा 'मेरा भाई इन सब चीजों से बाहर आ जायेगा'। कुछ महीनों में ही मेरे भाई ने शराब पीना छोड़ दिया।"*

अपने माता-पिता के दोषों की खोज और बाद में उनकी निंदा किया जाना, यह न्याय विशेष रूप से हमारे लिए हानिकारक हैं। यदि हमने अपने ही पिता के विरुद्ध निंदात्मक निर्णय देकर उनका

अपमान किया है, तो हमें अन्य पुरुषों और हमारे ऊपर अधिकार रखने वाले लोगों के साथ हमारे संबंधों में समान समस्याएं हो सकती हैं - **अधिक मात्रा में**।

उसी प्रकार यदि हम अपनी माता का अनादर करते है तो यही समान बाते घटित होती है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति की माँ उस बहुत नियंत्रण रखती थी और जब वह बड़ा हुआ तो वह अपनी माँ से नाराज हो गया और अपने हृदय में उसके प्रति एक न्याय कर लिया। जैसे कि 'वह खतरनाक है और मुझे कुछ भी नहीं करने देती जो मुझे पसन्द है'। वयस्क होने पर उसे पता चला होगा कि उनकी पत्नी और महिला सहयोगी भी उस पर नियंत्रण रख रहे है। जो दोष उसने अपनी माँ के खिलाफ लगाए उसने उसके आस पास की अन्य महिलाओं को अशुद्ध कर दिया, जिसके कारण एक बड़े पैमाने पर उन सब को भी उसकी माँ के जैसा व्यवहार करना पड़ा।

जब हम अपने जीवन में बुरे फलों को बार-बार देखते है, या कुछ ठीक होता हुआ नहीं देखते है, इसका एक कारण यह है कि हम ने किसी का उसी बुरे कार्य के लिए न्याय किया होगा। हम पवित्र आत्मा को उस दण्डित करने वाले न्याय को प्रकट करने के लिए बुला सकते है, ताकि हम इसके बुरे प्रभावों से छूट सकें।

गवाही

यीशु, अपने पिता पर दोष लगाने वाली उस पत्नी को क्षमा कर देते है और उसके पति को भी स्वतंत्र कर देते है

"हम एक ऐसी युवती से मिले जिसके पिता की मृत्यु तब हो गई थी जब वह केवल पांच वर्ष की थी। उसके पिता एक शराबी थे; वह बहुत पीते थे, गली में पड़े मिलते थे और उन्हें उठा कर घर लाना पड़ता था। एक रात जब वह पीकर घर वापस आ रहे थे, वह गली में गिर गया और एक खड्डें में डूब गया। बाद में उस युवती की शादी एक अच्छे नौकरी पेशा व्यक्ति से हुई। उनके बच्चे हुए और तीन वर्ष के पश्चात उसका पति एक शराबी बन गया; वह शराब पीता था, गली में पड़ा रहता था और उसे उठाकर घर लाना पड़ता था। हमने उससे पूछा, "क्या आपने अपने पिता के शराबी होने का न्याय किया था?" 'ओह हाँ, उसने कहाँ, मैं उन्हें बेकार समझती थी और निर्णय लिया था कि इस जैसे व्यक्ति से कभी भी शादी नहीं करूँगी।' फिर उसने अपने पिता का न्याय करने के लिए मन फिराव किया, अपने निर्णय की उद्घोषणा की और परमेश्वर से क्षमा माँगी। उस रात भी उसके पति ने इतनी पी हुई थी कि उसे उठा कर घर लाना पड़ा पर उसने कुछ भी नहीं कहा। अगले ही दिन वह अपने पीने की आदत पर दोषी महसूस कर रहा था और उससे व परमेश्वर से क्षमा माँगी।"

एक बार जब हम इसके बार-बार होने के कारण जान जाते है तो हमें अपने दण्डित करने वाले न्याय का अंगीकार व पश्चाताप करना चाहिए, और परमेश्वर से अपनी शुद्धता तथा दूसरों की अशुद्धता को जो हमारे न्याय के कारण आई है, पवित्रता की याचना करें। हम उस व्यक्ति या व्यक्तियों को क्षमा कर सकते है और किसी कड़वाहट या अनादर के लिए पश्चाताप कर सकते हैं।

परमेश्वर हमारे द्वारा दूसरों में ईश्वर विरोधी व्यवहार नहीं देखना चाहते है; वह चाहता है कि हम प्रत्येक व्यक्ति को जैसे वह है वैसे ही आदर दें। उदाहरण के लिए, यदि हमारे माता-पिता हमारे साथ बुरा बर्ताव करते है और अनादर करते है, हम उनको क्षमा कर सकते है और आदर दे सकते है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें हमें जन्म देने के लिए उपयोग में लाया था। हम अपने विश्वासी साथियों का आदर कर सकते है क्योंकि प्रत्येक नया जन्म पाए हुए विश्वासी में यीशु वास करता है तथा सभी व्यक्ति परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।

प्रायः जब हम दण्डित करने वाला न्याय करते है, हम एक शपथ भी खाते है जो उस दण्ड की आज्ञा के निर्णय को मजबूत करती है। यह एक उदाहरण हो सकता है 'मेरे पिता ने मुझे मारा (**तथ्य है**); वह एक कठोर और बुरा आदमी है (**दण्डित करने वाला न्याय**)।; जब मैं बड़ा हो जाऊंगा मैं कभी भी अपने बच्चों को नही मारूँगा (**शपथ**)।' बड़ा होने और अपने बच्चे होने पर, वह पाते है कि वह स्वयं को अपने बच्चों को मारने से रोकने में असमर्थ हैं। जो दण्डित करने वाला न्याय हम ने अपने पिता के खिलाफ किया था वही उसे चला रहा है और वही चीज़ जिसके लिए उसने अपने पिता पर दोष लगाया था और कभी न करने की शपथ खाई थी, उसे वह भी करवा रहा है।

शपथ के नकारात्मक नतीजे है, वे हमारे विकल्पों को सीमित करते है और विनाशकारी हो सकते है ***(न्यायियों 11:29-35; मत्ती 14:9)।***

जब हम यह कहते है कि '**मैं** यह कभी नहीं करूँगा', हम बहुत जल्दी देखते है कि हम वही कर रहे होते है जो हमने कहा था कि नहीं करेंगे। जब हम पर ध्यान देते है, तो हम पाते है कि हमारी शपथ (**मैं** यह कभी नही करूँगा) दण्डित करने वाले न्याय पर आधारित थी (**मैं,** उस व्यक्ति से बेहतर हूँ जिसने यह कार्य किया है)। पतरस का यीशु के बारे में इन्कार इसका एक उदाहरण है ***(मरकुस 14:29-31 व मरकुस 14:66-72)***। प्रायः वह और दूसरे शिष्य आपस में तुलना करते रहते थे कि उन सब में महान कौन हैं ***(लूका 9:46, 22:24)***। हम सब अलग है फिर भी परमेश्वर की आँखों में हम सब

प्रार्थना मार्गदर्शिका यदि आपने किसी का दण्डित करने वाला न्याय किया है:

- जिस तरीके से उनका अनादर/न्याय किया है उससे मन फिराव करें।
- यीशु के नाम से सभी न्याय की उद्घोषणा करें।
- इसके सभी नकारात्मक प्रभावों के खत्म होने की याचना करें।
- प्रतिक्रिया स्वरूप ली गई शपथ को हटाए और तोड़े।
- परमेश्वर से उस व्यक्ति व अपने को आशीषित करने के लिए कहे।
- यीशु को अपने जीवन में (फिर से) आमंत्रित करें ताकि आपको पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर दे।

एक समान बहुमूल्य है। हमें न्याय न करने को कहा गया हैं। हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करने को कहा गया है जितना कि हम अपने आप से करते हैं। बाईबल हमें पक्षपात न करने को कहती है; परमेश्वर हमें प्रत्येक को समान रुप से आदर देने को कहता है जिस प्रकार वह भी करता है ***(याकूब 2:1-9)***। यीशु कहते है, *"शपथ मत खाओ"* ***(मत्ती 5:33-34)***।

दण्डित करने वाला न्याय और शपथ बहुत ही प्रायः होने वाले पाप है जिनका पता भी नहीं चलता कि हमने यह किया है। हम सोचते है कि दण्डित करने वाला न्याय ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है बस छोटी सी बात है: परन्तु इसका आत्मिक प्रभाव बहुत ही ज्यादा है जिसके बुरे परिणाम हमारे जीवनों में दिख जाते है। हम दण्डित करने वाले न्याय और शपथ से पश्चाताप कर सकते है (अच्छे से उत्तम से बुरे), बोले और इन्हें काट दें तथा परमेश्वर से इसके प्रभावों को रोकने के लिए कहें।

अभी पवित्र आत्मा के साथ थोड़ा समय बिताएं और पुछे कि आपने कौन से दण्डित करने वाला न्याय और शपथ ली थी, उसे उजागर करें।

यह प्रार्थना मार्गदर्शिका के रूप में ऊँचे शब्दों से करनी चाहिए।

दण्डित करने वाले न्याय को तोड़ने की प्रार्थना

"हे स्वर्ग में विराजमान पिता, मैं अंगीकार करता हूँ कि मैंने लोगों ***(व्यक्ति का नाम)*** के खिलाफ दोषों को खोजने और उनके खिलाफ दण्डित करने वाला न्याय करके गलत किया है। मैं विशिष्ट रूप से जो मैंने ...***(अब अपने विशिष्ट निर्णयों या दोषारोपण को परमेश्वर के सामने अंगीकार करें। ईमानदार बने, जैसे आप उससे हर एक चीज़ को विस्तार से बताते है)***। मैं इसे पाप मानता हूँ और इससे मन फिराव करता हूँ। मैं इस पाप से दूर होकर आपकी ओर फिरता हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें।

"यीशु के नाम के अधिकार में, मैं इस न्याय को ***(व्यक्ति का नाम)*** और शपथ ***(व्यक्ति का नाम)*** जो मैंने ली थी, तोड़ता हूँ। अब से कृपया मुझे और दूसरों को जो मेरे दण्डित करने वाले न्याय और शपथ के परिणामों से प्रभावित है, इसके दुष्प्रभावों से बचाए। स्वर्ग में विराजमान पिता, कृपया मुझे क्षमा करें। कृपया मुझे यीशु के लहू से पवित्र कीजिए और मुझे बुराई से बचाइए। प्रभु यीशु, कृपया मेरे हृदय में आइए और मुझे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करें। मुझे बदले और पवित्र बनाएं।

"मैं आशीष देता हूँ ***(व्यक्ति का नाम)***। यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ। आमीन।"

नकारात्मक शब्दों से स्वतंत्रता

"मनभावने वचन मधु भरे छत्ते के समान प्राणों को मीठे लगते, और हड्डियों को हरी-भरी करते हैं।" ***(नीतिवचन 16:24)***

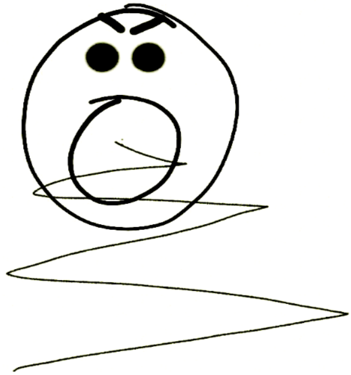

"जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते है, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।" ***(नीतिवचन 18:21)***

"क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।" ***(मत्ती 12:37)***

"अनंत जीवन की बातें तो तेरे ही पास है।" ***(यूहन्ना 6:68)***

"कभी-कभी इसी से (जीभ से) हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए है, शाप देते है।" ***(याकूब 3:9)***

वचन सामर्थी है। परमेश्वर ने कहा: *"यह हो जाए..."* और विश्व अस्तित्व में आया ***(उत्पत्ति 1:3)***। जो वचन हम बोलते है वे भी सामर्थी है! उनमें जीवन और मृत्यु और जीवन, स्वस्थ और बीमारी शामिल होती हैं। अद्भुत, और जो कुछ हम बोलते है उससे **फर्क** पड़ता है।

शैतान भाइयों पर दोष लगाने वाले के रूप में जाना जाता था। प्रकाशितवाक्य 12:10 कहता है कि शैतान हम पर परमेश्वर के सामने दोष लगाने के लिए योग्य था। मैंने (यीशु) शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरते हुए देखा ***(लूका 10:18; यशायाह 14:12-15; यहेजकेल 28:12-18)***। परमेश्वर ने शैतान को उसके विद्रोह के कारण अपनी उपस्थिति से निकाल दिया। वह विद्रोही था, व परमेश्वर के समान होना चाहता था जो उसके स्वर्ग से बाहर निकाले जाने का कारण बना। वह निरन्तर परमेश्वर के लोगों के ऊपर दोष लगाता है।

गवाही

मेरे शब्द मृत्यु लाये

"कई सालों तक मैं ही अपने विकलांग भाई की देखभाल करता था। कभी-कभी यह बहुत कठिन हो जाता था। एक दिन मैं उससे बहुत निराश और क्रोधित हुआ और कहा: 'तुम क्यों सड़क में जाकर मर नहीं जाते?' मुझे गहरा अघात लगा जब वह एक कार से टकराया और अगले पांच हफ्तों के बाद सड़क पर उसकी मृत्यु हो गई। मेरे शब्दों ने उनके जीवन पर अभिशाप की तरह काम किया।"

परमेश्वर दुःखी होता है जब हम अपने विश्वासी भाइयों और बहनों के खिलाफ दोष लगाते हुए उसकी उपस्थिति में आते है ***(1 इतिहास 16:22)***। परमेश्वर ने शैतान को भी सहन नही किया था अतः वह हम से भी यह सहन नही कर सकता है। हमें दूसरे लोगों और अपने बारे में नकारात्मक बाते करना बंद करनी होगी और इसके बजाए यह समझना आवश्यक है कि मसीह हम सभी में वास करता है।

कभी-कभी हम बिना सोचे समझे शैतान की स्तुति कर देते है और हमें पता भी नहीं चलता। एक पासवान ने अपने अनुभव को इस प्रकार से लिखा है। परमेश्वर उससे बोला और कहा, *''तुम क्यों अपनी कलीसिया की सेवा में शैतान को प्राथमिकता देते हो? तुम क्यों उसकी और उसकी दुष्ट शक्तियों की आराधना मेरे सामने करते हो?''* 'हे प्रभु' उसने उत्तर दिया, 'मैं वैसा कभी नही करता, मैं हमेशा अपनी कलीसिया की सेवा में आपको प्राथमिकता देता हूँ!' परमेश्वर ने कहा, *''नहीं। पहले तुम दुष्टात्माओं को बाँधते हो, तुम उससे बात करते हो, बाहर निकालते हो और उसे आराधना समझते है। दुष्ट आत्माएँ दूर-दूर से आपसे इस आराधना को प्राप्त करने के लिए आती है। तुम मेरी आराधना करो और में दुष्टात्माओं को देख लूँगा।''* (जडसन कार्नवाल के द्वारा रचित 'आओ आराधना करें' से उद्धत)।

यह पासवान के लिए एक भयानक सदमा था और यह हम सभी के लिए एक चेतावनी है। हमारे लिए यह सबक है कि हम 'यीशु पर अपनी आंखें लगाएं', हमारा ध्यान परमेश्वर जो कर रहा है उस पर केंद्रित करें, हर समय उसकी स्तुति करें और परमेश्वर को शत्रु से निपटने दें ***(यहूदा 9)***। प्रार्थना में भी यही नियम लागू होता है।

इसलिये हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो। ***(फिलिप्पियों 4:8)***

''मैंने एक सपना देखा जिसमें मैंने तीन बार 'हाल्लेलूय्याह' कहा और उसके बाद शैतान को पीठ के बल पड़े हुए देखा, वह हिलने में असमर्थ था। उठने के बाद जब मैंने अपने सपने के बारे में सोचा और अनुभव किया कि कठिन परिस्थिति में भी तीन बार हाल्लेलूय्याह आसानी से बोल सकता हूँ।''

एक जयवन्त मसीही जीवन जीने के लिए सभी परिस्थितियों में परमेश्वर की स्तुति करना एक महत्वपूर्ण कुंजी है। इसका एक प्रभाव यह है कि यह परमेश्वर के बारे में हमारी समझ का निर्माण करता है, हमें याद दिलाता है कि वह कितना अद्भुत है, उसने हमारे लिए पहले से ही कितना कुछ किया है और उसके साथ कुछ भी असंभव नहीं है। आराधना शैतान को हरा देती है। यह

आत्मिक युद्ध का सबसे शक्तिशाली रूप है ***(भजन 149:6-9)***।

हमारे दिमाग और हमारे शब्दों में रचनात्मक क्षमता है; हम अपने दिमाग में जो सोचते हैं वह सच हो जाता है। नकारात्मक शब्द और विचार शैतान को हमें और उन लोगों पर अत्याचार करने का अवसर देते हैं जिनके बारे में हम बात करते हैं या नकारात्मक सोचते हैं। जितना अधिक हम अच्छी चीजों पर ध्यान देते हैं, उतना ही हम उन्हें अपने ध्यान से उत्तेजित करते हैं। अपनी पुस्तक 'ग्रेस एंड फॉरगिवनेस' में, कैरल और जॉन अर्नोट ने एक पासवान का उल्लेख किया है जिसने अपने जीवन का अध्ययन किया और पाया कि उनके दैनिक विचारों में से कम से कम 80% नकारात्मक, आलोचनात्मक और परख करने वाले थे। केवल 20% सकारात्मक थे। तब उन्होंने पाया कि ज़्यादातर लोगों के लिए भी यही सच था। जब हम अपने बारे में, अन्य लोगों और परिस्थितियों के बारे में नकारात्मक बातें कहते हैं, तो असल में हम उसके लिए शैतान का काम कर रहे होते हैं ***(प्रकाशितवाक्य 12:9-11)***।

"जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।" ***(मत्ती 5:22)***

"कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो। परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है।" ***(इफिसियों 4:29-30)***

हमें मन फिराव करने की जरूरत है। और हमें यह सुनिश्चित करने के लिए अपने दिमाग को प्रशिक्षित करना और अपनी जीभ को वश में करना सीखना होगा कि हमारे दृष्टिकोण और भाषण सकारात्मक हैं। लोगों की निंदा करने के बजाय हमें विश्वास में एक दूसरे को आशीष, सम्मान, प्रोत्साहन और निर्माण करने की आवश्यकता है; क्षमा करना और आरोप नहीं लगाना। प्रार्थना के साथ-साथ हमारे दैनिक जीवन और बातचीत में भी यही हमारा दृष्टिकोण होना चाहिए।

प्रार्थना मार्गदर्शिका यदि आपने नकारात्मक शब्द कहे है:

- नकारात्मक शब्दों को कहने के लिए मन फिराव करें और परमेश्वर से अपने बदलाव की याचना करें।
- यीशु' के नाम में अपने कहे गए उन नकारात्मक, आलोचनात्मक शब्दों को त्यागे।
- इसके बदले में आशीष दें।
- यीशु को अपने हृदय में (फिर से) आमंत्रित करें ताकि आपको पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर दे।

हम प्रभु से, हमें कोई विशिष्ट घटना दिखाने के लिए कह सकते हैं जिनसे वह हमें अभी से शुद्ध करना चाहता है।

इस प्रकार की प्रार्थना को ऊँचे शब्दों से करनी चाहिए।

मेरे द्वारा कहे गए नकारात्मक शब्दों के लिए मन फिराव की प्रार्थना।

“परमेश्वर पिता, मैं मानता हूँ कि मैं अपने भाइयों पर दोष लगाने वाला रहा हूँ। मैं स्वयं का और मेरे विश्वासियों साथियों का न्याय और आलोचना करके अपमान किया है; उनके विरुद्ध प्रार्थना के द्वारा आपसे उनकी शिकायत की। कृपया मुझे क्षमा करें। *(परमेश्वर से उन विशिष्ट शब्दों और घटनाओं के लिए क्षमा की याचना करें)*...मैं मन फिराव करता हूँ, मैं बदलना चाहता हूँ, कृपया मुझे बदले। आशीष देने और श्राप न देने के लिए मेरी सहायता करें ताकि मैं जीवन के शब्दों को बोल सकूँ न कि मृत्यु के।

“यीशु के नाम के अधिकार में अपने व दूसरों के बारे में कहे गए सभी नकारात्मक विचारों व शब्दों को तोड़ता हूँ। स्वर्ग में विराजमान पिता, कृपया यीशु के लहू से इन नकारात्मक शब्दों और उसके परिणामों को साफ कर दीजिए और हमें बुराई से बचाएं। कृपया मेरे हृदय में आइए और मुझे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कीजिए। यीशु’ के नाम में। आमीन।”

बहुत बार यह होता है कि वह लोग जिनका हम पर अधिकार होता है, जैसे कि माता-पिता, शिक्षक और नियोक्ता, जिनके शब्द हमें गंभीर रूप से आहत कर सकते हैं, खासकर जब हम युवा होते हैं। माता-पिता प्रायः ऐसी बातें कह देते हैं जो उनके बच्चों के लिए हानिकारक हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, ‘काश तुम कभी पैदा नहीं हुए होते’ या ‘तुम आलसी हो, तुम्हारा जन्म लेना ही बेकार है’। यहाँ तक कि माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को दिए गए पालतू जानवरों के नाम भी उनके बच्चे के जीवन पर अभिशाप की तरह हो सकते हैं। शिक्षक हमारे ऊपर नकारात्मक शब्द भी कह सकते हैं जो हमारे जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं। हमें उन सभी को क्षमा करने की आवश्यकता है जिन्होंने हमारी निंदा की और हमारे ऊपर नकारात्मक शब्द बोले। यीशु के नाम में हम नकारात्मक शब्दों की शक्ति को तोड़ सकते हैं जो हमारे जीवन पर बोले गए श्राप की तरह हैं और परमेश्वर से हमें इनके किसी भी परिणाम से शुद्ध करने के लिए कहें।

कभी-कभी हमें कहे गए नकारात्मक शब्द हमें उदास नहीं **करते**। चोट तब लग सकती है जब कोई शब्द **नहीं** बोला जाता है, या तो मौन या प्रोत्साहन की कमी के कारण से। उदाहरण के लिए, यदि कोई माता-पिता, शिक्षक या जीवनसाथी आपसे बात नहीं करते हैं और आप के साथ 'मौन व्यवहार' करते हैं, तो यह आपको सोचने पर मजबूर कर सकता है कि आप बेकार हैं, बात करने के लायक नहीं हैं और एक व्यक्ति के रूप में आपका कोई मूल्य नहीं है।

गवाही

यीशु ने रिश्ते को पहले जैसा कर दिया

"हमने एक ऐसे व्यक्ति के साथ प्रार्थना की जो वर्षों से पुरानी थकान से बीमार था। जब हमने पूछा कि क्या किसी ने उनके बारे में नकारात्मक बातें कही हैं, तो उन्हें याद आया कि उनके पिता ने कहा था: 'तुम्हारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा'। ये शब्द एक अभिशाप की तरह काम कर रहे थे। उस व्यक्ति ने अपने पिता को क्षमा कर उसे आशीष दी। तीन दिन बाद उस आदमी के पिता ने यीशु का सपना देखा और महसूस किया कि उसका उसके साथ कोई संबंध नहीं है। उसने मन फिराव किया और यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित किया, 'फिर से नया जन्म लिया' और उनका रिश्ता ठीक हो गया।"

जब हमें प्रोत्साहन नहीं मिलता है तो यह वास्तव में कष्टदायक हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा 92% परीक्षा परिणाम प्राप्त करता है, लेकिन उसके पिता की प्रतिक्रिया है: 'आपके भाई ने 96% प्राप्त किया।' या शायद आपके पिता आपके उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम पर कोई टिप्पणी नहीं करते हैं। इससे आपको लगता है कि आप महत्वपूर्ण नहीं हैं और वह आप में रुचि नहीं रखते है। यह बहुत दु:खदायी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि उस व्यक्ति को क्षमा करें, या परमेश्वर से उसे क्षमा करने में आपकी सहायता करने के लिए कहें।

प्रार्थना मार्गदर्शिका यदि किसी ने आपके लिए नकारात्मक शब्द कहे है:

- उस व्यक्ति को क्षमा करें जिसके शब्दों से आपको कष्ट हुआ हो।
- अपनी पापमय प्रतिक्रिया से मन फिराव करें।
- यीशु के नाम से प्रत्येक नकारात्मक शब्द जो आपके विरूद्ध कहा है, उसे तोड़े।
- अपने श्राप देने वाले को आशीष दो।
- यीशु को अपने हृदय में (फिर से) आमंत्रित करें ताकि आपको पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कर दे।

कभी-कभी हम गलत तरीके से स्वयं का न्याय कर सकते हैं (जैसे **लूका 18:9-14** में फरीसी)। कभी-कभी हमारे अपने शब्द या अपने बारे में विचार बहुत नकारात्मक हो सकते हैं जैसे 'मैं बेकार हूँ' या 'काश मैं मर जाता'। ये विचार या शब्द हमारे जीवन पर एक अभिशाप की तरह काम कर सकते हैं और हम अवसाद या आत्महत्या के व्यवहार जैसी स्वास्थ्य समस्याओं को विकसित कर

सकते हैं। आत्म-निर्णय यानी अपने आप को कम आँकना या स्वयं को अधिक महत्व देना (घमण्ड) का मन फिराव होना चाहिए और हम यीशु' के नाम के अधिकार में उनके नकारात्मक प्रभावों से स्वयं को स्वतंत्र कर सकते हैं।

इस प्रकार की प्रार्थना को एक व्यक्ति को हृदय सहित ऊँचे शब्दों से करना चाहिए।

मेरे बारे में कहे गए नकारात्मक शब्दों की सामर्थ्य को तोड़ने के लिए प्रार्थना।

"स्वर्ग में विराजमान प्यारे पिता, यीशु के नाम में, मैं अपने विरूद्ध कहे गए नकारात्मक शब्दों (परमेश्वर को अपने कहे गए विशिष्ट नकारात्मक के बारे बताए...) को मानता हूँ। मैं क्षमा करता हूँ...(उनके नाम और उनके द्वारा कहे गए नकारात्मक शब्दों को बताए...और सकारात्मक शब्द जो वह कह सकते थे पर नहीं कहे)। पिता, कृपया मुझे मेरे पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं के लिए क्षमा करें (परमेश्वर को अपनी पापमय प्रतिक्रिया के बारे में बताए)।

"यीशु के नाम के अधिकार में मैं उस श्राप को जो नकारात्मक शब्द के द्वारा मेरे जीवन में है उसको तोड़ देता हूँ और स्वयं को उनके परिणामों से स्वतंत्र करता हूँ। कृपया मुझे यीशु के लहू से साफ कीजिए और मुझे बुराई से बचाइए। मैं *(व्यक्ति का नाम)* को आशीष देता हूँ। कृपया मेरे हृदय में आइए और मुझे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करें। यीशु के नाम में। आमीन।"

परिशिष्ट में कुछ वचनों की एक सूची है जो बताती है कि हम मसीह में कौन है। इनका मनन करने से अपने और अन्य विश्वासियों के लिए प्रार्थना करने के लिए हमारा विश्वास बढ़ाता है।

गवाही

यीशु ने मेरी सहेली की सहायता के लिए मुझे इस्तेमाल किया

"मैंने अपनी सहेली के साथ इन प्रार्थनाओं का इस्तेमाल किया। जैसे ही उसने अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों में प्रार्थना की, मैंने देखा कि उसका चेहरा उजला हो गया है। मैंने उसे बताया नहीं लेकिन फिर उसने मुझसे कहा कि उसे लगा कि एक भारी बोझ हट गया है। "हाल्लेलूय्याह!""

वित्तीय समस्याओं से छुटकारा

*"पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुत सी व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते है, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती है। क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुःखों से छलनी बना लिया हैं।" (**1 तीमुथियुस 6:9-10**)*

प्रायः यीशु ने दृष्टान्तों में धन और संपत्ति के बारे में बहुत सारी बातें कीं। वह धन के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण को जानता है लेकिन वह चाहता है कि हम उसके प्रति उसके दृष्टिकोण को जानें। हम सभी को जीवित रहने के लिए धन की आवश्यकता होती है लेकिन धन का प्रेम विनाश की ओर ले जाता है। जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो वह हमें वह सब कुछ देता है जिसकी हमें आवश्यकता होती है और वह चाहता है कि हम उसे हर चीज़ से प्यार करें। कुछ लोग कहते हैं कि परिवर्तित होने वाले व्यक्ति का आखिरी हिस्सा उनकी जेब है! पैसे से ज्यादा परमेश्वर पर भरोसा करना आखिरी बात हो सकती है जिसे हम बाद में सीखते हैं। इसके बारे में बहुत अधिक अज्ञानता है और हम कई वचनों की उपेक्षा करते हैं क्योंकि सांसारिक सोच हमारे अंदर गहरी जड़ें जमा चुकी है। जब हम परमेश्वर के बजाय समृद्धि का पीछा करते हैं, तो यह हमेशा हमारे लिए समस्याएं लेकर आता है। पैसा होने में कुछ भी गलत नहीं है, यहाँ तक कि बहुत सारा पैसा भी। लेकिन हमें अपने जीवन में ईश्वर को पहले स्थान पर रखना चाहिए, अपने धन के प्रति उदार होना चाहिए, इसका उपयोग जरूरतमंदों की मदद करने और महान आयोग को वित्तपोषित करने के लिए करना चाहिए। ***(व्यवस्थाविवरण 14:33; मत्ती 25:34-46; लूका 12:33-34; याकूब 5:1-6)।***

दशमांश का नियम अब्राहम के द्वारा स्थापित किया गया ***(उत्पत्ति 14:20),*** याकूब ने जारी रखा ***(उत्पत्ति 28:22)*** और मूसा ने व्यवस्था में शामिल किया ***(लैव्यव्यवस्था 27:30-32)*** यीशु ने भी दशमांश के बारे में सिखाया। बाईबल में लोग अपनी उगाई किसी भी फसल या फल, पैसा जो उन्होंने कमाया हो या कुछ भी उन्होंने किसी से प्राप्त किया हो उसका 10% परमेश्वर को देते थे; वे इसे मन्दिर में देते थे। अभी कोई मन्दिर नहीं है इसलिए दशमांश का अभिप्राय अपने चर्च में 10% देने से है। दशमांश पवित्र है और परमेश्वर

हम परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार से इतने आशीषित हुए हैं कि हमें कभी भी 10% से कम देने का सपना नहीं देखना चाहिए। (डंकन वाटकिंसन, आईआरनेट, 2014)

का है। दशमांश देना परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमारा एक कार्य है।

*यीशु ने कहा, "जो कैसर का है, वह कैसर को दो; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो" **(मत्ती 22:21; मरकुस 12:17; लूका 20:25)**।*

कैसे दशमांश की गणना करें

इस महीने के लिए अपनी कुल आय को एक साथ जोड़े, जिससे आपको कुल आय मिल सके, उदाहरण के लिए ₹10,000

[यदि आप व्यापारी हैं तो इस महीने के लिए कुल लाभ को लीजिए]

कूल आय को लीजिए और उसे 10 से भाग दे दीजिए।

₹ 1,0000/10 = ₹1,000

इस उदाहरण में इस महीने का दशमांश ₹1,000 है।

दशमांश को अपनी स्थानीय कलीसिया जहाँ आप जाते है वहाँ दिया जाना चाहिए।

एक उपदेशक ने इसे इस तरह से कहा: 'दशमांश इस धरती पर रहने और इस हवा में सांस लेने के लिए हमारे किराये का भुगतान है! 'जो भी उपहार हम परमेश्वर को 10% से ऊपर देते हैं वह एक भेंट है। परमेश्वर इन भेंटो को आशीष देते हैं, और जो लोग दशमांश और भेंट देते हैं उनके पास अभी भी पर्याप्त है! संकलनकर्ताओं के अनुभव में वे लगभग सभी मसीहियों से मिले हैं जिन्होंने कहा कि उन्हें वित्तीय समस्या थी, कर चुकाने से पहले न्यूनतम वह 10% भी नहीं दे रहे थे। वित्तीय संकट में मसीही सेवकाईयाँ सोच सकती है कि उनकी समस्या उनकी सेवकाईयों की आय का 10% दशमांश उन सेवकाईयों को नहीं देने से उपजा है जिससे उनका अपना कोई लेना देना नहीं है। सांसारिक सोच यह है कि हम दशमांश नहीं देंगे क्योंकि हमें लगता है कि हम इसका वहन नहीं कर सकते। लेकिन परमेश्वर को उनका दशमांश न देने से, उनकी सुरक्षा का हाथ हम पर से हट जाता है और हमारा पैसा उतनी पहुँच नहीं रखता जितनी कि रखनी चाहिए। उदाहरण के लिए, उपकरण खराब हो जाएंगे, भोजन खराब हो जाएगा और कर्ज बढ़ जाएगा। भले ही हमारे पास वास्तव में चीजों के प्राकृतिक तरीके से जीने के लिए पर्याप्त पैसा न हो, परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम पहले उसे वापस दे देंगे तो हमारे पास पर्याप्त होगा।

सांसारिक सोच यह है कि हम दशमांश नहीं देंगे क्योंकि हमें लगता है कि हम इसका वहन नहीं कर सकते है। लेकिन परमेश्वर को उनका दशमांश न देने से, उनकी सुरक्षा का हाथ हम पर से हट जाता है और हमारा पैसा उतनी पहुँच नहीं रखता जितनी कि रखनी चाहिए। उदाहरण के लिए, उपकरण खराब हो जाएंगे, भोजन खराब हो जाएगा और कर्ज बढ़ जाएगा। भले ही हमारे पास वास्तव में चीजों के प्राकृतिक तरीके से जीने के लिए पर्याप्त पैसा न हो, परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम पहले अपना दशमांश उसे वापस दे देंगे तो हमारे पास पर्याप्त होगा ।

*''दशमांश और उठाने की भेंटों में तुम मुझे लूटते हो; वरन् सारी जाति ऐसा करती हैं। सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे; और सेनाओं के यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नही।'' **(मलाकी 3:8-12)***

यह बाईबल का एकमात्र पाठ है जहाँ परमेश्वर हमें उसकी परीक्षा लेने के लिए आमंत्रित करता है।

[जिस कलीसिया में हम जाते है उसे 'भंडार' समझा जाता है; एक ऐसी जगह जहाँ आत्मिक रूप से खिलाया जाता है ***(व्यवस्थाविवरण 14:22-23***)।]

कृपया ध्यान दें कि हम 'समृद्धि के सुसमाचार' का प्रचार नहीं कर रहे हैं, बल्कि केवल परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता का प्रचार कर रहे हैं।

हमें परमेश्वर के सामने ईमानदार होने की जरूरत है। यदि हम दशमांश नहीं दे रहे हैं, तो हमें इसका मन फिराव करने और परमेश्वर से इसे लूटने के लिए क्षमा याचना करने की आवश्यकता है। तब हमें अपनी कलीसिया में अपनी कुल आय का 10% (कर या किसी अन्य कटौती से पहले) देना चाहिए।

दशमांश[6] न देने पर मन फिराव प्रार्थना।

''प्यारे स्वर्ग में विराजमान पिता, जो कुछ मेरे पास है वो आपका दिया हुआ है। मैं आभारी हूँ कि जो आपने मुझे सौंपा है। मैं अब समझता हूँ कि दशमांश पवित्र है और यह आपका है। मैं अंगीकार करता हूँ कि मैंने आपके दशमांश को आपके भण्डार में नही दिया *(मलाकी 3)*। अब मैं जो कुछ न्यायपूर्वक आपका है उसे रोके रखने के लिए मन फिराव करता हूँ और आपसे क्षमा मांगता हूँ। यीशु के नाम के अधिकार में मैं अपने हर एक शाप को तोड़ता हूँ। अब से मैं अपनी सारी आय पर दशमांश देने के लिए प्रतिबद्ध हूँ, कृपया मुझे ऐसा करने में मदद करें। अब मैं अपने अतीत के सभी न दिये गये दशमांश से आपके अनुग्रह से स्वयं को स्वतंत्र करता हूँ। धन्यवाद पिताजी। कृपया मुझे हर तरह से आशीष दे और मुझे दूसरों से और आपके राज्य के उद्देश्यों के लिए आर्थिक आशीष का एक माध्यम बनाइये। यीशु के नाम में। आमीन।''

[6] क्लाइव पिक: वित्तीय नवीनीकरण का रहस्योद्घाटन (1998), न्यू वाइन मिनिस्ट्रीज्।

इसी तरह, परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम अपने सभी वित्तीय लेन-देन में ईमानदार रहें, जो हमारा बकाया है उसका भुगतान करें और रिश्वत देने से बचें।

परमेश्वर को अपना सर्वश्रेष्ठ दें। जो कुछ आप उसे देते हैं, परमेश्वर आपको वापस कई गुना कर देगा, चाहे वह प्रेम, विश्वास, धन या कोई अन्य अच्छी चीज़ हो। अब वह आपको एक चमत्कार दिखाना चाहता है।

(*ऑरल रॉबर्ट्स,*

मिरेकल ऑफ सीड-फेथ, 1982)

नए नियम में धन के ऊपर शिक्षा दशमांश से अधिक सांसारिक सोच के लिए ज्यादा चुनौती पूर्ण है। यीशु ने भीड़ से कहा कि वे माँगने वालों को दें ***(मत्ती* 5:42; *लूका 6:30)*** और *"अपनी संपत्ति बेचकर ज़रूरतमंदों को दें"* ***(लूका 12:33)***। उसने एक धनी युवक से कहा कि वह अपनी सारी संपत्ति बेचकर कंगालों को दे दे ***(मरकुस 10:21; लूका 18:22)***। प्रारंभिक कलीसिया समूह में जो कुछ भी उनके पास होता था उसे साझा किया ताकि किसी को किसी चीज़ की कमी न हो ***(प्रेरितों के काम 2:45)***। इन्हीं मनोवृत्तियों को पत्रियां भी सहेजने के लिए प्रोत्साहित करती हैं ***(2 कुरिन्थियों 8:11-15 और 9:7-15; 1 यूहन्ना 3:17)***। एक बार जब हमने दशमांश देना सीख लिया, तो परमेश्वर हमें दूसरों के प्रति अधिक उदार होने के लिए चुनौती देना शुरू कर देगा।

"जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करें; न कुढ़-कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वालों से प्रेम रखता है । परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।" ***(2 कुरिन्थियों 9:6-8)***

गवाही

आशीषों का कारण बनना

"14 साल पहले मैंने दशमांश के बारे में सीखा, खासकर कि पूरा दशमांश पवित्र था और परमेश्वर का था और स्थानीय कलीसिया को दिया जाना चाहिए। मैंने मन फिराव किया और ठीक से दशमांश देने लगा। उस समय मैं बहुत कर्ज में था और मेरी शादी एक आपदा बनी हुई थी। अब मेरी शादी मजबूत है और हम अब कर्ज में नहीं हैं। हम कई अन्य लोगों को कर्ज से बाहर निकलने और उनकी ईश्वरीय बुलाहट में मदद करने में सक्षम हैं।"

कई मसीही कर्जदार हैं और इसे सामान्य जीवन का हिस्सा मानते हैं, लेकिन यह सांसारिक सोच है। ऐसी स्थितियां हैं जहां लोग विशेष रूप से अप्रत्याशित खर्च या नौकरी छूटने के कारण कर्ज में डूब जाते हैं। बाईबल हमें कर्ज नहीं लेने के लिए कहती है: *"किसी का कोई भी कर्जदार न हो"* ***(रोमियों 13:8)*** या हम परमेश्वर के सेवक होने के बजाय ऋणदाता के दास बन सकते हैं

(नीतिवचन 22:7)। ऋण निराशा की ओर ले जाता है। कई आत्महत्याएं कर्ज से जुड़ी होती हैं। हमें उन संसाधनों के अच्छे भण्डारी बनना सीखना होगा जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं, उस पर भरोसा करते हुए कि हमें जो चाहिए वह परमेश्वर देता है ***(फिलिप्पियों 4:6)***। अगर हमारे पास लालच और पैसे और संपत्ति के लगाव के कारण कर्ज हैं, तो हमें मन फिराव करने और परमेश्वर से क्षमा याचना करने की आवश्यकता है। फिर परमेश्वर से सहायता माँगते हुए, अपने ऋणों को शीघ्रता से चुकाने का दृढ़ प्रयास करें।

"कोई भी मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।" ***(मत्ती 6:24)***

कर्ज से मुक्त रहने के लिए हम अपने खर्च को कम कर सकते है, केवल वही चीजों को खरीदे जो वास्तव में हमें चाहिए न कि जिन्हें हम रखना चाहते है। हमें अपने खर्च से ज्यादा खरीददारी करना बंद कर देनी चाहिए। *"हमें किसी की किसी वस्तु का लालच नही करना चाहिए"* ***(निर्गमन 20:17)***। यदि हमें वास्तव में कुछ ऐसी चीज़ों की जरूरत है जो हमारे लिए महंगी है, तो हमें उस खरीददारी के लिए हर बार जब हम पैसा प्राप्त करते है तो छोटी-छोटी बचत करनी चाहिए जब तक कि पर्याप्त धन इकट्ठा न हो जाए।

बाईबल हमें *"सब चीजों के ऊपर परमेश्वर के राज्य को खोजने और धार्मिकता का जीवन जीने के लिए कहती है और परमेश्वर हमारी सभी जरूरतों को पूरा करेगा"* ***(मत्ती 6:19-34*** विशेष करके ***6:33)***। यह हमसे बदलाव की मांग करती है क्योंकि हम में से बहुत इन विषयों के बारे में सांसारिक सोच रखते है। परंतु जैसे हम आज्ञाकारिता में और परमेश्वर की योजना के वायदे में भरोसा करते है, तो हम देखते है कि वह हमारे साथ है और वह हमारा ध्यान रखता है ताकि हमें जिन चीजों की आवश्यकता है वह सब दे ***(भजन 23:1)***।

नया नियम हमें सुसमाचार के प्रसार में उदारतापूर्वक योगदान करने के लिए भी कहता है। हम में से बहुत से लोग इसे पर्याप्त रूप से नहीं करते हैं क्योंकि हमें डर है कि भविष्य में हमारे पास अपने लिए पर्याप्त धन न हो। परमेश्वर का दृष्टिकोण यह है कि हमें बहुत कम देने से डरना चाहिए ***(याकूब 5:1-6; 3 यूहन्ना 5-8)***।

परमेश्वर के तरीके से किए गए परमेश्वर के कार्य में परमेश्वर के संसाधनों की कभी कमी नहीं होगी।
(हडसन टेलर)

दैवीय विरासत की पुनः प्राप्ति

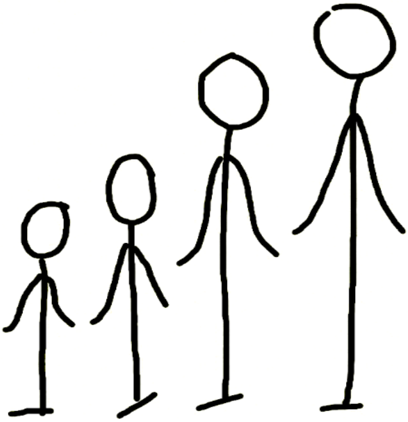

ज़्यादातर लोग अपने माता-पिता या किसी अन्य रिश्तेदार की तरह दिखते हैं। शारीरिक रूप से और यहाँ तक कि आत्मिक विशेषताओं को भी पारिवारिक आधार पर देखा जा सकता है। हम अपने माता-पिता से कई विशेषताओं और लक्षणों को प्राप्त करते हैं और सीखते हैं। परमेश्वर ने इसे अच्छे के लिए बनाया था परन्तु बुरी विशेषताएं भी इसी तरह से आ गई। सामर्थ, जैसे कि भाषाओं में क्षमता या परिवारों में मदद करने की प्रकृति देखी जा सकती है। लेकिन, विशेष समस्याओं या पापों (जैसे यौन पाप, वित्तीय बर्बादी, शराब और कुछ बीमारियाँ) की प्रवृत्ति प्रायः अनुवाशिंक होती है और विरासत में मिली या 'पीढ़ी दर पीढ़ी' हो सकती है।

सभी पापों को पीढ़ी गत कहा जा सकता है, क्योंकि यह आदम और हव्वा के साथ आरंभ हुआ था और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हम तक पहुंचा है। हमारे पूर्वजों के पाप (पीढ़ी के पाप) जिनका अंगीकार मन फिराव नहीं हुआ हैं, वे आने वाले वंशजों को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे हम भी उसी प्रकार के पाप में गिरने की संभावना के दायरे में आ जाते हैं।

जब परमेश्वर की व्यवस्था टूट जाती है और पाप होता है, तो उस व्यक्ति पर एक श्राप आ जाता है, जो बाद में उसके वंशजों पर भी पड़ जाता है।

दस आज्ञाएं बताती हैं कि पाप (मूर्तिपूजा) के लिए 3-4 पीढ़ियों के लिए नकारात्मक परिणाम (एक अभिशाप) हैं और आज्ञाकारिता के लिए 1000 पीढ़ियों के लिए भव्य आशीषें हैं ***(निर्गमन 20:4-6)***। यौन पाप का 10 पीढ़ियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है ***(व्यवस्थाविवरण 23:2)***।

परमेश्वर भला, दयालु और प्यार करने वाला है। वह नहीं चाहता कि हम पाप के द्वारा उससे अलग हो जाएँ। वह नहीं चाहता कि हम श्रापों या अपने स्वयं के पाप या हमारे पूर्वजों के पापों के नकारात्मक परिणामों के तहत पीड़ित हों। लेकिन हम अपनी मदद करने में असमर्थ हैं और इसलिए उन्होंने इसका समाधान दिया है; यीशु समाधान है।

बाईबल में परमेश्वर हमें बताता है कि *"बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती।"* ***(इब्रानियों 9:22)***। पाप मिटता नहीं है ***(नहेम्याह 1:6-7)***। अच्छा बनने की कोशिश करके या उसे भूलकर हम पाप से छुटकारा नहीं पा सकते। एक ही रास्ता है यीशु पर विश्वास करना, और उस पर भरोसा करना जिसने हमारे पापों को इस तरह लिया जैसे कि वे उसके अपने थे। उसने अपना लहू बहाकर हमारे लिए जो दंड दिया था, उसे लेकर उसने हमारे पाप का भुगतान किया।

पाप हमारे साथ तब तक बना रहता है जब तक कि हम इसका अंगीकार नहीं करते और यीशु से हमें क्षमा करने के लिए नहीं कहते। यीशु तब हमें क्षमा करता है और उसका लहू पाप को पूरी तरह से धो देता है (धर्मी ठहराया जाना)। नकारात्मक पारिवारिक गुणों और पापों से मुक्ति व्यक्ति द्वारा अपने माता-पिता और अपने पूर्वजों तथा व्यापक परिवार के पापों को ***क्षमा*** करने पर निर्भर करती है। हमारी नकारात्मक समस्याओं या उन पापों से हमारी संतानों का उद्धार **हमारे मन फिराव** पर निर्भर है।

"मन फिराव करो और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर का कारण न होगा।" ***(यहेजकेल 18:30-32)***

जब हम नया जन्म लेते हैं, तो हमारे सारे पाप दूर हो जाते हैं; हम 'धर्मी', ठहराये गए है और धार्मिक बनाए जाते हैं, हमें परमेश्वर के परिवार में स्थान दिया जाता है। लेकिन जरूरी नहीं कि हमारे पाप के **परिणाम** दूर हो जाएं। उदाहरण के लिए, अगर हम पैसे चुराते हैं और मन फिराव करते हैं, तो परमेश्वर हमें क्षमा कर देते हैं लेकिन हम अभी भी उन लोगों के कर्जदार है, जिनकी हम ने चोरी की है। इसके कानूनी परिणाम भी हो सकते हैं। यीशु मेरे पाप का कर्ज लेता है लेकिन मुझे अभी भी जो कुछ मैंने चुराया है उसे चुकाने की जरूरत है। जिस व्यक्ति से हमने चोरी की है और उनके परिवार, बच्चों और पोते-पोतियों के लिए परिणाम हैं; हमारे और हमारे बच्चों और पोते-पोतियों के लिए परिणाम हैं; पुलिस के लिए, समुदाय के लिए और यह सूची बढ़ती जाती हैं। **हमारे पाप कभी भी एक निजी मामला नहीं है।**

बाईबल से एक बहुत ही दु:खद उदाहरण 2 शमूएल 11और उसके बाद की पुस्तक में समझाया गया है। दाऊद राजा ने हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा की लालसा की, उसने उसे अपने पास बुलाया और उसके साथ व्यभिचार किया। जब वह गर्भवती हुई तो दाऊद ने ऊरिय्याह को अपनी पत्नी के साथ सोने के लिए, छल से भेजने की कोशिश की ताकि ऊरिय्याह को धोखा दे और अपना पाप छिपा सके। जब वह ऊरिय्याह को धोखा नहीं दे सका, तो राजा दाऊद ने उसे युद्ध के

मैदान में मार डालने की व्यवस्था की। इसका परिणाम यह हुआ कि व्यभिचार के इस कृत्य में गर्भ में पल रहे बच्चे की मृत्यु हो गई, भले ही दाऊद ने मन फिराव किया, उपवास किया और बच्चे के जीवित रहने के लिए प्रार्थना की। साथ ही दाऊद के कई बच्चे, नाती-पोते और उसके परिवार की बाद की पीढ़ियां यौन पाप और हत्या से प्रभावित थीं। परमेश्वर ने दाऊद की वासना, व्यभिचार और हत्या को क्षमा कर दिया, परन्तु दाऊद के वंशजों में उसके पाप के परिणाम जारी रहे। इसने उसके देश को नुकसान पहुँचाया।

जब हम एक बार पाप करते हैं, तो यह संभावना बढ़ जाती है कि हम फिर से उसी तरह के पाप को करेंगे। इसी तरह, हमारे माता-पिता/पूर्वजों के पाप भी एक 'खुले द्वार' का निर्माण कर सकते हैं जिससे हमें उसी तरह पाप करने की अधिक संभावना हो सकती है। इन विशिष्ट पापों (हमारे और हमारे पूर्वजों) को स्वीकार करने, मन फिराव, इसमें शामिल लोगों को क्षमा करने और परमेश्वर से हमें इनके परिणामों से शुद्ध करने के लिए कहने के द्वारा पाप से निपटा जाता है। तब हम परमेश्वर से उस विशिष्ट पाप के लिए 'दरवाजा बंद' करने के लिए कह सकते हैं और उस तरह से हमारे और हमारे परिवारों के लिए पाप करने की प्रवृत्ति को दूर कर सकते हैं। यदि कोई श्राप कार्य कर रहा है, तो हम यीशु के नाम के अधिकार से श्राप को तोड़ सकते हैं, और परमेश्वर से यीशु के लहू में इसके प्रभावों को धोने के लिए कह सकते हैं।

"वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ, उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" ***(1 पतरस 2:24; यशायाह 53:5-6)***

"मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।'" ***(गलातियों 3:13)***

हम में से अधिकांश के लिए, जब हम 'नया जन्म' लेते हैं तब कुछ पापपूर्ण व्यवहार और शाप तुरंत दूर हो जाते हैं जबकि कुछ हमें प्रभावित करते रहते हैं। व्यवस्थाविवरण 27 और 28 में, आज्ञाकारिता के लिए कई आशीषें और अनाज्ञाकारिता के लिए शाप सूचीबद्ध हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ संगति में रहें और उसकी सारी आशीषें प्राप्त करें। हम में से अधिकांश लोग अपने जीवन को उस पूर्ण आशीष के साथ नहीं जीते हैं जो बाईबल आज्ञाकारी लोगों से वादा करती है और इसी कारण हम किसी न किसी प्रकार के शाप के अधीन रहते हैं।

अपने परिवारों का अध्ययन करने के लिए थोड़ा समय प्रार्थना पूर्वक व्यतीत करना, एक बहुत ही उपयोगी अभ्यास हो सकता है (नीचे दिए चित्र में 'अपना पारिवारिक इतिहास चार्ट बनाना' देखें)।

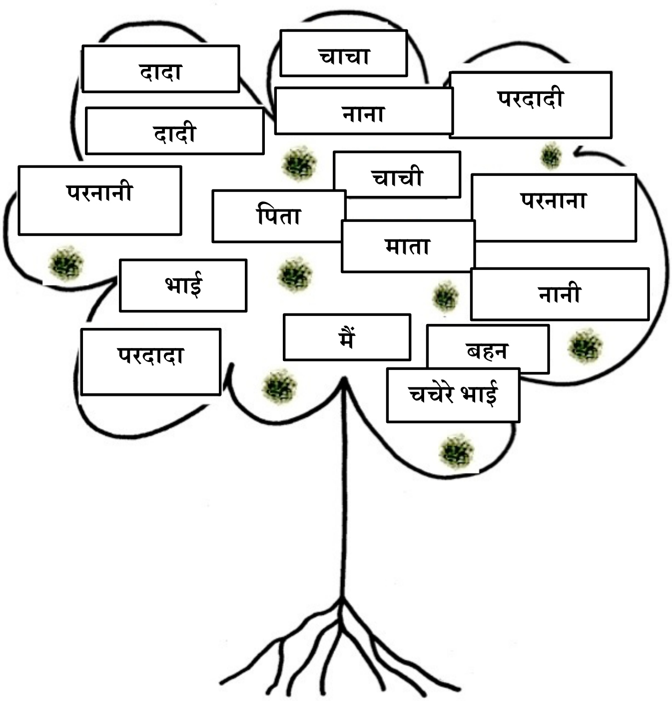

- हम अपने माता-पिता, दादा-दादी और परदादा-दादी में कौन-से **ईश्वरीय गुण** देखते हैं? हमारे भाई-बहनों में से किसे ये ईश्वरीय गुण विरासत में मिले हैं?

- हम अपने पूर्वजों में कौन-से **अधर्मी गुण** देखते हैं? हमारे भाई-बहनों में से किसे ये अधर्मी गुण विरासत में मिले हैं? उदाहरण के लिए, यौन पाप, टूटे रिश्ते, क्रोध में पागल होना, आलोचना, आक्रोश, कड़वाहट, शराब आदि। क्या कोई गंभीर बीमारी है जो हमारे परिवारों में कई लोगों को प्रभावित कर रही है?

हम कैसे पता कर सकते हैं कि हम एक अभिशाप के अधीन जी रहे हैं? बाईबल शिक्षक, रेव. डेरेक प्रिंस ने सात अलग-अलग दुःखों को बताया है जो संकेत कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति या परिवार एक अभिशाप के अनुसार जी रहा है या नहीं। यह है:

1. मानसिक और भावनात्मक रूप से टूटने का इतिहास
2. बार-बार या पुरानी बीमारियाँ - खासकर अगर वे पीढ़ी-गत हैं। 'अनुवाशिंक' पीढ़ियों के माध्यम से आने वाले अभिशाप का संकेत दे सकता है
3. बार-बार गर्भपात या महिला संबंधित समस्याएं
4. विवाह टूटने और पारिवारिक विभाजन का इतिहास
5. निरंतर वित्तीय अपर्याप्तता, खासकर जब आय पर्याप्त प्रतीत होती है
6. दुर्घटना की संभावना रहना
7. परिवार में आत्महत्या या अप्राकृतिक मृत्यु (आकाल मृत्यु) का इतिहास

अच्छी खबर यह है कि यीशु हर पाप और हर शाप का जवाब है। चाहे किसी व्यक्ति पर उनके पाप के कारण श्राप आया हो या किसी पूर्वज के पाप के कारण, या किसी और ने किसी व्यक्ति पर जानबूझकर जादू टोना करके या अनजाने में नकारात्मक शब्दों से श्राप दिया हो, यीशु हर पाप और हर श्राप का उत्तर है। यीशु के लहू में हर पाप को शुद्ध करने की शक्ति है; यीशु के नाम के अधिकार में हर शाप को तोड़ने की शक्ति है।

यदि आप सोचते हैं कि आप और/या आपका परिवार एक अभिशाप के अधीन रह रहे हैं तो शायद परमेश्वर चाहता है कि आप अधिक विस्तार से अंगीकार करें या मन फिराव करें और अधिक अच्छी तरह से क्षमा करें।

चित्र में पारिवारिक इतिहास चार्ट एक अच्छा उदाहरण है जो आपको यह पहचानने में मदद करेगा कि क्या आपके परिवार में कोई अभिशाप चल रहा है। आप इसका उपयोग अपना पारिवारिक इतिहास चार्ट तैयार करने और अपने परिवार को विस्तार से देखने के लिए कर सकते हैं। यह चार्ट आपको यह पहचानने में सक्षम करेगा कि आपके अपने परिवार में कौन सी आशीष और कौन से पाप और क्लेश हो रहे हैं। यह आपको परिवार में पाप और क्लेश के तरीके और जड़ों और अन्य मुद्दों की पहचान करने में भी मदद करेगा, जिन्हें अंगीकार करने और मन फिराव करने की आवश्यकता है, ताकि आप क्षमा प्राप्त कर सकें और स्वतंत्र हो सकें। हमारे पास अपने परिवारों में श्रापों के कारण और प्रभाव के बारे में जितनी अधिक जानकारी होगी, उतनी ही अधिक प्रभावी ढंग से हम प्रार्थना के माध्यम से उन्हें तोड़ और हटा सकते हैं।

कौन सा परिवार चार पीढ़ियों के लिए मूर्तिपूजा से मुक्त है? हम सभी मूर्तिपूजा के दोषी हैं - अपने जीवन में किसी समय अन्य चीजों को परमेश्वर के सामने रखना (***1* यूहन्ना *5:21***)। किसने अपने स्वयं के प्रयासों से अच्छा बनने की कोशिश नहीं की है? जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और परमेश्वर से हमें क्षमा करने के लिए कहते हैं, तो हम आश्वस्त हो सकते हैं कि हमें क्षमा कर दिया गया है। तब हम परमेश्वर से हमें परिणामों और श्रापों से शुद्ध करने के लिए

प्रार्थना मार्गदर्शिका यदि आप जीवन को पीढ़ीगत पाप या नकारात्मक तरीके प्रभावित कर रहे है:

- अपने जीवन और अपने परिवार से विरासत में मिली सभी अच्छी चीजों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।
- अपने आप में, रिश्तेदारों और पूर्वजों के व्यवहार या पाप के नकारात्मक तरीकों को स्वीकार करें।
- माता-पिता, रिश्तेदारों और पूर्वजों को उन पापों के लिए क्षमा करें।
- इस क्षेत्र में अपने पापों का मन फिराव करें।
- यीशु के नाम में, परमेश्वर से उस पाप की प्रवृत्ति को अपने और अपने रिश्तेदारों से दूर करने के लिए कहें।
- यीशु के नाम में, अपने और/या अपने परिवार के किसी भी श्राप को तोड़ें और परमेश्वर से इसके प्रभावों को दूर करने के लिए कहें।
- अपने पूरे परिवार को आशीष दें और परमेश्वर से भी अपना आशीष देने के लिए कहें।
- यीशु को अपने हृदय में आने के लिए आमंत्रित करें (फिर से) ताकि आपको पूरी तरह से पवित्र आत्मा से भर दें। उसे अपने परिवार के सदस्यों के लिए भी ऐसा करने के लिए कहें।

कह सकते हैं, और वह ऐसा करेगा ***(1 यूहन्ना 1:9)***। बदले में, परमेश्वर हमें एक हजार पीढ़ियों को भी स्वतंत्रता और आशीष देता है **(निर्गमन *20:6)***।

जब आप तैयार हो, तो इस प्रकार की प्रार्थना ऊँचे शब्दों से करनी चाहिए।

माता-पिता और समस्त परिवार के लिए क्षमा याचना

“स्वर्ग में विराजमान प्यारे पिता, मैं अपनी विरासत के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं अपना परिवार/समुदाय से प्राप्त कई अच्छी चीजों की सराहना करता हूँ ***(उनका नाम ले...)*** मैं मानता हूँ कि मेरे परिवार/समुदाय में नकारात्मक तरीके भी पाये जाते है। मैं अपने पूर्वजों और परिवार/समुदाय के लोगों को ***(यदि आप उनका नाम जानते है तो नाम ले)*** उनके पापों और बुरी बातें जो उन्होंने सोची, कही और की उनके ***(उनके विशिष्ट पापों को जिनके लिए उन्हें क्षमा कर रहे है उदाहरण के लिए, गाली, नकारना, आलोचना का उल्लेख कीजिए)*** लिए उन्हें क्षमा करने के लिए चुनता हूँ। कृपया मेरे और मेरे परिवार/समुदाय के जानबूझकर या अनजाने में किए गये इन पापों को क्षमा करें।

“कृपया मुझे और मेरे पूरे परिवार/समुदाय को यीशु के लहू से शुद्ध करें और इस नकारात्मक तरीके ***(नकारात्मक तरीके का नाम दें ...)*** को रोकें। यीशु मसीह के नाम के अधिकार में, मैं अपने और अपने परिवार/समुदाय को प्रभावित करने वाले हर पीढ़ी के श्राप को तोड़ता हूँ और स्वर्ग में विराजमान पिता, मैं आपसे, हमें बुराई से दूर करने की प्रार्थना करता हूँ। कृपया मेरे और मेरे परिवार/समुदाय से इन पापों और श्रापों के सभी परिणामों को दूर करें।

“मैं स्वयं को और अपने परिवार/समुदाय को आशीष देता हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ पिता कि हमें भी आशीष दें। मुझे और मेरे परिवार/समुदाय को क्षमा करने के लिए धन्यवाद। कृपया मेरे हृदय में (फिर से) आइए और मुझे पूरी तरह से पवित्र आत्मा से भर दीजिए। यीशु के नाम में। आमीन।”

याद रखें, अगर हम इन पापपूर्ण व्यवहारों को फिर से करते हैं, जिनके लिए पहले से ही परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कर चुके हैं, हम फिर से शाप के अधीन आ सकते हैं। हमें अपने पाप को फिर से स्वीकार करना चाहिए, उससे दूर हो जाना चाहिए, परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए और हमें उससे क्षमा याचना करने और हमें बदलने में मदद करने के लिए कहना चाहिए।

> गवाही
>
> **यीशु ने मेरे एक प्राचीन श्राप को हटाया**
>
> *"मेरे परिवार में कई अधर्मी तरीके थे, हालाँकि मेरे माता-पिता दोनों 'नया जन्म' पाए मसीही थे। अनजाने में, मैं अपने माता-पिता, दादा-दादी और परदादा-दादी के समान पापों में पड़ गया! मैं खुद से नफरत करता था और जब मैं बच्चा ही था तभी आत्महत्या का प्रयास किया था। मेरी प्रारंभिक स्मृति से, मेरी बहन के साथ मेरे खराब संबंध थे। जब मैं किशोर अवस्था में पहुँचा तब मैंने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लिया और मेरा 'नया जन्म' हुआ था। तब आत्महत्या के विचार आना बंद हो गए लेकिन मैं अपने आप से नफरत करता रहा और अपने लिए नकारात्मक शब्द बोलता रहा। वर्षों बाद, हताशा में, मैं प्रार्थना सेवकाई में शामिल हुआ। मेरी बहन और मेरे बीच की नफरत मेरे पिता के समुदाय और मेरी मां के समुदाय के बीच एक अनसुलझी, सदियों पुरानी नफरत में पैदा हुई थी। मैंने उनके पापों को अंगीकार किया और इस संघर्ष के दोनों पक्षों के लोगों को क्षमा कर दिया। मैंने परमेश्वर से उन्हें क्षमा करने के लिए कहा। यीशु के नाम पर, प्रार्थना सेवक ने मेरे श्राप को तोड़ा। मैंने अपने अंदर एक आंतरिक शांति की बाढ़ महसूस की (मैंने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था)। मेरे अंदर का युद्ध थम गया। अब तक मेरे हृदय में आंतरिक शांति बनी हुई है। मेरी बहन और स्वयं के प्रति मेरी नफरत दूर हो गई है।"*

पिछली पीढ़ियों को क्षमा करने की प्रार्थना को किसी भी समूह में विस्तारित किया जा सकता है जिसका प्रतिनिधित्व हम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक महिला अन्य महिलाओं की ओर से पापों को अंगीकार कर सकती है; एक कलीसिया का सदस्य उस कलीसिया और समस्त कलीसिया की ओर से पापों को अंगीकार कर सकता है; एक समुदाय का व्यक्ति उस पूरे समुदाय आदि की ओर से पापों को अंगीकार कर सकता है। तब वे परमेश्वर से इन समूहों/लोगों के पापों को क्षमा करने के लिए कह सकते हैं। इस तरह यह **मध्यस्थता** की प्रार्थना बन जाती है। यह मध्यस्थता का तरीका मूसा, दानिय्येल, नहेम्याह और अन्यों ***(निर्गमन 32:9-14, 34:5-9, दानिय्येल 9:2-23, नहेम्याह 1:4-7)*** साथ ही साथ यीशु द्वारा स्थापित किया गया था।

यूहन्ना 20:23 में प्रभु यीशु ने कहा, *"जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं; जिनके तुम रखो, वे रखे गए हैं।"* क्षमा की प्रार्थना सामर्थी और प्रभावी होती है और इसके दूरगामी परिणाम होते हैं। इसलिए अकसर हम लोगों, स्थानों और यहाँ तक कि समुदायों और राष्ट्रों की आलोचना करते हैं। अगर हम इसकी अपेक्षा क्षमा करें और आशीष दें, तो परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं से समुदायों और राष्ट्रों को बदल देंगे।

परिशिष्ट में दी गई समस्त 'पीढ़ीगत आशीष की रिहाई प्रार्थना' उन पापों से विकसित होती है जो पवित्रशास्त्र के अनुसार शाप से जुड़े हैं। कृपया इसे धीरे-धीरे और ध्यान से पढ़ें, और अगर आपको लगता है कि आपने या आपके समस्त परिवार के किसी सदस्य ने इस प्रार्थना में सूचीबद्ध पापों में से कोई भी पाप किया होगा, तो हमारा सुझाव है कि आप उनके लिए प्रार्थना करें। अगर आपको नहीं लगता कि आप या आपके पूर्वज शायद ऐसे काम कर सकते थे - तो फिर से सोचें! वे

पवित्रशास्त्र के अधीन हैं क्योंकि लोगों ने ये पाप किए हैं। आप प्रार्थना को '**शायद**' प्रार्थना के रूप में प्रार्थना कर सकते हैं क्योंकि हम में से कोई भी पूरी तरह से नहीं जानता कि हमारे पूर्वजों ने क्या किया था। यह प्रार्थना मरियम्मा थम्पी[7] द्वारा व्यवस्थाविवरण 27 से विकसित एक प्रार्थना के अनुरूप की गई है। अपने हृदय से प्रार्थना करने के बाद, यदि आपके जीवन पर कोई श्राप था, तो वह अब टूट गया है! आप उन सभी आशीषों को प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र हैं जो परमेश्वर अपने अनमोल बच्चे के रूप में आप पर बरसाना चाहता है।

गवाही

पीढ़ीगत श्रापों पर यीशु की सामर्थ्य मेरे परिवार को उद्धार की ओर ले आई

"मेरे पिता के कई व्यभिचारी रिश्ते थे और इसने मेरी माँ को शराबी बनने के लिए प्रेरित किया। मेरे माता-पिता और दादा-दादी जादू टोना में शामिल थे। मेरे भाइयों और बहनों और उनके बच्चों का जीवन उसी दु:खद तरीकों पर चल रहा था। एक दिन, मुझे अपने पिता को यह सब समझाने का अवसर मिला और उन्होंने देखा कि कैसे उनके सभी बच्चों और पोते-पोतियों पर पीढ़ीगत पापों का प्रभाव पड़ रहा है। वह देख सकते थे कि उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है - उसे अपने पूरे परिवार को प्रभावित करने वाले श्रापों को तोड़ने के लिए यीशु की आवश्यकता थी। वह आश्वस्त और दोषी ठहराया गया था। वह अपने घुटनों पर गिर गया और यीशु से उसे क्षमा करने के लिए कहा और यीशु से हमारे परिवार से श्राप को दूर करने के लिए कहा। कलीसिया में मेरे पिता को यीशु की स्तुति में हाथ उठाते हुए देखना आश्चर्यजनक है! वह एक साल पहले था। तब से मेरी बहन ने भी यीशु पर विश्वास करना शुरू किया, जो हमारे परिवार की सबसे बड़ी 'मसीह विरोधी' थी।"

[7] मरियम्मा थपी: बैटर दैन वैपनस् ऑफ वॉर (2009), एडवांटेज इंस्पिरेशनल।

बपतिस्मा

पानि का बपतिस्मा का संस्कार

किसी के "नए जन्म" ***(यूहन्ना 3:3-7)*** लेने के बाद और यीशु मसीह पर विश्वास रखना कि वही मेरा प्रभु और उद्धारकर्ता है, बाईबल बताती है कि, यीशु की तरह, हमें बपतिस्मा लेना चाहिए: "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है" ***(मत्ती 3:15)***। यूहन्ना का बपतिस्मा अंगीकार और मन फिराव का बपतिस्मा था जो दर्शाता है कि उस व्यक्ति ने अपने पापों से मन फिराव किया और परमेश्वर की ओर फिर गया। यीशु 100% मनुष्य और 100% परमेश्वर था और उसने कभी भी पाप नहीं किया ***(2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 1:19, 2:22)***। परन्तु उसने हमें और हमारे पाप के साथ पहचान के लिए यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया।

> *पानि का बपतिस्मा यीशु मसीह में आंतरिक विश्वास की बाहरी अभिव्यक्ति है।*

बपतिस्मा का अर्थ है 'डुबाना'। मसीही पानि का बपतिस्मा से किसी व्यक्ति की पहचान मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के साथ की जाती है। पानी में नीचे उतरना हमारे पुराने पापी जीवन की मृत्यु और गाड़े जाने का प्रतिनिधित्व करता है; पानी से बाहर आना यीशु मसीह[8] का अनुसरण करने के एक नए जीवन में हमारे पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व करता है ***(रोमियों 6:1-7; 1 कुरिन्थियों 15:3-4; कुलुस्सियों 2:12)***। हमारे मसीह के शरीर, उनके चर्च का हिस्सा होने का बाहरी संकेत (100%) है ***(गलातियों 3:27)***।

यीशु के वचनों और प्रेरितों की शिक्षा से यह स्पष्ट है कि पानी के बपतिस्मा का एक विश्वासी के जीवन में बहुत महत्व है ***(मत्ती 22:11; मरकुस 16:16***; ***प्रेरितों के काम 2:37-38; गलातियों 3:27***)। बाईबल से यह भी स्पष्ट है कि आरम्भिक कलीसिया में, विश्वासियों ने जितनी जल्दी हो सके यीशु में बपतिस्मा लिया था, जब उन्होंने विश्वास के द्वारा उन्हें अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया था ***(प्रेरितों के काम 8:35-38, 9:17-18, 10:42-48, 16:27-33)***। यीशु ने अपने अनुयायियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी। बपतिस्मा यीशु मसीह की आज्ञाकारिता का दूसरा चरण है, *"मन फिराव करो और बपतिस्मा लो।"* ***(प्रेरितों के काम 2:38)।***

---

[8] रेव. डेरेक प्रिंस, फाउंडेशन फॉर क्रिश्चियन लिविंग, डेरेक प्रिंस मिनिस्ट्रीज् (2004). अनुमति के साथ।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

"पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" ***(इफिसियों 5:18)***

"यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा 'मैं तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परंतु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।" ***(मत्ती 3:11)***

"अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।" ***(लूका 11:13)***

जब परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देता है तो हम उसकी *"ऊपर से सामर्थ्य"* प्राप्त करते हैं ***(लूका 24:49; प्रेरितों के काम 1:8)***। यह बपतिस्मा ऊपर से पवित्र आत्मा में पूर्णतः डूबना है। यह परमेश्वर की ओर से सीधे हमारे पास आ सकता है ***(प्रेरितों के काम 2:1-4, 4:31, 10:44-47)*** या यह किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जो पहले से ही पवित्र आत्मा में बपतिस्मा ले चुका है ***(प्रेरितों के काम 8:14-19, 9:17, 19:6)***।

चाहे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा सीधे परमेश्वर की ओर से हो या किसी अन्य विश्वासी के हाथों से, इसका उद्देश्य परमेश्वर से अलौकिक सामर्थ प्राप्त करना है ताकि हम यीशु मसीह के सुसमाचार को अविश्वासीयों के साथ प्रभावी ढंग से साझा कर सकें। इस प्रकार प्रेरितों के काम 2 में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रकट हुआ; पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बाद, पतरस निडर हो गया और सामर्थ और बड़े प्रभाव के साथ सुसमाचार का प्रचार करने लगा था।

जब पवित्र आत्मा हम में वास करता है, तो वह हमारे चरित्र में सुधार करता है और हमें फल, अर्थात् प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, दया, भलाई, नम्रता, विश्वास योग्यता और आत्म-संयम को उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है **(गलातियों 5:22)**।

यह पवित्र आत्मा का फल है जिसे हमें दूसरे विश्वासियों में देखना चाहिए और दूसरे को हम में देखना चाहिए। प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस फल के और भी उदाहरण हैं। पवित्र आत्मा के

बपतिस्मा ने विश्वासियों को एक दूसरे से प्रेम करते हुए हृदय और दिमाग में इतना एकजुट होने के लिए सक्षम किया कि उन्होंने एक दूसरे के साथ अपना सब कुछ साझा किया ***(प्रेरितों के काम 2:42-47, 4:32-35)***।

एक नवविवाहित दंपति एक ऐसे फ्लैट में रहने लगे जिसकी बालकनी में एक सफेद कबूतर रहता था। बहुत समय नहीं बीता था कि उनमें पहली बहस शुरु हो गई और वह एक-दूसरे के खिलाफ द्वेष रखने लगे। तब उन्होंने देखा कि जब उन्होंने बहस शुरू की थी तो कबूतर वहाँ से चला गया था। जब उन्होंने एक-दूसरे को क्षमा किया और मेल-मिलाप किया और शांति ने घर में वास किया, तो उन्होंने देखा कि वह कबूतर भी लौट आया है। थोड़ी देर बाद उस दंपति ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वे उन्हें एक साथ रहने में मदद करें ताकि कबूतर फिर कभी उनसे दूर न हो।

(आरटी केंडल, पवित्र आत्मा की संवेदनशीलता, 2001)

यदि यह फल हममें नहीं दिखता है तो हमें विचार करना चाहिए कि क्यों नहीं। प्रार्थना और समझ के द्वारा हम पता लगा सकते हैं कि वे कौन से कारण या **मूल** समस्याएँ हैं जो हमें फल उत्पन्न करने से रोक रही हैं।

"यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" ***(यूहन्ना 13:35)***

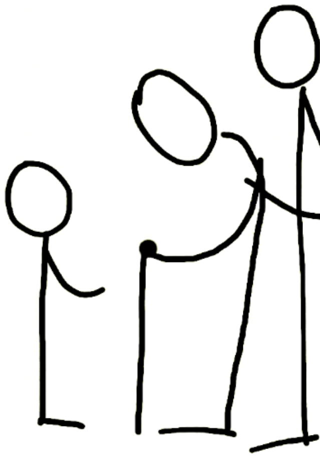

इस अलौकिक सामर्थ और प्रेम के अतिरिक्त, हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा वरदान भी प्राप्त करते हैं। 1 कुरिन्थियों 12:7-11 उन्हें ज्ञान, बुद्धि, महान विश्वास, अन्य भाषा (भाषाओं), इन भाषाओं की व्याख्या, ज्ञान के शब्दों, आत्माओं की समझ, चमत्कार और उपचार के रूप में सूचीबद्ध करता है। जब आप ये वरदान प्राप्त करते हैं तो आपको उनका उपयोग करना चाहिए! उदाहरण के लिए, अन्य भाषा का उपहार प्राप्त करने के बाद आपको प्रतिदिन इसी प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए। बाइबल बताती है कि अन्य भाषाएँ बोलना ईश्वर प्रदत्त प्रार्थना भाषा है, यह रहस्यमय है और यह उस व्यक्ति को प्रोत्साहित करती है, आराम देती है और उसका विकास करती है जो इसका अभ्यास करता है ***(1 कुरिन्थियों 14:1-3)***।

जब हम नए सिरे से जन्म लेते हैं तो पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में प्रवेश करती है ***(रोमियों 8:9-11; 2 कुरिन्थियों 13:5; कुलुस्सियों 1:27)***। तब हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर सकते हैं ***(मत्ती 3:11)***। पवित्र आत्मा से भरना एक बार की घटना नहीं है। उस समय से हम लगातार पवित्र आत्मा से भरे जा सकते हैं। यूहन्ना 20:22 में, यीशु ने चेलों पर फूँका और कहा, "पवित्र आत्मा प्राप्त करो।" प्रेरितों के काम 2:4 में सभी विश्वासियों ने, जिनमें से कुछ पहले के लोग भी थे, पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लिया और अन्य भाषाएं बोलीं। अन्य भाषा में बोलना आरम्भिक कलीसिया के लिए यह संकेत था कि लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया था ***(प्रेरितों के काम 10:44-46, 19:1-6)***। फिर प्रेरितों के काम 4:31 में उन्हीं लोगों में से कुछ पवित्र आत्मा से (फिर से) भर गए। हमें लगातार पवित्र आत्मा से भरे रहने और पवित्र आत्मा के नेतृत्व में बने रहने की आवश्यकता है।

गवाही

यीशु ने मुझे पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा दिया

"मैं और मेरे दो दोस्तों ने इस शिक्षण सामग्री को पढ़ा और हमारे कुछ मुद्दों के लिए प्रार्थना की - पापों को स्वीकार किया और मन फिराव किया और उन लोगों को क्षमा की जिन्होंने हमें कष्ट पहुंचाया था।। हम सब स्वतन्त्र महसूस कर रहे थे! फिर, जब हमने पवित्र आत्मा को हमें भरने के लिए आमंत्रित किया, तो हम तीनों ने अलग-अलग भाषाओं में बात की और हमारे दिलों में जलन महसूस की; हमें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा दिया गया"

हमारे जीवन में और अधिकाई से पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के लिए हमें केवल अपने स्वर्गीय पिता से पूछना है। हम उनसे पवित्र आत्मा के सभी वरदानों के साथ-साथ यीशु के लिए साहसपूर्वक गवाही देने की क्षमता की याचना भी कर सकते है; ताकि हम हमारे संगी मसीहियों और अविश्वासीयों के साथ, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं से भी प्रेम रख सकें। हमें तब तक परमेश्वर से माँगते और आग्रह करते रहना चाहिए जब तक कि हम संतुष्ट न हो जाएँ कि हमें प्रतिज्ञा *"जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तो तुम सामर्थ्य पाओगे"* ***(लूका 11:13; प्रेरितों के काम 1:8)***। हमें सामर्थ्य प्राप्त होगी - साक्षी देने की सामर्थ्य, वही सामर्थ्य जिससे यीशु कार्य कर रहे थे, दूसरों को प्रेम करने की सामर्थ्य और जयवन्त जीवन जीने की सामर्थ्य।

आत्मिक विकास एक प्रक्रिया है। एक विश्वासी के रूप में परिपक्व होने के लिए, हमें अपने जीवित परमेश्वर के करीब आने की आवश्यकता है। हमें लगातार बाईबल पढ़ते रहना चाहिए और उसके वचन पर मनन करना चाहिए; सुसमाचार के तथ्यों पर विश्वास करते रहें; परमेश्वर के वादों का प्रत्युत्तर देते रहना; मन फिराव करते रहना, क्षमा करते रहना, अपने आप को यीशु को समर्पित करते रहना; परमेश्वर के प्रेम से भरते रहना, उसे हमारे अंदर और हमारे द्वारा कार्य करने के लिए

आमंत्रित करते रहना, उसकी पवित्र आत्मा से नए सिरे से भरने के लिए और उसकी आज्ञाओं के आज्ञाकारी बने रहने के लिए कहते रहना चाहिए।

प्रार्थना की सेवकाई में, मन फिराव और क्षमा के हर सत्र को यीशु और पवित्र आत्मा को हमारे हृदयों और जीवन में और अधिक गहराई से आने के लिए आमंत्रित करने वाली प्रार्थनाओं के साथ समाप्त करना अच्छा है। यही वह प्रक्रिया है जिसे हम 'आत्मिक सांस लेना' कहते हैं जिसे मन फिराव के खंड में बताया गया हैं। इसे पाप बाहर, यीशु अन्दर के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है। जैसे पवित्र आत्मा हमारे हृदयों को भरता है और उमड़ता हुआ जीवन जीता है, वैसे ही हम में अधर्मी बातों के लिए कोई स्थान नहीं है ***(मत्ती 12:43-45)***।

गवाही

दोहरा बपतिस्मा!

"एक मनुष्य जिस को मैंने बपतिस्मा दिया, वह पानि में से अन्य भाषा बोलते हुए बाहर निकला! इसने मुझे पानी और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के महत्व की पष्टि की।"

किसी के साथ प्रार्थना करते समय, जब वे पवित्र आत्मा को उन्हें भरने के लिए आमंत्रित करते हैं, तो प्रतीक्षा करें, निरीक्षण करें और आशीष दें कि परमेश्वर उनमें क्या कर रहा है। फिर व्यक्ति को आशीष दें।

तो इस प्रकार की प्रार्थना ऊँचे शब्दों से करनी चाहिए।

अभिषेक और शुद्धिकरण के लिए प्रार्थना।

"स्वर्ग में विराजमान पिता, मैं आपको अपना संपूर्ण अस्तित्व, आत्मा, प्राण और शरीर देता हूँ। मैं अब आपको आमंत्रित करता हूँ कि मुझे पूरी तरह से अपनी पवित्र आत्मा से भर दें, ताकि मैं पूरी तरह से आपका हो जाऊँ। यीशु' के नाम में। आमीन।"

परमेश्वर को सुनना व आज्ञापालन करना

ईसाई होने का उद्देश्य पिता ईश्वर के साथ संबंध बनाना है - इसके लिए हमें ईश्वर से बात करने और ईश्वर की बात सुनने की जरूरत है। हम उसे जवाब देते हैं और वह हमें जवाब देता है। पुराने और नए नियम दोनों में कई वचन प्रभु हमारे परमेश्वर को सुनने और उसकी आज्ञापालन की आवश्यकता पर बल देते हैं। यीशु भी इस पर बल देते हैं। ये कुछ वचन हैं जहाँ वह कहते हैं:

"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं।" ***(यूहन्ना 10:27)***

"हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।" ***(यूहन्ना 6:68)***

"उस बादल में से यह शब्द निकला, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो"" ***(मरकुस 9:7)***

"इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।" ***(मत्ती 7:24)***

"मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते है।" ***(लूका 8:21)***

"जो मुझे से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परंतु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता हैं।" ***(मत्ती 7:21; लूका 6:46-49)***

जैसे कि हम ऊपर दिए गए मत्ती और लूका दोनों के पदों में यीशु के वचनों से जान सकते हैं, कि परमेश्वर की इच्छा के प्रति हमारी आज्ञाकारिता का अनंत काल के लिए मूल्यवान है। प्रत्येक विश्वासी के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वह परमेश्वर को उनसे बात करते हुए सुनें और *"जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।"* ***(यूहन्ना 2:5)***

एक जयवन्त मसीही जीवन जीने के लिए प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर से सुनना अत्यन्त आवश्यक है!

परमेश्वर हम से कई अलग-अलग तरीकों से बात करते है। जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते और उस पर मनन करते हैं, तो वचन हमारे ऊपर उछलकर हमें प्रभावित कर सकते हैं। कभी-कभी यह बहुत शक्तिशाली होता है जिससे हमारे शरीर में झुनझुनी पैदा हो सकती है या हमें रुला सकता है। कई बार परमेश्वर हमें दर्शन और सपनों के द्वारा बाईबल के चिन्हों का प्रयोग कर चीजों को प्रकट करते है। वह हमारे आसपास की वस्तुओं के द्वारा भी बात करते हैं। पिता परमेश्वर अक्सर धीमी फुसफुसाहट में बोलना पसंद करते हैं ***(1 राजाओं 19:12)***। उसकी आवाज हमारी चेतना में एक विचार की तरह आती है। प्रायः जब हमारे पास कोई ऐसा विचार आता है जो शुद्ध, धर्मी और सकारात्मक होता है तो पवित्र आत्मा हमसे बात कर रहा होता है। याद रखें, पवित्र आत्मा शान्ति पहुँचाता है और शैतान केवल दोष ही लगाता है।

गवाही

मैं यीशु से मिला

"मैं कई सालों से बहुत दुःखी और आत्महत्या के विचारों से जुझ रहा था। मैंने अपने आत्महत्या के विचारों से मन फिराव किया और यीशु को अपने हृदय में आने के लिए कहा। मैंने अपने सामने यीशु का एक दर्शन देखा। वह बहुत बड़ा था और बहुत दयालु दिखता था। उसने मुझे अपनी बाँहों में ले लिया और मुझे उठा लिया और कहा, "अब मेरे गवाह बनो और याद रखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" मैं खुशी से भर गया और सभी को बताना शुरू कर दिया कि मुझे क्या हुआ था। कभी-कभी लोगों को यीशु के बारे में बताना आसान नहीं होता। तभी मैं स्वयं को याद दिलाता हूँ कि उसने मेरे लिए क्या किया है और वह अब भी मेरे साथ है।"

परमेश्वर को हमसे बात करते हुए सुनने का एक और तरीका है। हम उसकी आराधना कर सकते हैं अन्य भाषा बोल सकते है और उसके साथ अपने हृदयों को ठीक कर सकते हैं, आवश्यकतानुसार मन फिराव और क्षमा कर सकते हैं ***(भजन संहिता 139:23-24)***। फिर **शान्त होकर** बैठे और उससे एक प्रश्न पूछे। पहला विचार जो हमारे दिमाग में आता है, विशेषकर अगर यह विचार वह नहीं है जिसे हम सोच रहे थे, तो इसकी सबसे अधिक संभावना है कि परमेश्वर हमसे बात कर रहे हैं (यदि यह उनके लिखित वचन - बाईबल के अनुरूप है)। वह प्रेम पूर्वक मार्गदर्शन, सामर्थ्य, प्रोत्साहन और अपने बच्चों को उत्साहित करने के लिए बोलता है ***(1 कुरिन्थियों 14.3, इफिसियों 4:29; फिलिप्पियों 2:1)***।

मैंने लोगों को यह कहते सुना है कि "मैंने अपना काम परमेश्वर की सेवा करने के लिए छोड़ दिया"। उनके प्रति मेरी प्रतिक्रिया है, "आप अपने काम में परमेश्वर की सेवा क्यों नहीं कर रहे थे?"

(डंकन वाटकिंसन, आईआरनेट, 2004)

जब परमेश्वर बोलता है, तो वह चाहता है कि हम उसकी बातों पर ध्यान दें और उसका उत्तर दें। हमें 'उस स्थान' से दूर नहीं जाना चाहिए जहाँ हमें ईश्वर की उपस्थिति और उनकी निकटता का एहसास हो। इसके अलावा, हमें शान्त बैठना चाहिए, और यह सुनना चाहिए कि वह हमें और क्या प्रकट कर सकता है। हम उससे और स्पष्टीकरण मांग सकते हैं, उदाहरण के लिए, वह हमसे क्या चाहता है कि हम करें, उसका कुछ और विवरण जान सकते है। यदि वह हमसे कुछ करने के लिए कहता है, तो हमें उसे शीघ्रता से करके और जितना हो सके उतना अच्छा करते हुए उसकी आज्ञा माननी चाहिए। बाईबल में बहुत से लोगों ने ऐसा किया है, हालांकि यह अन्य लोगों को अजीब लगा था (उदाहरण के लिए उत्पत्ति 6-10 में नूह)। जब वह हमसे कुछ करने के लिए कहता है तो हमें उसे करने की आवश्यकता होती है, इस विश्वास के साथ कि पवित्र आत्मा हमारी सहायता करेगा। जैसा कि हम वह करते हैं जो वह हमसे कहता है, परमेश्वर वह कार्य करेगा जो केवल वह ही कर सकता है। जेल से अपने चमत्कारिक ढंग से भागने में ***(प्रेरितों के काम 12:7-8)***, पतरस ने वही किया जो उसे करने के लिए कहा गया था (उसने अपने जूते और वस्त्र पहन लिए और फिर स्वर्गदूत के पीछे हो लिया) क्योंकि परमेश्वर ने स्वर्गदूत को उसकी जंजीरों को तोड़ने और उसे रिहा करने के लिए भेजा था!

एक बूढ़ा व्यक्ति अपने बरानदा पर बैठा था, और अपने बीते जीवन को याद करते हुए परमेश्वर को अपनी आशीषों व बड़ी सेवकाई के लिए धन्यवाद दे रहा था। तब प्रभु ने उस से बात करना शुरु की, और कहा, "हे पुत्र, मैं ने तुझे अफ्रीका में मिशनरी होने के लिए बुलाया था।" वह आदमी चौंक गया और उसने तर्क दिया, परन्तु यहाँ मेरे बेटे की अपनी स्वास्थ्य समस्याएं थीं और हमें घर पर रहने की भी आवश्यकता थी क्योंकि यहाँ हमें अपने संयुक्त परिवार की देखभाल भी करनी थी!' और फिर से परमेश्वर ने कहा, यदि आप अफ्रीका चले गए होते तो आपके बेटे के साथ कभी ऐसा न होता।" इस बात के बाद उस व्यक्ति ने अपना शेष जीवन लोगों को परमेश्वर की बुलाहट का उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करने में बिताया जो कि परमेश्वर उनके जीवन में देता है।

(जोन हंटर, हीलिंग द होल मैन हैंडबुक, 2006)

यह जानने के लिए विवेक की आवश्यकता है कि क्या यह वास्तव में परमेश्वर बोल रहा है या हमारी देह या शत्रु के सुझाव तो नहीं हैं। परखने का आसान नियम यह है कि इसकी उत्पत्ति ज्योति के राज्य में हुई या अंधकार के राज्य में हुई है। विवेक के लिए एक आसान नियम यह देखना है कि क्या विचार की उत्पत्ति प्रकाश के साम्राज्य में है या अंधेरे के साम्राज्य में। यदि कोई कार्य किसी भी तरह से अंधकार के साम्राज्य से जुड़ा है, तो उससे दूर रहें और उससे कोई लेना-देना न रखें। शैतान सुझाव देता है ***(उत्पत्ति 3:1)***, परमेश्वर आदेश देता है ***(उत्पत्ति 1:3ff, 2:16-17)***।

जब परमेश्वर आपको कुछ नया या महत्वपूर्ण करने के लिए कहता है, तो वह अपने वचन की पुष्टि करेगा, आमतौर पर दो या तीन गवाहों द्वारा ***(व्यवस्थाविवरण 19:15; मत्ती 18:16)***। जब अन्य लोग आपके पास एक 'भविष्यवाणी' लेकर आते हैं, यदि वह परमेश्वर की ओर से है, तो यह आमतौर पर उस बात की **पुष्टि** होगी जो परमेश्वर ने **आपसे पहले ही कह दी है**। परमेश्वर दूसरे लोगों को आपकी पुष्टि के लिए संदेश देता है कि यह वास्तव में उसकी ही आवाज है और वह वास्तव में चाहता है कि आप उस सच्चाई को जानें जो वह आपको बता रहा है। कभी-कभी भविष्यवाणी का विवरण स्पष्ट नहीं होता है ***(1 कुरिन्थियों 13:9)***। हमें प्रार्थना पूर्वक यह समझने की ज़रूरत है कि भविष्यवाणी का क्या अर्थ है और इसका जवाब कैसे देना है। यदि इसमें कोई गतिविधि या कार्य करना शामिल है, तो वह चाहता है कि हम आज्ञाकारी बनें और इसे सामान्य रूप से, जितनी जल्दी हो सके, करें।

जब हम अपनी इच्छा के ऊपर परमेश्वर की इच्छा को प्राथमिकता देते हैं, तो हम उसके प्रति समर्पण कर रहे होते हैं। यह एक शासकीय बदलाव है: हमारे जीवन पर अपने शासन से लेकर हमारे जीवनों पर उसके शासन तक का; पाप और स्वयं का अनुसरण करने से लेकर यीशु के अनुयायी बनने और पवित्र आत्मा के प्रेमपूर्ण प्रबंधन के अन्तर्गत परमेश्वर के सेवक बनने तक का। हम वहाँ जाते हैं जहाँ वह चाहता है कि हम जाएं, हम वही करते हैं जो वह हमसे करवाना चाहता है, हम वही बोलते हैं जो वह हमसे बोलना चाहता है और हम वही बन जाते हैं जो वह चाहता है कि हम बनें। जब हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में अपनी इच्छा को प्रस्तुत करते हैं तो यह हमारे अपने जीवन में प्रभु की प्रार्थना का परिणाम होता है – *"तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो।"*। इसकी एक कीमत है लेकिन केवल जब हम अपनी इच्छाओं और क्षमताओं के प्रति 'मर' जाते हैं तभी हम ईश्वर की अलौकिक क्षमताओं में काम करना शुरू कर सकते हैं।

यह इस भजन के शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है: "यीशु को मैं सब कुछ देता, सब कुछ करता हूँ कुर्बान..."

यह आत्मिक उन्नति के लिए प्रेरित पौलुस की प्रार्थना है।:

"मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक या सारे घराने का नाम रखा जाता है, कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ; और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डाल कर, सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई,

*और गहराई कितनी है, और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे! आमीन।" **(इफिसियों 3:14-21)***

प्रेरित पौलुस ने अपनी आत्मिक उन्नति के बारे में इस प्रकार से कहा है:

*"मैं निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" **(फिलिप्पियों 3:14)***

*"तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें..." **(इब्रानियों 12:1-3)***

बुलाहट

बहुत से लोग अपनी उस बुलाहट को पूरा नहीं करते हैं जो यीशु ने उनके जीवन में दी है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि वे उनकी विशिष्ट बुलाहट और सेवकाई को नहीं जानते है। हमारी बुलाहट प्राकृतिक क्षमताओं का अधिकतम लाभ उठाने और ईश्वर से वरदान प्राप्त करने के बारे में **नहीं** है। इसके लिए एक अलौकिक वरदान की आवश्यकता होती है जिससे हम उसके द्वारा दिए गए कार्य को कर सकें। इस तरह से हमें पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना होगा, तब हमें पता चलेगा कि उनकी सामर्थ्य से ही कार्य पूरा हुआ था।

उन सभी गतिविधियों की सूची बनाएं जो आप परमेश्वर के लिए करते हैं, फिर अपने आप से पूछें: 'क्या मैं ये काम इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि उसने मुझे उन्हें करने के लिए कहा है? 'यदि उनमें से किसी के लिए भी उत्तर 'नहीं' या 'निश्चित नहीं' है, तो आपको फिर से विचार करने की आवश्यकता है।

(डंकन वाटकिंसन, आईआरनेट, 2004)

सर्वप्रथम, हमारी बुलाहट यीशु के समर्पित अनुयायी होने की है। चाहे हम किसी और के लिए काम करें या व्यापार करें, हम जो कुछ भी करें, हमें पूरी तरह से यीशु के प्रति समर्पित होना चाहिए। हमें यीशु से प्रार्थना करने, यीशु की

स्तुति करने, यीशु के बारे में गवाही देने और प्रभु यीशु के लिए पवित्र बनने के लिए स्वयं को समर्पित करना है। सी एच स्पर्जन ने इस प्रकार कहा है, "यह हमारा एक उद्देश्य है, हम उन लोगों के लिए ध्यान भंग करने वाली चिंताओं को छोड़ सकते हैं जिनके पास कोई उच्च बुलाहट नहीं है। वे राजनीति का प्रबंधन कर सकते हैं, वित्तीय समस्याओं को सुलझा सकते हैं, विज्ञान पर चर्चा कर सकते हैं, और आलोचना के अंतिम नए प्रश्नों को सुलझा सकते हैं, लेकिन हम शाही याजक, नियुक्त सदस्यों के रूप में प्रभु यीशु की सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित कर देंगे। यह हर विश्वासी का पवित्र कर्तव्य है।"

दूसरा, उसने सभी विश्वासियों को महान कार्य सौंपा ***(मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:46-48)***। वह तब तक नहीं लौटेगा जब तक कि प्रत्येक समूह के प्रत्येक व्यक्ति को सुसमाचार की खुशखबरी नहीं सुनायी जाएगी। यह वह जिम्मेदारी है जो उसने **प्रत्येक** विश्वासी को दी है।

यीशु लोगों को एक विशेष कार्य या बुलाहट भी देता है। यह महान आदेश से संबंधित एक विशिष्ट कार्य होता है।

उनकी विशिष्ट बुलाहट क्या थी, इस बारे में अनिश्चित, इस निर्देश-पुस्तिका के संकलनकर्ता कुछ समय के लिए इसके बारे में गंभीरता से प्रभु की ओर ताक रहे थे, तब उन्हें उसकी बुलाहट[9] को पहचाने के लिए निम्नलिखित प्रार्थना मिली। इस प्रार्थना को करने के तीन सप्ताह के भीतर, प्रभु ने उन्हें अपनी विशेष बुलाहट प्रकट की!

गवाही

यीशु ने हमें उन्नत किया

"मैंने और मेरी पत्नी ने इस निर्देश-पुस्तिका के हर पृष्ठ के माध्यम से प्रार्थना की, जिसमें बुलाहट की प्रार्थना भी शामिल है। कुछ ही हफ्तों के भीतर प्रभु ने मुझ पर प्रभाव डालना शुरू कर दिया कि मुझे जोखिम उठाना चाहिए, जिस सेवकाई में मैंने वर्षों से काम किया था, अब उसे छोड़ देना चाहिए और एक यात्रा शिक्षण सेवकाई शुरू करनी चाहिए। तीन महीने के भीतर ही परमेश्वर ने कुछ ऐसा किया जो हमारे लिए अकल्पनीय था। परमेश्वर ने मुझे अपनी नौकरी छोड़ने और मेरी पत्नी और मेरे लिए स्वावलंबी होने का रास्ता खोल दिया। मेरी पत्नी ने खुशी के आँसुओं के साथ कहा, "पहली बार, मुझे अपने परिवार के लिए आशा दिखी है।"

यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन पर अपनी बुलाहट को प्रकट करें तो आप इस प्रार्थना को कर सकते हैं।

[9] एस्तेर बेकर, मैं कभी बौद्ध भिक्षु थीं (2009), इंटरवर्सिटी प्रेस।

बुलाहट प्रकट करने की प्रार्थना।

“स्वर्गीय पिता, कृपया मुझे उन लोगों के लिए अपना हृदय दें जिनके लिए आप मुझे बुला रहे हैं। यीशु’ के नाम में। आमीन।”

जब हम अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को जान लेते हैं, तो इसे करना हमारे हित में होता है क्योंकि यह हमारे लिए परमेश्वर का सर्वोत्तम है। हम आश्वस्त हो सकते है क्योंकि यह हमारे लिए उसकी सही योजना है - जिसके लिए हमें सृजा गया था।

यदि आप अपने पैरो को हिलाने के लिए तैयार नहीं हैं तो परमेश्वर से आपके कदमों का मार्गदर्शन करने के लिए न कहें!

“क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्‍वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।” ***(इफिसियों 2:10)***

और यीशु ने वादा किया है कि वह हमेशा हमारे साथ रहेगा!

“...उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।” ***(मत्ती 28:20)***

एक बार जब हम अपनी बुलाहट में प्रवेश कर जाते है, तो बहुत उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे, परमेश्वर के बारे में और जानने के लिए व अपने आप को परिपक्व करने के लिए पवित्र आत्मा का फल (हमारा चरित्र) इसमें शामिल है। परमेश्वर हमें यीशु की तरह बनाना चाहता है। सीखने की इच्छा रखें, विनम्र बनें और ऐसे ही पीछे न हटे। मन फिराव, क्षमा याचना, सुनना और पवित्र आत्मा के अनुसार चलते रहें।

प्रार्थना सेवकाई के लिए व्यवहारिक विचार

इस प्रार्थना सेवकाई की देखभाल करने वाली कलीसिया या पादरी के पास व्यावहारिक विचारों के संबंध में एक सहमत नीति कथन होना चाहिए। इनके अभाव में, यहाँ कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं।

प्रार्थना सेवकाई के लिए दिशा-निर्देश

प्रार्थना सेवकाई को नियम के भीतर[10] और देखभाल करने वाले पादरी के समझौते और अधिकार के साथ काम करना होता है।

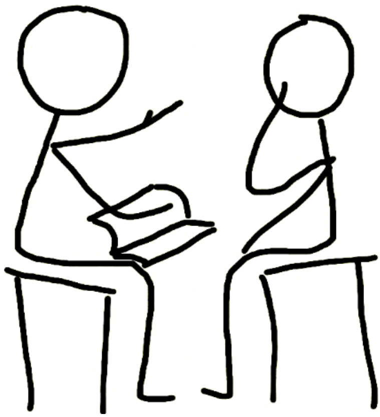

ध्यान दें: इस प्रकार की सेवकाई में जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है, उसे अपनी मन फिराव और क्षमा की प्रार्थना **उच्च स्वर** से करनी चाहिए। इस तरह उनकी मदद करने वाले प्रार्थना सेवक सुन सकते हैं, और बाद में उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं और उनके साथ सहमति में प्रार्थना कर सकते हैं ***(मत्ती 18:19)***। यदि व्यक्ति ने पहले कभी प्रार्थना नहीं की है, तो प्रार्थना सेवकों के लिए प्रार्थना में उनका नेतृत्व करना आवश्यक हो सकता है, लेकिन उन्हें तुरंत बाद में अपनी प्रार्थना अपने शब्दों में करनी चाहिए। आम तौर पर केवल अपने शब्दों में प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की प्रार्थना हृदय से आती है। उन्हें यह समझाया जाना चाहिए कि उन्हें किसी भी प्रकार की 'धार्मिक' भाषा का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है; परमेश्वर उनके हृदय को जानता है।

- जैसे भी संभव हो एक एकांत, शांत स्थान का चयन करें।
- प्रत्येक प्रार्थना सेवकाई सत्र की शुरुआत प्रार्थना के साथ करें। परमेश्वर के लिए समय को समर्पित करें और उनकी अगुवाई और मार्गदर्शन के लिए कहें।
- अकसर एक व्यक्ति की मदद करने के लिए दो प्रार्थना सेवक ठीक रहते है। प्रार्थना सेवकों में से कम से कम एक उसी लिंग का होना चाहिए जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है; यानी कि

[10] उदाहरण के लिए, भारत सरकार का यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम (2012 व 2019), किशोर न्याय अधिनियम (2015 व 2021), और घरेलू हिंसा अधिनियम (2012)।

स्त्री से स्त्री, पुरुष से पुरुष। जहाँ संभव हो, एक महिला को एक पुरुष की मदद करने की अनुमति न दें या एक पुरुष को अकेले एक महिला की मदद करने की अनुमति न दें। यदि एक विवाहित जोड़ा मदद के लिए एक साथ आता है, तो उनके साथ अलग-अलग बात करना और प्रार्थना करना बेहतर होता है जब तक कि कोई सफलता न मिले और वे सुलह के लिए एक साथ आने के लिए तैयार न हों।

- जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है उसे अपने हृदय से प्रार्थना सेवक पर भरोसा करने में कुछ समय लग सकता है, खासकर अगर उन्हें बहुत गहरी चोट और भावनात्मक घाव पहुँचे हैं।
- प्रार्थना सेवकाई सत्र के दौरान हमेशा पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन को सुनें। यदि प्रार्थना सेवकों में से किसी एक को लगता है कि उसके पास कुछ जानकारी के वचन या तस्वीर है, तो उसे सत्र के दौरान चुपचाप से दूसरे प्रार्थना सेवक के साथ साझा करना चाहिए और साथ में यह भी तय करना चाहिए कि आगे क्या करना है।
- बाईबल से उपयुक्त वचनों का उपयोग करते हुए, समस्या को हमेशा बाईबल के दृष्टिकोण से ही देखें । प्रत्येक प्रार्थना सेवक बाईबल को अच्छी तरह से जानने वाला हो ताकि मदद पाने वाले व्यक्ति के सामने आने वाले मुद्दों पर एक ईश्वरीय/बाईबल का परिप्रेक्ष्य देने में सक्षम हो।
- *"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"* ***(2 तीमुथियुस 2:15)***
- सुनहरे नियम का पालन करें, *"जो तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।"* ***(मत्ती 7:12)***
- प्रार्थना मंत्रियों को मंत्रालय प्राप्त करने वाले व्यक्ति के बारे में **गपशप नहीं** करनी चाहिए।
- अनुमत कानूनी सीमाओं के भीतर हमेशा गोपनीयता बनाए रखें। उदाहरण के लिए, POCSO अधिनियम के तहत, यदि व्यक्ति ने बाल शोषण का अनुभव किया है या कबूल किया है, तो वरिष्ठ पादरी, नामित अधिकारियों और पुलिस को जानकारी देनी पड़ सकती है। यदि व्यक्ति कुछ अवैध कार्य के करने को स्वीकार करता है (या कहता है कि उन्होंने यह पहले किया है), तो कानून के बारे में उनसे बात करना आवश्यक हो सकता है। वे प्रार्थना सेवकाई के सत्र को बंद कर सकते हैं। उन्हें यह भी बताया जाना चाहिए कि पहले जैसे होने के लिए परमेश्वर, उनके कार्यों से हुई क्षति के लिए, उनसे क्षतिपूर्ति की मांग कर सकता है। यह एक वित्तीय समझौता या क्षतिग्रस्त व्यक्ति से क्षमायाचना हो सकती है। यदि व्यक्ति कुछ अवैध कार्य के करने को स्वीकार करता है (या कहता है कि उन्होंने यह पहले किया है), तो कानून के बारे में उनसे बात करना आवश्यक हो सकता है। वे प्रार्थना सेवकाई के सत्र को बंद कर सकते हैं। उन्हें यह भी बताया जाना चाहिए कि पहले जैसे होने के लिए परमेश्वर, उनके कार्यों से हुई क्षति के लिए,

उनसे क्षतिपूर्ति की मांग कर सकता है। यह एक वित्तीय समझौता या क्षतिग्रस्त व्यक्ति से क्षमायाचना हो सकती है।

- सम्मानजनक रवैया बनाए रखें, जिसमें विशेष रूप से मदद पाने वाले व्यक्ति के साथ अधीर होना, चिल्लाना या धमकाना शामिल नहीं है। यदि व्यक्ति सत्र को रोकने के लिए कहता है, तो उसे तुरंत समाप्त कर देना चाहिए। यदि वे चाहें तो लौटने का अवसर दूसरी बार के लिए खुला छोड़ देना चाहिए।
- अगर मदद करने वाला व्यक्ति सहयोग नहीं कर रहा है, तो उन्हें छोड़ दें - उन्हें मजबूर न करें। हो सकता है कि वे इस तरह की सेवकाई से गुजरने के लिए तैयार न हों। यह सब परमेश्वर के समयानुसार होना चाहिए।
- जो कुछ उन्होंने किया, कहा, या किसी के साथ कुछ किया था, उसके लिए उनकी निंदा न करें।
- व्यक्ति द्वारा साझा की जाने वाली जानकारी का उपयोग न करें। किसी भी तरह से उनके खिलाफ जानकारी का उपयोग न करें - या तो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रचार में या अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए।
- जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है, उसे हमेशा देखें (**आंखें खोलकर!**), प्रार्थना करते समय भी - उन्हें या आपको कुछ भी हो सकता है!
- **हमेशा परमेश्वर को महिमा दें।** घमंड से बचे - परमेश्वर ने जो किया है उसका कुछ भी श्रेय न ले।

अतिरिक्त दिशा-निर्देश जब बच्चों के बीच सेवकाई हो रही हो

सेवकाई के पहले, दौरान और बाद में बच्चों की सुरक्षा सर्वोपरि है।

- प्रत्येक बच्चा एक आत्मा, प्राण और शरीर वाला व्यक्ति है। हानिकारक परिस्थितियों और पोषण की कमी से बच्चे क्षतिग्रस्त होते हैं।
- बच्चे के साथ प्रार्थना करने से पहले उनके माता-पिता या अभिभावक की सहमति प्राप्त की जानी चाहिए। बच्चे को भी प्रार्थना करने और प्रार्थना करवाने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- उनके साथ हर समय कम से कम दो भरोसेमंद बड़े लोग मौजूद होने चाहिए। धीरे-धीरे उनके साथ बातचीत करके या खेलकूद द्वारा बच्चे में विश्वास का निर्माण करना चाहिए।
- याद रखें कि उनकी स्वतंत्र इच्छा है। पहले बिना बताए और अनुमति मांगे कोई भी काम न करें।
- बच्चे को सिखाए। बच्चे को उनकी गलती समझने को पहचानने में मदद करें और बच्चे को सही चुनाव करने में मदद करें।
- बच्चे से 'सीधे' प्रश्न न पूछें। उदाहरण के लिए: 'क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें पीटा था?' इसके बजाय, इस तरह से सवाल पूछें: 'आपके पिता ने फिर क्या किया?'
- अपेक्षा रखें कि पवित्र आत्मा सीधे बच्चे से बात करें ***(1 शमूएल 2:18; मत्ती 18:3-4)***।
- अगर बच्चा बात करना या साझा नहीं करना चाहता है, तो थोड़ा समय लें और उन्हें सहज होने दें। अगर वे अभी भी बात नहीं करना चाहते हैं तो उन्हें जाने दिया जाना चाहिए।
- एक बच्चे के साथ यह सेवकाई लगभग 1 घंटे से अधिक नहीं चलनी चाहिए।
- अगर किसी बच्चे को पीटा गया है या दुर्व्यवहार किया गया है, तो उन्हें उस बिंदु पर आने के लिए प्रोत्साहित करें जहां वे संबंधित व्यक्ति को क्षमा कर दें। इसके लिए समय देना चाहिए।
- बाल शोषण को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। यदि बाल शोषण का शक होता है या आरोप लगाया जाता है (पुराने समय में ही क्यों न हुआ हो) तो उस बच्चे के हितों की रक्षा के लिए वरिष्ठ पादरी की देखरेख में सही कार्यवाही होनी चाहिए। यह उस बच्चे को उस स्थिति से बाहर निकालने के लिए भी सही है, यदि वह अभी भी शोषण का शिकार हो रहा है। बाल यौन शोषण अधिनियम (POSCO) के अन्तर्गत कई कानूनी प्रक्रियाएं हैं।

छुटकारे के लिए अतिरिक्त दिशा-निर्देश

विस्तार से लोगों के साथ प्रार्थना करते समय, उनका उद्धार हो सकता है लेकिन आमतौर पर बुरी आत्माओं के प्रकट होने के साथ यह नहीं हो पाता है। कभी-कभी जिन लोगों की मदद की जा रही है उनमें अजीब अभिव्यक्तियां हो सकती हैं (उदाहरण के लिए अप्राकृतिक थकान, झपट्टा मारना, कांपना, आंखों का घूमना)। यह एक विशिष्ट पाप का संकेत देता है, जिससे निपटने की आवश्यकता होती है। यदि ऐसा होने लगे तो उस पाप को प्रकट करने के लिए व्यक्ति का साक्षात्कार लेना चाहिए। जब व्यक्ति उस विशिष्ट पाप के लिए अपने हृदय से मन फिराव करता है या क्षमा करता है, तो प्रकटीकरण आमतौर पर बंद हो जाता है क्योंकि शत्रु के वैधानिक अधिकार को हटा दिया गया है ***(नीतिवचन 26:2; इफिसियों 4:27)***। आमतौर पर कोई भी बुरी उपस्थिति व्यक्ति को बिना किसी संकेत के धीरे से छोड़ देगी लेकिन कभी-कभी व्यक्ति को डकार, खांसी या उबासी आ सकती है। यदि शैतानी अभिव्यक्ति सेवकाई के लिए एक बाधा है, तो प्रार्थना सेवक यीशु के नाम से दुष्टात्मा को निकाल सकते हैं।

आमतौर पर किसी दुष्ट आत्मा से बात करने या चिल्लाने की आवश्यकता नहीं होती है। इसके बजाय, हमारा ध्यान हमेशा यीशु के लहू के शुद्धिकरण, क्षमाशील कार्य पर होना चाहिए; परमेश्वर की स्तुति करना, उससे प्रार्थना करना और आत्मा में प्रार्थना करना (अन्य भाषाओं में)। जैसे ही व्यक्ति पापों को स्वीकार करता है और मन फिराव करता है या अपने दिल से क्षमा करता है, परमेश्वर उनके पाप को हटा देते हैं और उन्हें उस पाप का फायदा उठाने वाली किसी भी बुरी उपस्थिति से मुक्त करते हैं। बाद में, व्यक्ति को पता चलेगा कि परमेश्वर ने उनमें शुद्धिकरण का कार्य किया है। वे स्वतंत्र और शांति महसूस करेंगे।

संकलनकर्ताओं ने पाया है कि जिन लोगों ने अभिव्यक्तियों का अनुभव किया है, उनमें से कुछ पहले से ही नया जन्म पाए हुए विश्वासी थे। कुछ मसीही कहते हैं कि क्योंकि प्रत्येक मसीही विश्वासी में "मसीह" वास करता है, तो एक मसीही के अन्दर दुष्टात्मा का होना असंभव है। आप दुष्टात्माओं के बारे में जो कुछ भी मानते हो, पर यह स्पष्ट है कि एक मसीही भी इस बुराई से प्रभावित हो सकता है। जब हम यीशु मसीह के प्रति अधिक से अधिक समर्पण करते हैं और उसे अपने जीवन में शासन करने और राज्य करने की अनुमति देते हैं, तो वह हमारे पापों और उनके प्रभावों को हमारे और हमारे आस-पास उजागर करता है और जब हम उससे कहेंगे तो वह उन्हें हम से दूर कर देंगे। और जब हम अपने पापी स्वभाव को क्रूस पर चढ़ाते हैं और दूसरों को क्षमा करते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता हमें बुराई से बचाता है ***(मत्ती 6:12-13)***।

सुझाई गई सेवकाई सत्र योजना

ध्यान दें: एक सेवकाई सत्र में 15 मिनट से लेकर कई घंटों तक का समय लग सकता है, इसलिए प्रति व्यक्ति 3 घंटे की योजना बनाएं। यदि व्यक्ति को 3 घंटे में मदद नहीं मिली है और समय सीमित है, तो सत्र समाप्त करें और बाद की तारीख के लिए उनके साथ एक और समय नियुक्त करें।

1. प्रार्थना सेवकाई के लिए दिशा-निर्देशों (उपरोक्त) का उपयोग करते हुए, जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है, उसे अपने दिल पर बोझ के साथ अपनी बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें विश्वास दिलाएं कि आप परमेश्वर के निकट आने में उनकी सहायता करने के लिए हैं। उनके लिए उपयुक्त वचनों को पढ़ें जैसे याकूब 5:16।
2. व्यक्ति के साथ बात करें और उनके जीवन में उन मुद्दों को सामने लाए जिनके लिए मन फिराव और/या क्षमा की आवश्यकता है। इससे यह स्पष्ट हो सकता है कि वह व्यक्ति जिसके बारे में प्रार्थना करने की अपेक्षा नहीं कर रहा हो वह भी सामने आ जाए। बाईबल से वचनों का उपयोग करते हुए इसे पूरी संवेदनशीलता से करें। **याद रखें**, वह पवित्र आत्मा है जो हमें दोषी ठहराती है - हम नहीं। उन्हें परमेश्वर के सामने पूरी तरह से ईमानदार होने के लिए याद दिलाएं।
3. जिस व्यक्ति की मदद की जा रही है, उससे उच्च स्वर से प्रार्थना करने का अनुरोध करें ताकि आप सुन सकें और उनकी प्रार्थनाओं से सहमत हों सके। बाईबल में पाप का अंगीकार हमेशा ऊँची आवाज से किया जाता है।
4. उस व्यक्ति की सुनें और उन्हें ध्यान से देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है। उनकी अभिव्यक्ति इंगित करती है कि पवित्र आत्मा को सुनते हुए आपको जारी रखना चाहिए, या रुकना चाहिए, या दिशा बदलनी चाहिए।
5. प्रार्थना करते समय परमेश्वर के साथ वास्तव में विशिष्ट और ईमानदार होने में उनकी सहायता करें, ताकि वे वास्तविक घटनाओं और लोगों के नामों का उल्लेख करते हुए प्रार्थना कर सकें, उदाहरण के लिए 'प्रभु की स्तुति हो, प्रभु की स्तुति हो, प्रभु की स्तुति हो' जैसे दोहराए जाने वाले वाक्यांशों के बजाय 'मैंने अपनी बहन को पीटा और उससे बहुत नाराज था, कृपया मुझे क्षमा करें' शब्दों को कहे। इससे उन्हें अपने पापों की जिम्मेदारी लेने में मदद मिलती है। उन्हें पाप के परिणामों के बारे में प्रार्थना करने और उचित रूप में अधिक मन फिराव और क्षमा करने के लिए प्रेरित करें।

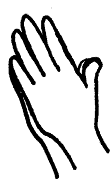

6. जब वे मन फिराव की प्रार्थना पूरी कर लें, तो उन्हें 1 यूहन्ना 1:8-10 पढ़ें और उन्हें विश्वास दिलाएं कि उन्हें इस विशिष्ट पाप के लिए क्षमा कर दिया गया है।

7. अधर्मी संबंधों को क्षमा करने और मन फिराव करने के बाद, आपको प्रार्थना में अधर्मी बंधन को तोड़ना चाहिए। आप अपनी बाईबल, *"आत्मा की तलवार"* का उपयोग करते हुए भविष्य सूचक रूप से इन असमान संबंधों को 'काट' सकते हैं। व्यक्ति द्वारा बोले गए किसी भी प्रतिज्ञा और नकारात्मक शब्दों को त्यागने के बाद, आपको उन पर (प्रार्थना में) यीशु के नाम के अधिकार में उनकी शक्ति को तोड़ना चाहिए और परमेश्वर से उन्हें यीशु के लहू से साफ करने के लिए कहना चाहिए।
8. उस व्यक्ति से यीशु और पवित्र आत्मा को अपने हृदय की गहराई में आने के लिए आमंत्रित करने के लिए और उन्हें फिर से परमेश्वर के प्रेम से भरने के लिए और उन्हें पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए कहें।
9. जिस व्यक्ति की सहायता की जा रही है उसे यीशु से बात करने के लिए कहने के लिए आमंत्रित करें और फिर **शान्त होकर** उसकी बात सुनें। यह एक बहुत छोटी प्रार्थना होनी चाहिए, फिर एक लंबी अवधि का मौन होना चाहिए जब वे परमेश्वर को उनसे बात करते हुए सुनते हैं। परमेश्वर उन्हें एक शब्द, एक वचन, एक चित्र या बस कुछ करने की 'भावना' या 'सोच' दे सकता है।
10. परमेश्वर को उस व्यक्ति की सेवा करने के लिए समय दें जबकि आप शान्त होकर उनके लिए आशीष माँगे।
11. कुछ समय बाद उस व्यक्ति से कहें कि वह आपको बताए कि क्या हुआ, वे कैसा महसूस कर रहे हैं और उन्हें क्या लगा कि परमेश्वर ने क्या किया है। यदि कोई ऐसा वचन है जिसे आप जानते हैं कि जो कुछ उन्होंने परमेश्वर से प्राप्त किया है, उसके अनुसार ठीक जान पड़ता है, तो उसे पढ़ें और उनके लिए लिखें। उदाहरण के लिए, यदि उन्होंने एक उज्ज्वल प्रकाश देखा है, तो उन्हें वचन में दिखाओ कि *"यीशु ने कहा, "मैं जगत की ज्योति हूँ।""* ***(यूहन्ना 8:12)।*** परमेश्वर आपको उस व्यक्ति के लिए एक 'वचन' या 'चित्र' दे सकता है।
12. उन्हें यह बताने के लिए कहें कि उन्हें यह सत्र कैसे लगा, यदि वे चाहे तो।
13. उस व्यक्ति को आशीष दो और जाने दो।
14. प्रार्थना सेवकाई सत्र के बाद, अन्य प्रार्थना सेवको के साथ प्रार्थना करें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको, विशेषकर आपकी स्मृति को, जो आपने सुना है, शुद्ध करें। परमेश्वर से कहें कि वह आपको अपने प्रेम से फिर से भर दे और आपको उसकी पवित्र आत्मा से नए सिरे से परिपूर्ण कर दे।

परिशिष्ट

नए नियम में मन फिराव की सूची

*"क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।" **(रोमियों 3:23)***

पाप परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को तोड़ता है और हमें उससे अलग करता है। नए नियम की सिर्फ इक्कीस सूचियाँ हैं जिनमें एक सौ से अधिक पाप हैं। इन सूचियों में दस आज्ञाएं शामिल हैं, चौथी आज्ञा को छोड़कर - सब्त का पालन करना ***(रोमियों 14:5-6)***। वे यीशु की नई आज्ञा को गहरा अर्थ देते हैं: *"मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है।" **(यूहन्ना 13:34)***

हमारे मन में कहीं न कहीं हमारे पापों का आभास होता है, लेकिन हमें इन्हें याद रखने में कठिनाई हो सकती है। पवित्र आत्मा इसे जानता है और इसमें हमारी सहायता करेगा।

*"हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नही, और अनंत के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।" **(भजन संहिता 139:23-24)***

*"परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।" **(यूहन्ना 14:26)***

जब आप इन वचनों को पढ़ते हैं तो आप परमेश्वर से यह दिखाने के लिए कह सकते हैं कि आपने कहाँ पर पाप किया है। अब आप पापों से मन फिराव कर सकते हैं!

मत्ती15:18-20

मरकुस 7:21-23

रोमियों 1:29-32

रोमियों 13:7-9

रोमियों 13:13-14

1 कुरिन्थियों 5:9-11

1 कुरिन्थियों 6:9-10

2 कुरिन्थियों 12:20-21

गलातियों 5:19-21

इफिसियों 4:17-19

इफिसियों 4:25-31

इफिसियों 5:3-4

कुलुस्सियों 3:5-6

कुलुस्सियों 3:8-9

1 तीमुथियुस 1:9-10

2 तीमुथियुस 3:1-5

तीतुस 3:3-5

1 पतरस 2:1

1 पतरस 4:2-4

प्रकाशितवाक्य 21:8

प्रकाशितवाक्य 22:14

मन फिराव के अनेक लाभ हैं। लाभ बताते हुए कुछ वचन हैं:

भजन संहिता 19:12-13

भजन संहिता 32:1-5

भजन संहिता 66:16-20

नीतिवचन 28:13

यशायाह 55:7

लूका 13:3

प्रेरितों के काम 17:30

1 पतरस 3:7, 12

मन फिराव के सामान्य मुद्दे

यह मन फिराव के मुद्दों की पूरी सूची नहीं है बल्कि केवल मार्गदर्शन के लिए है। यदि हम किसी गतिविधि में भाग लेते हैं या कुछ ऐसा करते हैं जो परमेश्वर के वचन, बाईबल के विपरीत है, तो यह पापपूर्ण है और परमेश्वर चाहते हैं कि हम इसे रोकें, इसका मन फिराव करें और उनकी क्षमा प्राप्त करें। यदि हम जो कुछ कर रहे हैं उस पर हम असुखद महसूस करते हैं, तो हो सकता है कि पवित्र आत्मा हमें दोषी ठहरा रहा हो और हमें दिखा रहा हो कि यह गलत है।

''यदि आप कुछ ऐसा करते हैं जिसे आप सही नहीं मानते हैं, तो आप पाप कर रहे हैं।'' ***(रोमियों 14:23ब; याकूब 4:17)***

प्रभु, आपका वचन कहता है ...

गाली देना	*1 कुरिन्थियों 6:10*
व्यभिचार	*मत्ती 5:28-32; 1 कुरिन्थियों 6:9-10*
लालच	*मत्ती 6:33; गलातियों 5:20*
तावीज	*यहेजकेल 13:20*
क्रोध	*नीतिवचन 15:18; मत्ती 5:22; गलातियों 5:20; इफिसियों 4:26-32; कुलुस्सियों 3:8; याकूब 1:19-21*
ज्योतिषी गणना	*यशायाह 47:13-14; यिर्मयाह 10:2*
बुरे विचार	*मरकुस 7:21; रोमियों 12:2; फिलिप्पियों 4:8*
बुरे शब्द	*नीतिवचन 18:21; मत्ती 5:22; मत्ती 12:36-37; इफिसियों 4:29; फिलिप्पियों 4:8; याकूब 1:26, 3:10*
कड़वाहट	*इफिसियों 4:31; इब्रानियों 12:15*
ईश-निन्दा	*निर्गमन 20:7; 2 तीमुथियुस 3:2*
डींग मारना	*याकूब 4:16*
लड़ाई-झगड़े	*इफिसियों 4:31; याकूब 4:1-2*
रिश्वत खाना	*निर्गमन 23:8; व्यवस्थाविवरण 10:17, 16:19-20; अय्यूब 36:18; सभोपदेशक 7:7; लूका 3:14*
आकर्षण	*यहेजकेल 13:18, 20*
धोखा-धड़ी	*नीतिवचन 20:23; मरकुस 7:22; लूका 16:10-13; रोमियों 13:6-7*

डाह	*निर्गमन 20:17; कुलुस्सियों 3:5; याकूब 4:2*
जलन रखना	*रोमियों 14:13; इफिसियों 4:2; फिलिप्पियों 4:8*
आत्मसन्तुष्ट	*लूका 9:62; प्रकाशितवाक्य 2:4; प्रकाशितवाक्य 3:2-3, 16*
भष्टाचार	*लैव्यव्यवस्था 19:35; नीति 20:23; लूका 3:12-14; रोम 13:6-7*

कर्ज/दशमांश ने देना	*मलाकी 3:8-12; रोमियों 13:7-9; याकूब 5:1-6*
कलह	*भजन संहिता 133 [कलह का विपरीत]; गलातियों 5:14-15*
अनादर	*व्यवस्थाविवरण 5:16; 1 कुरिन्थियों 11:28-30; इफिसियों 6:2*
परमेश्वर की आज्ञा न मानना	*व्यवस्थाविवरण 28:1ff; भजन संहिता 2:12; लूका 6:46-49; यूहन्ना14:23-24; याकूब 1:22-25, 4:17*
माता-पिता की आज्ञा न मानना	*निर्गमन 20:12; इफिसियों 6:2; कुलुस्सियों 3:20*
तलाक	*मलाकी 2:15-16; मरकुस 10:2-12; 1 कुरिन्थियों 7:10-11; इब्रानियों 13:4*
संदेह	*मत्ती 21:21-22; मरकुस 9:23-24; याकूब 1:5-8*
पियक्कड़पन	*नीतिवचन 23:29-35; यशायाह 5:11-12; गलातियों 5:21; इफिसियों 5:18; 1 तीमुथियुस 3:2-3*

अहंकार	*मरकुस 10:44; 2 तीमुथियुस 3:2*

भय	*यशायाह 41:10, 43:1; मत्ती 10:28-33; रोमियों 8:15; 2 तीमुथियुस 1:7; 1 यूहन्ना 4:18*
भावी कहना (यौन पाप)	
भविष्य जानना	*लैव्यव्यवस्था 19:26b; व्यवस्थाविवरण 18:10; यिर्मयाह 10:2; प्रेरितों के काम 16:16*

पेटूपन	*यहेजकेल 16:49; इफिसियों 5:5; तीतुस 1:12*
चुगली करना	*लैव्यव्यवस्था 19:16; रोमियों 1:29-30; 2 कुरिन्थियों 12:20*
लोभ	*प्रेरितों के काम 2:44-45; इफिसियों 5:5; 1 तीमुथियुस 6:10*

घृणा	*मत्ती 5:43-45; 1 यूहन्ना 2:9-11, 3:15, 4:20-21*
समलैंगिकता	*लैव्यव्यवस्था 18:22; रोमियों 1:26-27; 1 कुरिन्थियों 6:9-10*
मुहूर्त देखना	*व्यवस्थाविवरण 18:10; यिर्मयाह 10:2*

कपट	*मत्ती 7:3-5, 23:1-33;लूका 13:14-16; गलातियों 2:11-13*

मूर्तिपूजा	*निर्गमन 20:4-5; व्यवस्थाविवरण 4:15-19, 6:13-18, 7:25-26, 12:2-4; यिर्मयाह 10:3-5; 1 यूहन्ना 5:21*
मूर्तिपूजक	*निर्गमन 20:3-4; व्यवस्थाविवरण 6:13-18, 32:16-18; भजन 106:34-39; होशे 4:12; 1 कुरिन्थियों 6:9-11; गलातियों 5:19-20; 1 पतरस 4:3; 1 यूहन्ना 5:21*
अविद्या	*यशायाह 5:13; होशे 4:6; प्रेरितों के काम 17:30-31*
उतावलापन	*गिनती 21:4-5; याकूब 1:12; 2 पतरस 3:9*
डाह करना	*नीतिवचन 14:30; रोमियों 13:12-14; 1 कुरिन्थियों 3:3; याकूब 3:16-18, 4:1-3*
न्याय चुकाना (निन्दा)	*मत्ती 7:1-2; रोमियों 14:13; याकूब 4:11-12*
आलस	*नीतिवचन 24:30-34; 1 कुरिन्थियों 9:27; याकूब 1:22; 2 तीमुथियुस 2:15*
प्रेम की कमी	*यूहन्ना15:17; रोमियों 1:31; गलातियों 5:14; 1 यूहन्ना 4:7-8*
लालसा	*मत्ती 5:28-29; मरकुस 7:21; रोमियों 1:26-27; गलातियों 5:19; 2 तीमुथियुस 2:22; 1 पतरस 4:3*
झूठ बोलना	*निर्गमन 20:16; इफिसियों 4:25; कुलुस्सियों 3:9; प्रकाशितवाक्य 21:8*
तंत्र मंत्र	*यहेजकेल 13:18, 20; प्रेरितों के काम 19:18-19; प्रकाशितवाक्य 9:21, 22:15*
अविश्वासी से विवाह	*यहोशु 23:12-13; 1 राजाओं 11:2-4; एज्रा 9:12; 2 कुरिन्थियों 6:14*
मार्शल आर्ट	*निर्गमन 20:3-4; 1 कुरिन्थियों 6:9-11; गलातियों 5:19; 1 यूहन्ना 5:21; प्रकाशितवाक्य 22:15*
गरीबी	*भजन संहिता 112:4, 5, 9; नीतिवचन 19:17; मत्ती 5:42; लूका 3:11, 6:38; प्रेरितों के काम 2:44-45; 1 यूहन्ना 3:17*
हत्या	*निर्गमन 20:13; मत्ती 5:21-22; 1 यूहन्ना 3:15; प्रकाशितवाक्य 21:8*
कुडकुडाना	*निर्गमन 16:2; 1 कुरिन्थियों 10:10; याकूब 5:9*
परमेश्वर से पूर्णतः प्रेम न रखना	*निर्गमन 20:3; व्यवस्थाविवरण 6:5; मत्ती 6:33; मरकुस 12:29-30; याकूब 1:5-8; प्रकाशितवाक्य 2:4-5, 3:15-16*
शपथ/प्रतिज्ञा	*मत्ती 5:33-37; याकूब 5:12*

लहू लगी चीज़ें	*लैव्यव्यवस्था 19:26, 31; व्यवस्थाविवरण 17:2-7, 18:9-14*
अपने प्रयासों ओर निर्भरता	*भजन संहिता 118:8-9; रोमियों 4:3; गलातियों 2:16, 3:6-12; इफिसियों 2:8-10; इब्रानियों 11:6*
पक्षपात	*प्रेरितों के काम 10:34-35; रोमियों 2:11; इफिसियों 6:9; कुलुस्सियों 3:25; याकूब 2:1-9*
अश्लीलता (देखें लालसा)	
प्रार्थनाहीनता	*1 शमूएल 12:23; मरकुस 14:37-38; फिलिप्पियों 4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18*
घमण्ड	*2 इतिहास 32:26; नीतिवचन 16:5; 2 तीमुथियुस 3:2; याकूब 4:6, 10; 1 पतरस 5:5*
तुरन्त प्रतिक्रिया	*भजन संहिता 37:8; नीतिवचन 14:17, 29:22; इफिसियों 4:31; तीतुस 1:7*
बलवा	*गिनती 16ff, 27:12-14; व्यवस्थाविवरण 9:7; 1 शमूएल 15:23; यूहन्ना 2:5, 14:15*
अस्वीकार करना	*यशायाह 49:14-16a; मत्ती 5:43-45; इफिसियों 1:5-6; 1 थिस्सलुनीकियों 4:9; 1 यूहन्ना 2:7*
यीशु को छोड़ना	*मत्ती 10:32-33; इब्रानियों 10:29; 1 यूहन्ना 2:22-23*
पवित्रात्मा का विरोध	*प्रेरितों के काम 7:51; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19-21; 2 तीमुथियुस 3:5; इब्रानियों 10:29*
स्वार्थी होना	*रोमियों 2:8; फिलिप्पियों 2:3-4; याकूब 3:16*
अपने में धर्मी होना	*मत्ती 23:6-7; लूका 18:9-14; फिलिप्पियों 3:8-9*
अपनी इच्छा/ हठी	*1 शमूएल 15:23; 2 इतिहास 30:8-9; रोमियों 2:5*
यौन पाप	*निर्गमन 20:14; प्रेरितों के काम 15:20; 1 कुरिन्थियों 3:16-17, 6:15-20; गलातियों 5:19-21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3; इब्रानियों13:4; यहूदा1:7*
आत्मिक चंगाई (बाईबल से बाहर)	*2 इतिहास 16:12-13; कुलुस्सियों 2:8*
चोरी करना	*निर्गमन 20:15; लुका 19:8; इफिसियों 4:28*
आत्महत्या के विचार	*निर्गमन 20:13; प्रेरितों के काम 16:27-28; 1 इतिहास 3:16-17, 6:19-20; इफिसियों 2:10; याकूब 1:18*

टैटु गुदवाना	*लैव्यव्यवस्था19:28*
अविश्वास/ भरोसा न करना	*भजन 118:8; मत्ती 13:58; मरकुस 9:19-24; लूका 1:37*
क्षमा न करना	*मत्ती 6:14-16; मत्ती 18:21-35; मरकुस 11:25-26*
कृतघ्न	*व्यवस्थाविवरण 28:47-48; लुका 17:17-18; फिलिप्पियों 4:8; 2 तीमुथियुस 3:2*
कठोर	*मत्ती 7:12; याकूब 1:27, 2:14-17*
अपवित्र	*लैव्यव्यवस्था 11:44; रोमियों 1:29; 2 तीमुथियुस 3:2; 1 पतरस 1:15-16*
बदला लेना	*लैव्यव्यवस्था 19:18; भजन संहिता 94:1; ओबद्याह 15; मत्ती 5:43-48, 6:14-15; रोमियों 12:19; इब्रानियों 10:30-31*
हिंसा	*भजन संहिता 7:16; नीतिवचन 16:29; 1 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 1:7-8*
पत्नी की पिटाई	*नीतिवचन 31:10-31; इफिसियों 5:25-26; कुलुस्सियों 3:19; 1 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 1:7; 1 पतरस 3:7*
जादू-टोना	*लैव्यव्यवस्था 19:31; व्यवस्थाविवरण 18:9-14; 1 शमूएल 15:23; प्रेरितों के काम 19:19; गलातियों 5:19-21; प्रकाशितवाक्य 21:8*
सांसारिकता	*रोमियों 12:2; 2 तीमुथियुस 3:4; तीतुस 2:12; 1 यूहन्ना 2:15-17*
चिन्ता	*मत्ती 6:25-34; फिलिप्पियों 4:6-7; याकूब 5:7*

अपने पारिवारिक इतिहास का चार्ट बनाना

एक पारिवारिक इतिहास का चार्ट हमें अपने परिवारों की विभिन्न पीढ़ियों को एक चित्र के रूप में देखने में मदद करता है। विशेष रूप से, चार्ट कई पीढ़ियों से हमारे परिवारों में आशीष/या शाप के किसी भी प्रकार की पहचान करने में हमारी सहायता करता है। परिवार जटिल होते हैं इसलिए जब तक हम अपने परिवार के इतिहास का चार्ट नहीं बना लेते और उसका अध्ययन नहीं कर लेते, तब तक हमें कोई तरीका नज़र नहीं आता है।

जब हम एक पारिवारिक इतिहास चार्ट बनाते हैं तो हम लोगों को दर्शाने के लिए प्रतीकों का और पारिवारिक संबंधों को संकेत करने के लिए रेखाओं का उपयोग करते हैं। यह चार्ट को सरल रखने में मदद करता है। तो एक परिवार के सदस्यों को दर्शाते है।

i. एक पुरुष को एक वर्ग द्वारा दर्शाया जाता है। और

एक महिला को वृत द्वारा दर्शाया जात है।

ii. विवाह को पुरुष और महिला को मिलाने वाली एक क्षैतिज रेखा द्वारा दर्शाया जाता है।

दंपति

iii. विवाह से बच्चों को विवाह रेखा से नीचे खींची गई एक लम्बी रेखा द्वारा दर्शाया जाता है (नीचे देखें)

यह एक साधारण परिवार के इतिहास चार्ट का एक उदाहरण दिया गया है जिसमें तीन बच्चों वाले एक जोड़े को दिखाया गया है।

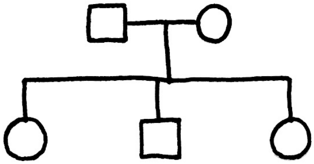

दंपति

दंपति के बच्चे

ऊपर के उदाहरण में देख सकते है कि इस दंपति की पहली संतान एक लड़की थी, दूसरी संतान एक लड़का था और तीसरी संतान भी एक लड़की थी।

नीचे दिए गए चित्र में, अब सभी बच्चे विवाहित हैं।

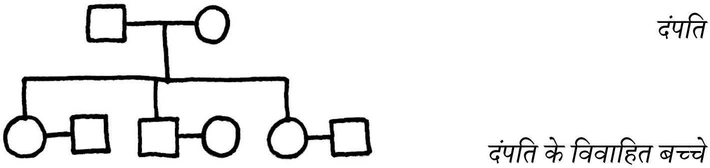

नीचे दिए गए उदाहरण में, दूसरी पीढ़ी के तीनों बच्चों के भी बच्चे हुए हैं। चार्ट अब 3 पीढ़ियों को दिखाता है: दादा-दादी, माता-पिता और बच्चे।

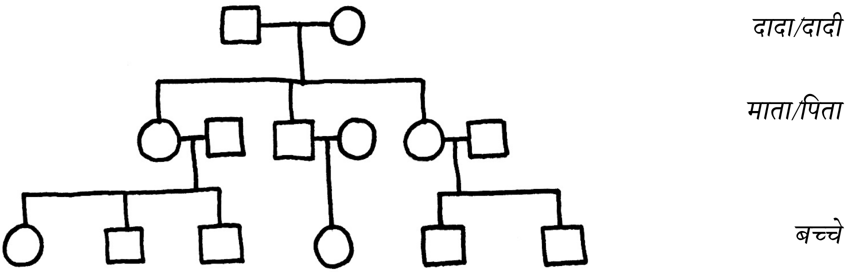

ऊपर दिए गए चार्ट के उदाहरण में, दादा-दादी की पहली संतान एक बेटी है। वह विवाहित है और उसकी एक बेटी और दो बेटे हैं। दादा-दादी की दूसरी संतान एक बेटा है। वह विवाहित है और उसकी एक बेटी है। दादा-दादी की तीसरी संतान भी एक बेटी है। वह विवाहित है और उसके दो बेटे हैं। तीसरी पीढ़ी के सभी बच्चे आपस में पहले चचेरे भाई-बहन हैं।

अपने परिवार के इतिहास चार्ट में, आप जितनी पीढ़ियों के बारे में जानते हैं, उन्हें जोड़ सकते हैं।

अपने परिवार के लिए एक चार्ट बनाएं। दादा-दादी के एक समूह से शुरू करते हुए, पीढ़ी दर पीढ़ी अपने परिवार के सभी सदस्यों को ऊपर दिखाए गए तरीके से बनाएं। व्यक्तियों को आसानी से पहचानने के लिए आप लोगों के नाम चार्ट पर लिख सकते हैं। आपको अपने परिवार के माता पक्ष और अपने पिता के पक्ष के लिए अलग-अलग चार्ट बनाना चाहिए।

फिर, निशान की एक सरल प्रणाली (जैसे एक रंग, प्रतीक या अक्षर) का उपयोग करके उन सभी लोगों के बगल में एक चिह्न लगाएं, जो आपके द्वारा विचार की जा रही विशेषताओं से प्रभावित हैं या प्रभावित हुए हैं। नीचे दी गई कष्टों की सूची का उपयोग करते हुए, पहले से शुरू करते हुए

एक समय में एक विशेषता को देखें। आप पायेंगे कि आपके परिवार में अन्य मुद्दे भी हैं जिन्हें आप यहाँ देखना चाहते हैं। उन्हें इसी तरह अपने पारिवारिक इतिहास चार्ट पर अंकित करें।

1. विवाह संबंधी समस्याएं (जुदाई/तलाक/बहु-विवाह/नाजायज संबंध)
2. दु:खद बीमारी / समय से पहले मौत
3. वित्तीय विफलता
4. पारिवारिक दुःख / टूटना
5. पुरानी बीमारी (मानसिक, शारीरिक)
6. प्रजनन संबंधी समस्याएं / संतानहीनता
7. दुर्घटनाएं
8. व्यसन
9. अधूरा भाग्य
10. छेड़छाड़/दुर्व्यवहार

इनमें से कई कष्ट आपके परिवार में नहीं होंगे या गुप्त रखे जा सकते हैं।

उदाहरण कि पारिवारिक इतिहास चार्ट का उपयोग कैसे करें

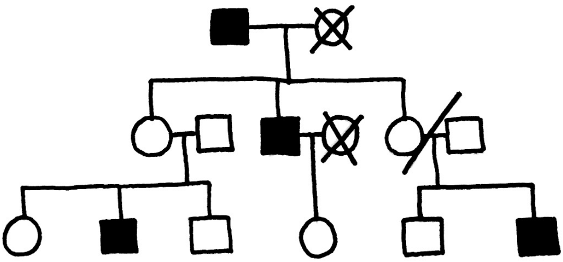

X = युवावस्था में मृत्यु

/ = विवाह का टूटना

काला रंग = मानसिक बीमारी या अवसाद

ध्यान दें कि इस पारिवारिक इतिहास चार्ट में, प्रत्येक परिवार में दूसरे बच्चे (सभी पुरुषों) को अवसाद है।

अलग-अलग रंगों और प्रतीकों से आप अलग-अलग दु:ख को दिखा सकते हैं।

जैसे आप अपने परिवार के लिए उचित समझते हैं वैसे ही प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा से आपको अपने परिवार के बारे में ऐसी चीजें दिखाने के लिए कहें जो कि वह आपको दिखना चाहता है।

आप कितनी भी संख्या में चार्ट बना सकते हैं और कितनी भी चीजें दिखा सकते हैं - आशीष या क्लेश, नजरिया और व्यवहार (ईश्वरीय और/या पापपूर्ण)। अच्छे पहलुओं के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना अच्छा है। यदि क्लेश या बार-बार क्लेश के प्रकार दिख रहे हैं तो आपका परिवार आशीष के अन्तर्गत नहीं रह रहा है, लेकिन एक अभिशाप के तहत हो सकता है।

यह जानने के लिए कि इसके क्या कारण हो सकते हैं, या इलाज क्या है और यीशु ने आपके और आपके परिवार के छुटकारे के लिए जो किया है, उसे कैसे ग्रहण करें, यह जानने के लिए 'दैवीय विरासत की पुनः प्राप्ति' अध्याय को पढ़ें।

गवाही

यीशु ने मेरे परिवार के पापों को दर्शाया

"जयवन्त मसीही जीवन" के माध्यम से कार्य करना मेरे लिए एक नई स्वतंत्रता लेकर आया। अपने परिवार के इतिहास का चार्ट बनाने के बाद, मैंने देखना चाहा कि पीढ़ियों से कौन से पाप का मुद्दा चला आ रहा है, लेकिन कुछ भी स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। जैसे ही सत्र समाप्त हुआ, मैंने चार्ट उठाया और जब मैंने अपने पिता और उनके भाई-बहनों के वर्गों और मंडलियों को देखा, तो वे पृष्ठ पर "उत्तेजित" दिखाई दिए। जब मैंने उन पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की तो वे वर्ग और वृत्त स्पष्ट रूप से पाप को दिखा रहे थे। मुझे अचानक महसूस हुआ कि प्रार्थना करने और परमेश्वर से क्षमा माँगने, और मन फिराव करने और अपने पिछले पापों और अपने पिता और उनके भाई-बहनों के पापों को त्यागने की अत्यधिक आवश्यकता है। मेरे एक साथी ने मेरे साथ प्रार्थना मार्गदर्शक के रूप में काम किया। अंत में मैंने यीशु को फिर से अपने दिल में आने और मुझे पवित्र आत्मा से भरने के लिए आमंत्रित किया। यह दो साल पहले की घटना थी। तब से, मुझे लगता है कि मैंने स्वयं को पवित्रशास्त्र में डुबोते हुए और वचन की पृष्ठभूमि को समझकर, प्रभु के साथ एक करीबी यात्रा की है। अकसर मुझे छोटी-छोटी बातों में ही आनंद आने लगता है। पवित्र आत्मा मुझे साथ ले जाता है और कभी-कभी मैं दृढ़ हो जाता हूँ! मैं साप्ताहिक बाईबल अध्ययन समूह के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में "जयवन्त मसीही जीवन निर्देश-पुस्तिका" का उपयोग करने की योजना बना रहा हूँ।"

पीढ़ी दर पीढ़ी आशीषों[11] के लिए प्रार्थना

नीचे पापों के अंगीकार और मन फिराव करने की प्रार्थना दी हुई है, यह उन पापों के लिए है जो बाईबल के अनुसार नकारात्मक परिणामों (शाप) को लाते है। इसके द्वारा **'यदि'** याचना के रूप में प्रार्थना की जा सकती है, क्योंकि हम नहीं जानते कि हमारे पूर्वजों ने कैसे पाप किया। तब हम परमेश्वर से हमारे (परिवार के सदस्यों, हमारी कलीसिया और हमारे राष्ट्र) से नकारात्मक परिणामों को दूर करने के लिए निवेदन कर सकते हैं और उनसे अपनी अनंत आशीषों को निरन्तर बनाए रखने के लिए कह सकते हैं।

"स्वर्ग में विराजमान प्यारे पिता, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने, और आदम और हव्वा से लेकर मेरे पुरखाओं तेरे विरुद्ध पाप किया है; हम ने बुराई की है और दुष्टता की है" *(2 इतिहास 6:37)।*

मैं मानता हूँ कि हमने उन तरीकों से पाप किया हो जो बाईबल के अनुसार मुझ पर, मेरे परिवार, मेरी कलीसिया और मेरे राष्ट्र पर शाप लाते है।

"कृपया मुझे और आदम और हव्वा से लेकर मेरे पूर्वजों में से प्रत्येक को क्षमा करें, यदि या जब:

- हम ने तेरी ओर फिरकर या तुझे सारी महिमा नहीं दी *(प्रकाशितवाक्य 16:9)*
- हम ने अपने सारे मन, प्राण, बुद्धि और शक्ति से तुझ से प्रेम नहीं किया *(व्यवस्थाविवरण 6:4-5; मरकुस 12:30; 1 कुरिन्थियों 16:22; 1 यूहन्ना 5:21)*
- हम ने तुझे ठुकरा दिया है, तेरी आज्ञाओं को अनसुना कर दिया है और अपने मार्ग पर चले गए हैं *(व्यवस्थाविवरण 11:28; व्यवस्थाविवरण 27:15-26, 28:15; यशायाह 24:5-6; यशायाह 53:6; यिर्मयाह 11:3)*
- हम ने अपने सृष्टिकर्ता की आराधना नहीं की, परन्तु उसकी रची हुई वस्तुओं की आराधना की है, जिसमें स्वयं को, अन्य लोगों और सभी प्रकार की मूर्तियों को शामिल किया गया है *(निर्गमन 20:4-6; व्यवस्थाविवरण 4:15-19; व्यवस्थाविवरण 27:15; रोमियों 1:21-23; इफिसियों 5:5; 1 यूहन्ना 5:21; प्रकाशितवाक्य 21:8)*
- हम ने तुझ पर भरोसा नहीं रखा, वरन अपने आप पर और दूसरे लोगों पर भरोसा रखा है *(भजन संहिता 118:8; यिर्मयाह 17:5)*
- हमने जादू टोना और अन्य प्रकार की तान्त्रिक गतिविधियों का अभ्यास किया है *(व्यवस्थाविवरण 11:28; व्यवस्थाविवरण 27:25; प्रकाशितवाक्य 21:8)*

[11] यह पापों की विस्तृत सूची नहीं है, बल्कि केवल वही पाप शामिल है जो बाईबल में शाप के साथ सम्बन्धित हैं।

- हमने अपने माता-पिता का अनादर और उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया है *(निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 27:16; इफिसियों 6:2)*
- हमने वासना, लालसा, व्यभिचार, अपने माता-पिता के जीवनसाथी के साथ संभोग, समलैंगिकता, अनाचार और पशुगमन सहित सभी प्रकार के यौन पाप और विकृति को किया है *(उत्पत्ति 38:9-10; निर्गमन 20:14; व्यवस्थाविवरण 27:20-23; यहेजकेल 22:10-11; मत्ती 5:27-28; रोमियों 1:26-27; 1 कुरिन्थियों 6:9, 15-20; इफिसियों 5:5; प्रकाशितवाक्य 22:15)*
- हमने अविश्वासीयों से विवाह किया है और अविश्वासीयों के साथ अनुबंध किया है *(नहेम्याह 13:23-25; 2 कुरिन्थियों 6:14-15)*
- हमने आत्महत्या, हत्या और गर्भपात सहित निर्दोष लोगों की हत्या को अंजाम दिया है *(उत्पत्ति 9:5; निर्गमन 20:13; व्यवस्थाविवरण 28:47-48; भजन संहिता 71:6; भजन संहिता 139:13-17; यशायाह 49:1,5; मत्ती 5:21-22; मरकुस 8:34; रोमियों 13:9-10)*
- हमने अपने पड़ोसियों पर कभी-कभी गुप्त रूप से आक्रमण किया है *(व्यवस्थाविवरण 27:24; मरकुस 12:31; 1 यूहन्ना 3:25)*
- हमने रिश्वत स्वीकार की है, यहाँ तक कि रिश्वत भी जो शायद निर्दोष लोगों की मृत्यु का कारण बनी *(व्यवस्थाविवरण 27:25)*
- हमने एक ही दिन में मारे गए लोगों के शवों को दफनाया नहीं है *(व्यवस्थाविवरण 21:23; गलतियों 3:13)*
- जिस कलीसिया को आपने हमारे लिए निर्धारित किया है, हमने विश्वासपूर्वक दशमांश नहीं दिया है या उसमें उपस्थित नहीं हुए हैं *(व्यवस्थाविवरण 12:11; मलाकी 3:9)*
- हमने गरीबी के लिए अपनी आँखें बंद कर ली हैं और ज़रूरतमंदों के साथ साझा नहीं किया है *(नीतिवचन 28:27; मत्ती 25:41-46)*
- हमने परदेशी, अनाथ और विधवा के न्याय को रोक रखा है *(व्यवस्थाविवरण 27:19; यशायाह 58:6-7; याकूब 1:27)*
- हमने तेरे पवित्र नाम का आदर नहीं किया *(व्यवस्थाविवरण 28:58; जकर्याह 5:4; मलाकी 2:2; प्रकाशितवाक्य 16:9)*
- हमने आपको, अन्य लोगों और स्वयं को शाप दिया है *(2 शमूएल 19:21; अय्यूब 2:9; भजन संहिता 109:17; मत्ती 5:22; 1 कुरिन्थियों 11:19; याकूब 3:10; प्रकाशितवाक्य 16:9,11)*
- हम ने तेरी चुनी हुई प्रजा इस्राएल को शाप दिया और आशीष नहीं दी *(उत्पत्ति 12:3; यशायाह 45:17; रोमियों 11:28ब-29)*

- हम ने झूठ बोला है और झूठी शपथ खाई है *(जकर्याह 5:4; प्रकाशितवाक्य 21:8; प्रकाशितवाक्य 22:15)*
- हमने भूमि को चुराया है और अन्य लोगों की सीमाओं को तोड़ दिया है *(व्यवस्थाविवरण 19:14; व्यवस्थाविवरण 27:17; नीतिवचन 22:28)*
- हम शराब और अन्य नशीले पदार्थों के नशे में थे *(नीतिवचन 23:29-35; रोमियों 13:13; 1 कुरिन्थियों 11:27)*
- हमने आपके सुसमाचार को साझा नहीं किया है *(लैव्यव्यवस्था 19:14; व्यवस्थाविवरण 27:18; लूका 17:2; गलतियों 1:8; 2 पतरस 2:14)*
- हमने केवल आपके अनुग्रह पर भरोसा करने के बजाय अपने स्वयं के प्रयासों से खुद को बचाने की कोशिश की है *(मरकुस 1:15; रोमियों 4:1-24 विशेष रूप से 24; रोमियों 10:9, 13; गलतियों 3:6-12; इफिसियों 2:8-10)*

“मैं आदम और हव्वा से लेकर मेरे और मेरे पूर्वजों द्वारा किए गए हर गलत विचार, शब्द और कार्य को अंगीकार करता हूँ। मैं इन पापों का त्याग करता हूँ। कृपया मुझे, मेरे पूर्वजों, मेरी कलीसिया और मेरे राष्ट्र को हर उस पाप के लिए क्षमा करें जो हमने किया है, चाहे ज्ञात या अज्ञात।

“हमारे पापों के लिए मरने और व्यवस्था द्वारा घोषित अभिशाप से हमें बचाने के लिए यीशु का धन्यवाद। आपने हमारे सारे पापों का शाप अपने ऊपर ले लिया *(गलातियों 3:13-14)*। इसलिए मेरे इस विश्वास के कारण, मैं नासरत के यीशु मसीह के नाम के अधिकार से अपने परिवार, कलीसिया और राष्ट्र के सभी अभिशापों को तोड़ देता हूँ।

“मैं स्वर्ग में विराजमान पिता आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे शुद्ध करें और मुझे, मेरे परिवार, मेरी कलीसिया और मेरे राष्ट्र को बुराई से मुक्त करें और हमें 1000 पीढ़ियों तक स्वर्ग के नीचे उपलब्ध हर आशीष को दें *(इफिसियों 1:3)*। धन्यवाद। मैं आप से प्रेम करना और आपकी आज्ञा के पालन करने को चुनता हूँ, और अपने आप को तुझ पर स्थिर करता हूँ *(व्यवस्थाविवरण 30:30; यहोशू 24:15; मरकुस 12:30)*। कृपया मेरी सहायता करें पवित्र आत्मा, मुझे आपकी आवश्यकता है। कृपया मुझे आज फिर से परिपूर्ण करें।

“हे स्वर्ग में विराजमान पिता, आपके गौरवशाली नाम की प्रशंसा हो! आपका नाम सभी आशीष और स्तुति से ऊँचा है! *(नहेम्याह 9:5)*।

“यीशु के नाम में, प्रार्थना करता हूँ। आमीन।”

मसीह में मैं कौन हूँ

नया जन्म पाये हुए मसीही के रूप में, मैं मसीह में हूँ और वह मुझ में है। निम्नलिखित में से हर एक वचन मेरे बारे में पूरी तरह से सत्य है। उन्हें और अधिक सत्य बनाने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता। परन्तु, परमेश्वर मेरे बारे में जो कहता है उस पर विश्वास करके मैं इन सत्यों को अपने जीवन में और अधिक प्रभावी बना सकता हूँ ...

मसीह में...

... मुझे प्यार किया गया है:

मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ ***(यूहन्ना 1:12; रोमियों 8:14; गलतियों 3:26, 4:6-7; इफिसियों 1:5)***

मैं यीशु मसीह का मित्र ***(यूहन्ना 15:15)*** और भाई-बहन हूँ ***(इब्रानियों 2:11)***

मुझे परमेश्वर से प्यार है। परमेश्वर मुझसे उतना ही प्रेम करता है जितना वह यीशु से प्रेम करता है ***(यूहन्ना 17:23)***

मैं परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं हो सकता ***(रोमियों 8:35-39)***

मैं मसीह की देह का अंग हूँ ***(1 कुरिन्थियों 12:27; इफिसियों 5:30)***

... मुझे स्वीकार किया गया है:

मैं यीशु मसीह में विश्वास करने से परमेश्वर की दृष्टि में ठीक हुआ ***(रोमियों 5:1)***

मैं अपने पापों के दण्ड से मुक्त हो गया हूँ ***(रोमियों 3:24; कुलुस्सियों 1:14)***

मैं पाप के लिए मरा हुआ हूँ। मेरा जीवन मसीह का जीवन है (***रोमियों 6:1-6; गलातियों 2:20; कुलुस्सियों 2:11)***

मैं दण्ड से सदा के लिए स्वतंत्र हूँ ***(रोमियों 8:1 और8:31-34)***

मैं मदद के लिए साहसपूर्वक परमेश्वर के पास आने का हकदार हूँ ***(इफिसियों 2:18, 3:12; इब्रानियों 4:16;)***

... मैं महत्वपूर्ण हूँ:

मैं अयोग्य विशेषाधिकार, आत्मविश्वास और आनंद के स्थान पर हूँ ***(रोमियों 5:2)***

मैं सच्ची दाखलता की एक शाखा, मसीह के जीवन का एक माध्यम हूँ ***(यूहन्ना 15:1,5)***

मैं परमेश्वर की अपनी संपत्ति हूँ ***(1 पतरस 2:9)***

मैं एक चुने हुए लोगों का एक अंग हूं, एक पवित्र राष्ट्र ***(1 पतरस 2:9-10)***

मैं स्वर्ग के नीचे उपलब्ध हर आत्मिक आशीष से आशीषित हूँ ***(इफिसियों 1:3)***

... मैं सुरक्षित हूँ:

मैं यीशु के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ हूँ; परमेश्वर ने यह किया है ***(1 कुरिन्थियों 1:30; कुलुस्सियों 3:3)***

मैं परमेश्वर की अविश्वसनीय दया, अनुग्रह और कृपा का एक उदाहरण हूँ ***(इफिसियों 2:7)***

मुझे विश्वास है कि जो भले काम परमेश्वर ने मुझ में आरम्भ किया है, वह सिद्ध होगा ***(फिलिप्पियों 1:6)***

मैं परमेश्वर से पैदा हुआ हूँ; दुष्ट मुझे छू नहीं सकता ***(1 यूहन्ना 5:18)***

मैं स्थापित, अभिषिक्त, परमेश्वर के द्वारा मुहरबंद हूँ ***(2 कुरिन्थियों 1:21-22)***

... मेरे पास उद्देश्य है:

मुझे परमेश्वर के तुल्य, वास्तव में धर्मी और पवित्र होने के लिए बुलाया गया है ***(इफिसियों 4:24; 2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 1:15-16)***

मुझे यीशु ने चुना और नियुक्त किया है कि मैं उसमें फल लाऊँ ***(यूहन्ना 15:16)***

मैं पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति हूँ ***(मत्ती 5:13-14)***

मैं परमेश्वर के राजकीय याजकवर्ग में परमेश्वर का राजकीय याजक हूँ ***(1 पतरस 2:9)***

मैं मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ देता है ***(फिलिप्पियों 4:13)***

... मेरे पास महिमामय व अनन्त विरासत है:

मैं मसीह के साथ एक संयुक्त वारिस हूँ, परमेश्वर की महिमा और पीड़ा को साझा करता हूँ ***(रोमियों 8:17; गलतियों 4:6-7)***

मैं स्वर्ग का नागरिक हूँ, अभी स्वर्ग में बैठा हूँ ***(इफिसियों 2:6,19; फिलिप्पियों 3:20)***

मुझे भविष्य की एक महिमामय आशा के लिये बुलाया गया है ***(इफिसियों 4:4)***

मुझे अन्धकार से छुड़ाया गया और परमेश्वर के राज्य में स्थानांतरित किया गया **(प्रेरितों के काम 26:18; कुलुस्सियों 1:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:5)**

मैं मसीह से परिपूर्ण हूँ; मसीह महिमा की आशा है! ***(1 कुरिन्थियों 3:16; कुलुस्सियों 1:27)***

इसलिए मसीह में बने रहो!

(यूहन्ना 15:7-10; इब्रानियों 3:6; 1 यूहन्ना 2:27-28; 2 यूहन्ना 9)

एक अभ्यास : पौलुस की पत्रियों को पढ़ने से आप अपनी एक सूची तैयार कर सकते हो कि आप मसीह में कौन हो। एक पत्री लो (जैसे, इफिसियों, फिलिप्पियों या कुलुस्सियों) और प्रत्येक पद को ध्यान से पढ़ो। ढूँढो कि पौलुस ने मसीह में और मसीह की क्या पहचान बताई है। इस प्रकार आप भी मसीह में अपनी पहचान ढूँढ सकते हो। आप प्रत्येक पद में अपनी पहचान के बारे में अद्भूत ही प्राप्त करोगे।

बाईबल का अध्ययन कैसे करें[12]

बाईबल पढ़ने की योजना

यदि संभव हो तो हर साल पूरी बाईबल पढ़ना हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए अच्छा होता है। बाईबल पढ़ने के कई तरीके है, हम प्रत्येक दिन पुराने और नए नियम दोनों को पढ़ सकते हैं। पुराने नियम में 929 अध्याय और नए नियम में 260 अध्याय हैं। आप अपनी स्वयं की बाईबल को पढ़ने की योजना बना सकते हैं, लेकिन हमारा सुझाव है कि आप हर दिन पुराने नियम के दो या तीन अध्याय और नए नियम के एक अध्याय को पढ़ें। इस तरह आप एक साल में पूरी बाईबल को पढ़ लेंगे। आप कहाँ पहुँचे हैं, यह याद दिलाने के लिए आप अपनी बाईबल में स्थान-चिह्न लगाएं। कई ऐसी बाईबल ऐप्स और वेबसाइटें भी हैं जिनमें कई भाषाओं में ऑनलाइन बाईबल और अलग-अलग बाईबल पढ़ने की सुविधाएँ हैं। www.youversion.com और www.biblegateway.com को देख सकते है।

बाईबल के मनन और परमेश्वर के वचन की प्रार्थना

परमेश्वर के वचन को पढ़ने के अतिरिक्त, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है ***(यहोशू 1:8; भजन संहिता 1:1-3; भजन संहिता 119:15-16; इब्रानियों 4:12)***। परमेश्वर के वचन पर मनन करने के द्वारा आत्मिक फल और परिपक्वता आती है।

बाईबल का अध्ययन करने के कई तरीके हैं। यहाँ कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं जो सहायक होंगे।

- वचन का नियमित अध्ययन करने का निर्णय लें। बाईबल की उन बातों के बारे में चिंता न करें जिन्हें आप अभी नहीं समझ सकते।
- *"मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ।"* ***(भजन संहिता 119:18)***
- *"तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला हैं।"* ***(भजन संहिता 119:105)***
- प्रार्थना करें और प्रभु से पूछें कि बाईबल की कौन सी पुस्तक या पाठ का अध्ययन करना है।

---

[12] कैंपबेल मैकअल्पाइन, बाईबल के मनन की व्याख्या, 2004, सॉवरेन वर्ल्ड लिमिटेड।

- शांत रहें... विचार करें कि क्या आपके और प्रभु के बीच सब कुछ ठीक है। आप पर उनकी अच्छाई और अनुग्रह के लिए उनका धन्यवाद करते हुए एक मिनट बिताएं। जो वह है उसके लिए उसकी स्तुति करें। उसकी आराधना करें।
- उसके ऊपर निर्भर रहें, उस पर भरोसा करें कि वह आपको अपने विचार देगा।
- अब उस पाठ पर जाएं जिसके लिए परमेश्वर ने आपको निर्देशित किया है और इसे धीरे-धीरे कुछ समय इसे पढ़ें।
    - आपको क्या विचार प्राप्त हुए हैं?
    - परमेश्वर आपको क्या सिखा रहा है? (उदाहरण के लिए एक आदेश, एक चेतावनी, अनुसरण करने के लिए एक उदाहरण, उसके चरित्र के बारे में कुछ, उसके लिए धन्यवाद देने के लिए कोई बात)
    - प्रार्थना में, जो कुछ वह आपको सिखा रहा है उसका जवाब दें।
    - अपनी प्रार्थना को अपने परिवार, कलीसिया, राष्ट्र और इज़रायल[13] सहित हर राष्ट्र के लिए प्रार्थना करके विस्तारित करें।
- प्रश्नों के उत्तर लिख लें। परमेश्वर आपके मन को इस पाठ से भिन्न दिशा में मोड़ सकता है और आपकी अपनी विशेष आवश्यकता के बारे में बात कर सकता है। उसे सीमित मत करो।
- जब आपके पास अधिक समय हो, तो समानांतर पाठ या क्रॉस-रेफरेंस देखें।
- शेष दिन में यह विचार करें कि परमेश्वर ने आपसे क्या कहा है।

---

[13] इस प्रकार की प्रार्थना के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया लिदिया फेलोशिप इंटरनेशनल से संपर्क करें www.lydiafellowship.org

बीमारों को चंगा करना[14]

यीशु ने सभी विश्वासियों को एक ही आदेश दिया ***(मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15-18; लूका 24:46-49; यूहन्ना 20:21-22)***। जब उनके चेले हर जगह गए और सुसमाचार का प्रचार किया, तो प्रभु ने उनके माध्यम से काम किया, इसकी पुष्टि उनके द्वारा चमत्कारों से होती है ***(मरकुस 16:20; प्रेरितों के काम*** - पूरी किताब!)

बीमारों और अन्य चमत्कारी संकेतों को ठीक करना यीशु के बारे में सुसमाचार के प्रचार के साथ होता है (यह सुसमाचार ही है कि यीशु के माध्यम से मन फिराव करने वालों के लिए पापों की क्षमा है)।

यीशु ने प्रत्येक विश्वासी को बीमारों को चंगा करने की आज्ञा दी ***(मत्ती 10:1,8; मरकुस 6:12-13; लूका 9:1-2)***। उसने हम सभी को बीमारों को चंगा करने के लिए कहा, केवल बीमारों के लिए प्रार्थना करने के लिए नहीं। कुछ लोगों को, प्रभु चंगाई के लिए विशेष वरदान देता है ***(1 कुरिन्थियों 12:9, 28***)। जब तक हम लोगों के चंगे होने के लिए प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर दूसरों को चंगा करने के लिए हम में से प्रत्येक का उपयोग कर सकते हैं और करेंगे। उसने वादा किया था और वह कभी झूठ नहीं बोलता ***(इब्रानियों 6:18)***।

जब हम चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं तो ये तीन वादे हमें विश्वास दिलाते हैं:

1. *"उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए है।"* ***(यशायाह 53:5; 1 पतरस 2:24)***
2. *"हम उसके नई और बेहतर वाचा में है।"* ***(इब्रानियों 9:12-15)***
3. *"परमेश्वर के राज्य हममें है।"* ***(लूका 17:21)***

कई अन्य वचन जो हमें उपचार और चमत्कार के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं:

"परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है।" ***(मत्ती 19:26)***

"यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी कहेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।"" ***(यूहन्ना 14:12-14)***

---

[14] रैंडी क्लार्क (2010), द्वारा दिए गए एक सेमिनार से, ग्लोबल अवेकनिंग और चार्ल्स और फ्रांसेस हंटर (डीवीडी और यूट्यूब पर उपलब्ध) द्वारा दिए गए सेमिनारों से लिया गया है।

"परमेश्वर यीशु से जितना प्रेम करता है उतना ही प्रेम वह हमसे प्रेम करता है!" ***(यूहन्ना 17:23)***

"यीशु ने कहा "मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।"" ***(मत्ती 18:19)***

"हमारी विनती और समझ से कही अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है।" ***(इफिसियों 3:20)***

यीशु ने लोगों को छूआ इसलिए हम भी कर सकते हैं। हम परमेश्वर से चंगा करने के लिए हमारे हाथों का उपयोग करने के लिए कह सकते हैं। ऐसा करने से पहले, हमें उस व्यक्ति की अनुमति मांगनी होगी। हमें उन्हें उस हिस्से के पास छूना चाहिए, जहाँ इलाज की जरूरत है, या जहाँ बीमारी है, लेकिन 'निजी' हिस्से को नही।

तब हम उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। हम उन्हें आशीष दे सकते हैं, परमेश्वर से उन्हें आशीष देने के लिए कह सकते हैं और चंगाई के वचन बोल सकते हैं। हमारी प्रार्थना में, हमें चंगाई के लिए उपयोग करने के लिए परमेश्वर के वादों को याद रखना चाहिए ("आपके कोड़े खाने से यह व्यक्ति चंगा हुआ है; क्योंकि मैं नई वाचा में एक नया जन्म पाया हुआ विश्वासी हूँ - चंगा हो जा; क्योंकि आपका राज्य मेरे भीतर है - यह व्यक्ति चंगा हो गया है")। हम "**यीशु के नाम के अधिकार में**" चंगा करते हैं।

उन्हें छूते समय, व्यक्ति से बातचीत करना, व ऐसे प्रश्न पूछना सहायक होगा जैसे कि 'यह बीमारी कब शुरू हुई थी?' या 'जब यह बीमारी शुरु हुई तो आपके जीवन में क्या चल रहा था?' बीमारी के शुरूआत में वे गहरे शोक से गुजरे होंगे और हम उनको जो इसके कारक थे उनको क्षमा करने के लिए मदद कर सकते है शुरू हो गई और हम उनकी मदद कर सकते हैं कि जो भी जिम्मेदार था उसे माफ कर दें या मन फिराव करने और परमेश्वर से क्षमा याचना के लिए कह सकते है। क्षमा न करना चंगाई को रोकता है और प्रार्थना के उत्तर का भी बाधक है ***(मरकुस 11:22-25; याकूब 5:1ब; 1 पतरस 3:7)***। क्षमा न करना बीमारी और पीड़ा का कारण भी हो सकता है ***(मत्ती 18:34-35; इब्रानियों 12:14-15)***। क्षमा करना और दूसरों को क्षमा करने के लिए प्रोत्साहित करना बहुत महत्वपूर्ण है। क्षमा चंगाई को लाती है।

जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम उस व्यक्ति से यह भी पूछ सकते हैं कि उनके साथ क्या हो रहा है - कभी-कभी उन्हें गर्मी, या ठंडक, या झुनझुनी सनसनी महसूस हो सकती है। चाहे वह कुछ महसूस करें या न करें – उत्साहित रहें और निरन्तर प्रार्थना करना जारी रखें। चाहे कोई प्रमाण दिखे या न दिखे, हम परमेश्वर के कार्य के लिए उसको धन्यवाद दे सकते हैं।

यीशु हमें शरीर के अंगों को चंगा करने का अधिकार देता है जैसे: “यीशु के नाम में टाँगे सीधे हों”; “ब्लड शुगर यीशु के नाम पर सामान्य स्तर पर आ जाए।” और हम दर्द या बीमारी को जाने के लिए कह सकते हैं जैसे "सिरदर्द दूर हो जाए, यीशु के नाम में।” उनकी शारीरिक समस्याओं के बारे में हमारे पास जितनी अधिक जानकारी होगी, हम उतना ही विशेष रूप से प्रार्थना कर सकते हैं।[15]

और अगर व्यक्ति स्पष्ट रूप से ठीक नहीं हुआ है - हार मत मानो! संदेह मत करो! यीशु उत्तर दे रहा है। थोड़ी देर और प्रार्थना करो। और जब समय नहीं बचा है, तो सुझाव दें कि वे अपने स्वयं के उपचार के लिए प्रार्थना करते रहें और उन्हें विश्वास करने के लिए कहें कि यीशु उत्तर दे रहे हैं; उसने अपने पास आने वाले सभी लोगों को चंगा किया है। हम भी उनके उपचार के लिए प्रार्थना करना जारी रख सकते हैं। यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि उन्हें हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए और कभी हार नहीं माननी चाहिए ***(लूका 18:1-8)।***

गवाही

यीशु ने उसके हाथ को चंगा किया

“मैं एक उम्रदराज महिला को चंगाई के लिए प्रार्थना करना सिखा रही थी। वह पीठ दर्द से पीड़ित एक युवती के लिए प्रार्थना कर रही थी। उसने उस युवती के कंधे पकड़ लिए और उसकी पीठ के दर्द को दूर हो जाने के लिए कहा। उसने कुछ मिनटों के लिए इस तरह की प्रार्थना की। फिर मैंने पूछा “क्या हुआ?” युवती को अभी भी पीठ में दर्द था लेकिन उम्रदराज महिला का हाथ पूरी तरह से ठीक हो गया था। मुझे यह पता नहीं था, लेकिन उस महिला के हाथ की कुछ हड्डियाँ टूट गई थीं और उस समय तक कई सालों से वह अपने हाथ का पूरी तरह से इस्तेमाल नहीं कर पाई थी।”

हमें यीशु को हर छोटी-छोटी चंगाई के लिए धन्यवाद देना चाहिए जो वह हमारी प्रार्थनाओं के जवाब में करता है। परमेश्वर लोगों को चंगा करता है क्योंकि वह उन्हें अपनी ओर खींचना चाहता है।

“यह परमेश्वर की दया ही है जो आपको मन फिराव की ओर ले जाती है।” ***(रोमियों 2:4)***

---

[15] चार्ल्स और फ्रांसिस हंटर, हाउ टू हील द सिंक, 1981, व्हिटेकर हाउस। इसके अलावा चार्ल्स और फ्रांसिस हंटर, 7 घंटे का पावर पैक डीवीडी सेंट, हंटर सेवकाई।

यीशु ने उन नगरों और शहरों की निन्दा की जहाँ उसने अपने बहुत से चमत्कार किए थे *"क्योंकि उन्होंने अपने पापों से मन नहीं फिराया और न ही परमेश्वर की ओर फिरे।"* ***(मत्ती 11:20)***

परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। जब हम प्रार्थना के अधिक उत्तर देखते हैं तो हम और अधिक प्रार्थना करने और अन्य बातों के लिए जैसे रिश्ते, विवाह, कलीसियाओं, शहरों, राज्यों और राष्ट्रों, व्यवसायों, कृषि जैसी असंभव चीजों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित होते है; आप जो कुछ भी देखते हैं उसमें परमेश्वर के चंगाई युक्त स्पर्श की आवश्यकता होती है। परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है और वह इसे ठीक भी कर सकता है और इसे पुनर्स्थापित कर सकता है, हम इससे अधिक भी कह सकते हैं या कल्पना कर सकते हैं ***(इफिसियों 3:20)***।

गवाही

यीशु ने उसे पूरी तरह से चंगा किया

"एक परिवार ने मुझे अपनी माँ से मिलने के लिए आमंत्रित किया, जो तीन साल से बिस्तर पर पड़ी थी और जिसकी बहुत जल्द मृत्यु होने की आशंका की जा रही थी। महिला के बिस्तर पर मैंने उससे पूछा कि क्या कोई है, जिसे उसे क्षमा करने की आवश्यकता है। उसके पास कई नाम थे! मैंने उसकी प्रार्थना करने में मदद की और उसने उन्हें क्षमा कर दिया और यीशु को अपने हृदय में आमंत्रित किया। वह अलग सा महसूस कर रही थी। तब मैंने उसके ठीक होने के लिए प्रार्थना की और वह तुरंत ठीक हो गई और मेरे साथ घर से बाहर चली आई। उसके परिवार वाले पूरी तरह सहम गए। क्योंकि उन्होंने उसके जीने की उम्मीद छोड़ दी थी, फिर से स्वस्थ जीवन का आनंद लेने की बात तो छोड़ ही दीजिए! इस चमत्कार ने मुझे यीशु के बारे में बात करने का बहुत अवसर दिया है।"